॥ श्रीः ॥

रामविनोद.

(वैद्यक)

पद्मरंगशिष्य रामचन्द्रनिर्मित.

जिसमें
दूतपरीक्षा, शकुनाशकुनपरिज्ञान, साध्यासाध्यलक्षण
और ज्वरादिक रोगोंका सम्यक् विचार, उत्प-
त्ति, लक्षण तथा चूर्ण, तैल, अञ्जन, अवलेह,
गोली, मंत्र, यंत्र गंडाआदि अनेक उपाय
भलीभाँति वर्णित हैं।

जिसको
सर्व साधारणके उपकारार्थ
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटालैन,
निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालय में
मुद्रितकर प्रकाशित किया।

संवत् १९६९, सन् १९१२ ई.

॥ श्रीः ॥

अथ रामविनोदका सूचीपत्र ।



(प्रथमाधिकारः)

रामविनोदका सूचीपत्र

(इति पंचमाधिकारः)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

रामविनोद ।



अथ विनोदग्रंथका वचन लिखतेहैं॥प्रथमहीं गणेशजीकी स्तुति लिखते हैं कैसे गणेश हैं ऋद्धिसिद्धिके देनहारे हैं गौरीके पुत्र हैं विघ्नके दूर करनेवाले हैं सुखके करनेवाले हैं हर्षधारिके गणेशजीको नमस्कार करूंहूं। पुनःधन्वन्तरिजीकूं व धन्वंतरिके युगल चरणोंकूं नमस्कारहै कैसेहैं वैद्य धन्वंन्तरिजी, जिनके नामसेती रोग दूर होयं और सकल लोगोंको सब सुखके देनेवालेहैं; फिर अनेक ग्रन्थ करनेवाले पंडितों से विनती कर नाना प्रकारके वैद्यक शास्त्रोंको देखकर रामविनोद इस ग्रंथ को अधिक सुगम भाषा करूंहूं यह रामनिवोद ग्रंथ सब जीवोंको सुख देनेवाला है ॥

रोगीके देखनेके वास्ते जो पुरुष वैद्यके घर बुलावन जाय तिस पुरुषका ऐसा लक्षण होय ॥ विचक्षण होय पंडित होय,सुन्दर होय,सज्ञान होय,नम्र होय ऐसा पुरुष होय सो रोगीके वास्ते वैद्यकूं बुलाने जाय.वैद्यके आगे आय हाथजोड़ नमस्कार कर मीठे वचन कह अरज करै वैद्यके आगे श्रीफल रुपया वस्त्र प्रसन्न ह्वैके धरै और यह कहै कि, आप कृपा करिये. वैद्यकूं बुलानेवाला पुरुष खालीहाथ न जाय खुशीह्वै वैद्य अपने घरसे एक

पुरुषके साथ जाय रोगीके घर दोके साथ न जाय ऐसा भला शकुन होय सो वैद्य रोगीके घरजाय ॥

अथ भलेशकुनों के नाम।

कुमारी कन्या अष्टवर्षकी होय बैलोंकी जोडी अंबारी महावत झूलसमेत हाथी मछलीका जोड़ा दही रांधा नाज ब्राह्मण तिलकसमेत मुखसे आशीर्वाद बोलता निधूम अग्नि राका साहूकार मांस वेश्या स्त्री गावती भरयो कलश स्त्री फूलकी माला पहरे स्त्री पुत्रसंयुक्त गावती भेरी नौबत नगारा फल असवारी इतने शुभ शकुन कहे इन शकुनोंसें वैद्य रोगीके घर जाय तो रोगी व वैद्यको लाभ होय ॥

अथ नाडीआदिकी परीक्षा।

नाडीपरीक्षा, मुखपरीक्षा, दंतपरीक्षा, वस्त्रपरीक्षा, नेत्रपरीक्षा, नखपरीक्षा, जीभपरीक्षा, नाकपरीक्षा, मूत्रपरीक्षा इतनी परीक्षा करिके रोगीका उपचारकरे तिस परीक्षाके लक्षण कहे हैं ॥

पहिले नाड़ी देखिये पीछे शरीरकी चेष्टा देखिये मुख, दांत, जीभ, नेत्र, नख, कान, नाक, मूत्र, वस्त्र इनकी परीक्षासे विचारकर चतुर वैद्य तीनप्रकारसे रोगीकी परीक्षा करे सो तीन कौन कौनसी हैं॥ दर्शन १स्पर्शन२प्रश्न३ दर्शन तो रोगीकी चेष्टा देखिये १स्पर्शन रोगीकी नाड़ी देखिये२प्रश्नकरना रोगीसे प्रश्नपूछ अहवाल और कांति से निश्चयकर साध्यअसाध्य देखिके पीछे इलाज करे॥

अथ साध्य लक्षण।

रोगीका सव शरीर शोभायमान होय, देहीमें कांति होय, शोभा ज्योंकी त्यों रहे वह रोगी निश्चय जीवे। इस रोगवालेकूं ग्रन्थोंमें कहा है मुख रूखा तेजसे युक्त जेसा होय तेसारहे रोगीकेदांत उज्ज्वल (सुपेद) अरु ओठ ललाई लिये होयँ मेले न होयँ जिसके नाककी सुगन्धादिकका ज्ञान होय कर्णसे शब्दादिक सुने ऐसे लक्षण जिसके होयँ सो जीवे जिस रोगीकी जीभ कोमल होय काटे न होयँ जिस रोगीके पैर गरम होयँ ये लक्षण जिसके होयँ सो जीवे।जिसके कपड़े में बुरी वास आवेनहीं सुभाव फिरे नहीं रोगी पुरुपका सुभाव जेसा होय तेसा रहे वह रोगी निश्चयजीवे। जिसरोगीका प्रभातसमय मूत्र पानीसरीखा होय तिस पुरुप कूँ मरने का भय नहीं वैद्य पुरुपों ने यह विचार श्रेष्ट कहाहे॥ इतने साध्य लक्षण कहे हैं॥

अथ असाध्य लक्षण।

देहकी शोभा घटे, देहका वर्ण फिरजाय, रातदिन अचेत रहे, शरीरमें ऐसारोग होय तो निश्चयमरे।जिसरोगीका मुख लाल रोलीसरीखा होय, जीभ काली होय कठोर होय ऐंठजाय विंचलबोले वह रोगी असाध्यहै। जिसका पेशाव थँभेनहीं मूत्र वेरवेर उतरे टपक

टपक आवे वह रोगी ७ दिनके भीतर मरै।वैद्यकशास्त्रमें लिखाहै ॥ इति असाध्यलक्षण ।

अथ मूत्रपरीक्षा ।

रोगीके मूत्रको कांच के अथवा कांसी के वासन में लेकर तेलको भिजोयके रुईके फाहासे अथवा तुनकेसे लेकर पेशावमें डालै तेलका टपका पेशाव के नीचे जायबैठे तो रोगी असाध्य कहिये अथवा टपका पेशावके ऊपररहे डूबैनहीं निस्तरै नहीं तो असाध्यहै तेलके टपकेमें छिद्र पड़े तो अथवा तरवारका आकार होय धनुष का आकार होय अथवा तीन चार कण होजायँ तो रोगी उतनेदिनमें मरै तरुणतापवालेका पेशाव पीलाहोय पीली धारहोय दीर्घ रोगीका लाल पेशाव होय जिसका पेशावकालाहोय दुर्गंधहोय वह रोगी निश्चयमरै वातज्वर वालेका पेशावचिकनाहोय स्याह होय पित्तज्वरवालेका मूत्र पीलावर्णहोय कफज्वरवालेका पेशाव पानीसरीखा होय वातपित्तज्वरवाले के सिरसों का तेलसरीखा होय अजीर्णज्वरवालेका पेशाव वकरीके पेशावसरीखा होय सन्निपात वालेका पेशाव स्याह होय जिसके बहुत दिन का ज्वर होय तिसका पेशाव केसरकेरंगसमानहोय ज्वर उतरजाय तब पेशाव पानीसरीखाहोय।वैद्य पहिले मूत्र परीक्षाकरै पीछेइलाजकरै इन वस्तुओंकरके वातपित्त कफका कोप होयहै अपने अपने राजमें प्रगट होयहैं सोवस्तु कहैहैं गरम वस्तुकर,सोकर,भय कर,भूखकर,

रातके जागनेसे मैथुनकर प्रभातकेसमय स्त्री संगकर इ-तनी बातों करके वात पित्त कफका कोप होयहै अपने अपने राजमें सब प्रकटहोय हैं॥

अथ वातपित्त कफके महीने।

आसोज १ कार्तिक २ वैशाख ३ज्येष्ठ ४ इनमहीनों में पित्तका राजहै॥ चैत्र १ फागुन २ में कफका राज है गुड़ दही शीतल वस्तुसे कफ कोप करै है॥ आषाढ़ १ श्रावण २ भादों ३मार्गशिर ४ पौष ५ माघ ६ इन महीनों में वायुका राज है॥

अथ द्वादश ज्वरोंके नाम।

अजीर्ण १ आहार २ पित्त ३ खेद ४ वातज्वर ५ दृष्टिज्वर ६ कालज्वर ७ कफज्वर ८ रक्तज्वर ९ एकांतर १० वेला ११ तृतीय १२ ये द्वादश ज्वरोंको कहा ये सर्व ज्वर मलकोपते होय हैं सुज्ञान वैद्य होय सो इनके लक्षणों करके जाने॥ आत्रेयशास्त्रके मतसे ये लक्षण कहे हैं॥

प्रथम अजीर्णज्वरके लक्षण।

पेटमें पीड़ा होय विरेचन होय डकार बहुतहोय यह अजीर्णज्वर के लक्षण कहे हैं॥

अथ मलज्वरके लक्षण।

कंठ सूखै दाह बहुत होय प्रलाप होय शरीरविषे पीड़ा

होय भ्रम उपजे मूर्च्छा होय हड़फूटनि होय दाह बहुत होय पेशाव लालहोय मुख कटुकहोय यह लक्षण पित्तज्वरके कहेहैं ॥

अथ खेदज्वर के लक्षण।

हडफूटनि होय अंग अंग दूखे नींद बहुत आवे आलस्य बहुत आवे पसेव आवे आँखोंमें पानी बहुत आवे यह खेदज्वरके लक्षण हैं ॥

अथ वातज्वरके लक्षण।

कम्पनहोय महादाह होय तृषाहोय चित्तभ्रम होय विकलताहोय जीभके ऊपर काँटेहोयँ यह वातज्वर के लक्षण कहे हैं ॥

अथ दृष्टिज्व का लक्षण।

वमनहोय आंखें नीली होयँ शरीर पीलावर्ण होय पेट विषे पीडाहोय मूर्च्छाहोय यह दृष्टिज्वरके लक्षण कहेहैं।

अथ कालज्वरके लक्षण।

पसेव बहुत होय देही गलिजाय माथो नाक शीतल होय यह लक्षण कालज्वरके हैं॥

अथ कफज्वर शीतज्वरका लक्षण।

अरुचि होय अग्निमंद होय मुखपे झाग आवे उबकी बहुत होय ताप बहुतहोय देही शीतलहोय पसेव बहुत होय निद्राहोय यह कफज्वरशीतज्वरके लक्षण कहेहैं।

अथ कामज्वर का लक्षण।

शीत लागे कांपणी होय श्रम होय माथेमें पीड़ा होय कण्ठ सूखे मुख कसैलाहोय यह लक्षण कामज्वरके हैं॥

अथ रक्तज्वरके लक्षण।

अंगविषे पीड़ा ऊर्ध्व होय मुख नाक सेती रुधिर चलै यह रक्ततापके लक्षण कहे। कामज्वर,एकान्तरा ज्वर, तेजराज्वर इनसब ज्वरोंकी एक जातिहै॥

अथ ज्वरपाक मर्य्यादा।

वातज्वर ७ दिन में पके पित्तज्वर १० दिन में पके कफज्वर १२ दिन में पकेइतने दिनमें ज्वरका बळ घटे वमनसेती कफज्वर जाय कफका नाश होय मीठेतेल के मर्दनसे वायुका नाश होय स्नानसे पित्तका नाश होय ज्वर उपजतेही ३ दिन गरमजल देना नहीं औषध दीजे नहीं स्त्रीसंग करे नहीं॥

इति श्रीपंडित प्रभरंगशिष्य रामचन्द्रविरचित रामविनोदका,
प्रथमपुरुष लक्षण, शुभ शकुन लक्षण, शरीरचेष्टा,
साध्य असाध्य लक्षण, मूत्रपरीक्षा, पित्त वायु
कफ हेतु उत्पत्ति निदान, दश ज्वर नाम,
ज्वरोंके लक्षण और ज्वरमर्यादा कथन
प्रथम अधिकार॥ १॥

अथसर्वज्वरनकूं पाचनलिखते हैं वृन्दशास्त्रसे।

सोंठि धनियां छोटीकटाई बड़ीकटाई देवदारु यह

सब सममात्रा लैके चूर्णकरे फंकी गरमपानी से दीजै दशज्वरका नाशहोय मल द्रवै उतरै ॥

अथ अजीर्णज्वरकी गोली ।

सोंठि पैसाभर मिर्च पैसाभर हरड़की छाल पैसाभर पीपलामूल पैसाभर सोंचरनोन पैसा भर सेंधानोन ६ मासे यह औषध लैके चूर्ण कीजे पीछे गोतकमें मिलाय मिट्टी के पात्रमें चूल्हे पै चढ़ाय गाढ़ो होय तब उतारले गोली १ टंककी बांधिये फिर गोली खाने से अजीर्णज्वर जाय श्वासकास मिटिजाय ॥

और उपाय वृन्दसे ।

हरड़े की छाल माशे ६ । सोंचरनोन माशे ६ । सोंठि पैसाभरि लवंग माशे ६ मिरच पीपल हलदी अजवायन पैसा पैसाभर सब औषध बराबर पीस छान नींबूकारस दूना गुटिकाकर घाले जब डेढ़पाव पानी में तिहाईरहे तब पीवे तौ अजीर्णज्वरका नाशहोय ॥

पुनः चूर्ण वृन्दसे ।

निसोत सोंठि पीपल हरड़े यह औषध बराबर लेके चूर्ण कीजे दूना नींबूके रस में भिजोवे पीछे गरम पानी से खाय तौ अजीर्णज्वर का नाशहो ॥

पुनः चूर्ण चिन्तामणिके मतसे ।

आंवले पीपल हरड़ेकीछाल चित्रक सेंधानोन सबसे

आधी लवंग इन औषधोंको कूट छान चूर्ण करै गरम जलसे खाय विषमज्वर जाय अजीर्णज्वर जाय रस-कार मिटै कासश्वास जाय पेट शुद्ध रहै ॥

अजीर्णज्वर कूं मर्दन वृन्दसे ।

सारे शरीरमें गरम तेल सरसोंका लेकर मर्दन करै तो अजीर्णज्वरका नाश होय वृन्दके वचनसे ॥

पुनः चूर्ण वाग्भट्टसे ।

सतवां सोंठिकूं सेंकलीजै अथवा हलदीको सेंक-लीजे २ टंक प्रमाण वछियाके मूत्रमें पीस गरम कर खाय अजीर्णज्वर जाय मूर्च्छा मिटै वासी अन्नका दोष मिटै ॥

अथ अंजन वृन्दसे ।

सेंधानोन मिर्च पीपल सिरसकी मींगी हरद यह सब औषध महीन पीस अजामूत्रसे गोली बांधके अंजन कीजे अजीर्णज्वर तत्काल मिटै माथा दुखता अच्छा होय सर्वप्रकारका ज्वर मिटै ॥

पुनः लेप वृन्दसे ।

मोथा कुटकी चिरायता सोंठि पटोलपत्र गिलोय अडूसा पित्तपापड़ा त्रायमाण पुष्करमूल कचूर धमासा कटेलीकी छाल काकड़ासिंगी यह औषध सब बराबर लीजे कूटकर २ टंक गरमपानी से पेटपर लेप करै तथा

गरमपानीसे खाय तो अजीर्णज्वर मिटै पेटकी पीड़ा मिटै यह सिद्धियोग वृन्दने कहाहै ॥

अथ मलज्वरका उपाय भेड ग्रंथसे ।

अमलतास हरड़ैकी छाल निसोत एलुवा यह सब औषधका काढ़ा करि पीवै मलज्वर मिटै कोठा शुद्ध होय॥

पुनः फंकी हारीतसे ।

चित्रक हड़की छाल अजवायन दोनोजीरा यह सब औषध बराबर ले नींबूके रसमें भिगोवै फिर सुखाय चूर्ण कर खाय तो मलज्वर मिटै ॥

पुनः लेप वृन्दसे ।

पीपल कुटकी चिरायता हड़की छाल ऐलुवा ये औषध बराबर लीजै पानीसेती पीसकर पेटपर लेप कीजै मलद्रवै अथवा पेटमे भस्म होय तत्काल ज्वर जाय मैदाकी वस्तु गोदकी वस्तु खानेको न दीजै पथ्य मोठकी दाल पीपल हींगकरके युक्त दीजै ॥ इति मलज्वर अजीर्ण ज्वर चिकित्सा ॥

अथ पित्तज्वरचिकित्सा लवंगादिचूर्ण योगचिंतामणि मतसे ।

लवंग छोटी इलायचीके बीज तमालपत्र कमलगट्टा तूज वंशलोचन नेत्रवाला खस वालछड़ तगर कंकोल . . शीतलचीनी कृष्णागुरु केसर चंदन सफेद पुष्कर-

मूल दोनों जीरे त्रिकुटा त्रिफला धनियां कूट भीमसेनीकपूर चित्रक वायविड़ंग निसोत देवदारु काकड़ासिंगी अडूसा अरणी गिलोय अजवायन अजमोद मुलेठी पित्तपापड़ा पीपलामूल अमलवेत फूलप्रियंगु मोथा सतावर सारिवा दालचीनी अभ्रक कचूर जायफल तालीसपत्र अतीस यह सब औषध बराबर लीजै कूटछानकर चूर्ण कीजे ९ माशा प्रभात ९ माशा संध्याको उत्तम पानीसेती लीजै पित्तज्वरको दूर करै वीर्य बँधे बीस प्रमेह जायँ कास श्वास अग्निमन्द जुकाम छर्दि दाह राजरोग हुचकी राजयक्ष्मा पैर थँभना गला दूखना पांडुरोग स्वरभंग रसवृद्धि ये सब रोग लवंगादिते जायँ ॥ इति लवंगादि चूर्ण ॥

पुनः गोली वृन्दसे ।

छोटीइलायचीका बीज टंक४ मुनक्का टंक४ तमालपत्र टंक ४ तज टंक४ छोहारा टंक ४ मिश्री टंक १६ पीपलटंक ८शहदसे गोली कीजै टंक१ प्रमाण प्रभात समय गोली एक खाय पित्तज्वर जाय उबकी छर्दि मूर्च्छा चित्तभ्रम रक्तपित्त स्वरभेद कास श्वास राजरोग रक्तविकार आदि रोगोंको यह एलादि गोली दूरि करै॥

वृद्धगुडूच्यादि क्षीरपाणि शास्त्रसे ।

गिलोय सोंठि रक्तचन्दन कुड़ाकी छाल बेलगिरी

अतीसपित्तपापड़ा धनियां नेत्रवाला नागरमोथा चिरायता इन्द्रयव खस यह सब औषध बराबर लीजे पैसा १ भरकी पुड़िया बांधिये अष्टावशेष काढ़ा कीजे पैसा ३० भर पानी चढ़ाइये मट्टीके वर्तनमें पैसा४भर पानी रहे तब उतारले रोगीको पिलावे तो पित्तज्वरका नाश होय अतीसार बमन हिचकी इतने रोग जायँ तिक्त वस्तु ऊपरसे न खाय ॥

पुनः पित्तज्वरको चन्दनादि क्काथ ।

चन्दन सफेद चन्दन लाल सोंठि चिरायता मोथा नेत्रवाला खस पित्तपापड़ा यह सब औषध बराबर लीजे पैसा १ भरकी पुड़िया बांधिये षष्ठांशका काढ़ा कीजे मट्टीकी हांड़ीमें पैसा४ भर रहै तब दीजे पित्तज्वर जाय ॥ इति लघुचन्दनादि क्काथ ॥

पुनः क्काथ ।

त्रायमाण पित्तपापड़ा चिरायता कुटकी कटेली नेत्रवाला यह सब औषध बराबर लीजे अष्टावशेष काढ़ा कीजे शहत माशे ६ ऊपरसे मिलाय रोगीको पिलावै पित्तज्वर जाय ॥

पुनः वृद्धत्रायमाणादि क्काथ ।

त्रायमाण इंद्रयव अडूसा कुटकी गिलोय पटोलपत्र पित्तपापड़ा नीवकी छाल पद्माक भूनिम्ब यह औषध सब बराबर ले पैसा१भरकी पुड़िया बांधे अष्टावशेष

कर पिलावे पित्तज्वर जाय पथ्य दाल मोठकी दीज खट्टा मीठा न खाय ॥ इति पित्तज्वरचिकित्सा ॥

अथ खेदज्वरको तेल वृन्दसे ।

तिलोंका तेल लेकर कायफल मिलावे पीसकर पीछे शरीरमें मर्दनकरे घडी ४ पीछे गरमजलसे स्नान करे शरीरका खेद मिटै खेदज्वर दूरहोय अच्छे गेहूंका चूरमा खेदज्वरवालेको पथ्य है ॥ इति खेदज्वर चिकित्सा ॥

अथ वातज्वरको चूर्ण वृन्दसे ।

लवंग मिर्च पीपलामूल कुटकी मोथा गिलोय नेत्रबाला सोंठि चिरायता गोखुरू कटाई दोनों ये औषध सब बराबर ले इनका काढ़ा कीजै अष्टावशेष दीजै तो वातज्वर दूर होय ॥

पुनः क्राथ वृन्दसे ।

पीपल सौंफ सारिवा मुनक्का साठीकी जड़ यह सब औषध सममात्राले इनका काढ़ाकरै औटतीबार १पैसाभर गुड़गेरदे अष्टावशेष करके पिलावै वातज्वर जाय॥

अथ वातज्वरकी फंकी ।

सतुवा सोंठि टंक४सैंकलीजै सैंधानोन माशे२ भर लीजै पीसके चूर्ण करे ताजा पानीसे पीलीजै वातज्वर दूर होय संधि २ की वात जाय कोठा शुद्ध होय ॥

पुनः वातज्वरको क्वाथ ।

कूट गिलोय त्रायमाण मुनक्का सारिवा यह सर्व औ-षध बराबर ले१ सेर पानी ले१पैसा भर पुड़िया गेरिये गुड़ पैसा १ भर गेरदे आठवां हिस्सा रहे तव उतारले रोगीको पिलावे वातज्वर जाय ॥

पुनः अमरसुन्दरी गोली चरकसे ।

तज तमाल छोटी इलायची त्रिफला त्रिकुटा सार नागकेसर पीपलामूल सँभालूके बीज चित्रक काकड़ा-सिंगी यह औपध४ चार टंक ले सममात्रा पारा टंक२ आंवलासार टंक २ नागरमोथा टंक ४ वायविड़ंग टंक ४इन सब औपधोंसे गुड़ दूना लेकर चनाप्रमाण गोली बांधले गोली१प्रभात खाय और सन्ध्याको एक खाय वातज्वर जाय ॥ इति वातज्वरकी चिकित्सा ॥

अथ दृष्टिज्वर उपाय ।

सोचरसेंधा पुष्करमूल खुरासानी पीपलामूल सता-वर चित्रक हड़ें छोटी इलायची यह सब औपध बराबर ले कूट छान चूर्ण कर २ टंक चूर्ण ताते पानीसे लीजै तो दृष्टिज्वर जाय ॥ इति दृष्टिज्वरचिकित्सा ॥

अथ कफज्वरचिकित्सा खैरसारादिगुटि-का योगचिंतामणिके मतसे ।

खैरसार माशे २ त्रिफला माशे २ कायफल मासे २

पीपल माशे ३ कूट माशे २ ये औषध बराबर ले सब कपड़छान कर अदरखके रसमें ७ पुट दे फिर कीकरके रसकी १० पुट दे गोली छोटे बेर प्रमाण बांधिले गोली १ सोनेके समय मुखमें गेर चूसिये कफज्वर जाय पांच प्रकारकी खांसी जाय क्षयी स्वरभंग मिटै ॥

अथ कफज्वरको रस चिंतामणिके मतसे ।

पारा टंक४ आंवलासार टंक४ पीसे दोनोंकी कजली करे पीछे आकका दूध पैसा२० भर सेंधानोन पैसा ३,भर सोंचर पैसा३ भर बिड़नोन पैसा३भर कचनोन पैसा२ भर सांभरनोन माशे ६इन सबको पीस आकके दूधमें पारा गन्धक समेत मिलायके खरल करे पहर१ तिसके पीछे एक मोटा शंख लायकर शंखकापेट खुदाय कर शंखबीच सबदवाई धरे पीछे सुखायदेनी एक कोरी हांड़ी लायकर पीपल टंक १६ कनेरकी छाल टंक १६ कूट टंक२ वत्सनाग टंक८ये चार औषध पीसकर पानी सेती कीचकर शंखके मुखमें गाढ़ीमुद्रादेनी फिर सुखाय शंख हांड़ीबीच धर हांड़ी ढकके गाढ़ागाढ़ा कपड़ा मिट्टी लगाय सुखायलेना पीछे गज १ लंबा गज १ चौड़ा गढ़ाकरना पीछे आधगढ़ा उपलोंसे भरना पीछे शंखकी हांड़ी धरना ऊपर और अरनादेना ऊपर आग लगाना चारपहर रात्रिभर आंचमें रहै शीतलहोय तब हांडी काढ़

लेनी हांडीके वीचसे शंखकाढना पीछेशंख औषधसमेत पीस महीन कर कपडछान करना पीछे नागरपानके रसमें गोली बांधनी चिरमिटी प्रमाण प्रभात१ सन्ध्या १खानी श्वासकास दूर होय हियाकारोग दूर होय ॥

अथ कफज्वरकोतालीसादिगोलीयोगमतसे ।

तालीसपत्र चाब मिर्च इन तीनों सेती दूनी पीपलामूल सोंठि तिगुनी लीजै गुड़ दूना लेकर मिलावै तज पत्रज इलायची छोटी मिर्च ये चार लीजै यह सब औषध इकट्ठी कर छोटी सुपारी वरावर गोली वांधिये इस गोलीके खायेसे कफज्वर दूर होय ॥

पुनः फंकी वृन्दसे ।

पीपल माशे ९ कटाई माशे ७ यह दोनों पीस चूर्ण करे टंक१॥गरम पानीसे खाय तो कफज्वर दूर होय॥

पुनःअवलेह ।

पीपल पुष्करमूल कायफल काकड़ासिंगी यह चार औषध वरावर ले चूर्ण करे शहद माशे६ चूर्ण माशे ३ मिलाकर अवलेह चाटे तो कफज्वर जाय श्वास मिटे॥

पुनः अवलेह वृन्दसे ।

त्रिफला पटोलपत्र अडूसा गिलोय कुटकी पीपलामूल यह सब औषधका चूर्ण करे शहद मिलाय चाटे तो कफज्वर जाय श्वास कास मिटे ॥

पुनः चटनी वृन्दसे ।

सोंठि टंक २ मिर्च टंक२ पीपल टंक२ कायफलटंक २ भारंगी टंक २ कर्कटशृंगी टंक २ हड़कीछाल टंक२ यह सब औषध बराबर लीजे कपड़छान कर चूर्ण करे पीछे शहद पैसा १ भर औषध माशे ३ मिलायकर चाटना श्वासकास कफज्वर जाय भूख बहुत लगै।

पुनः कफज्वरको नास ।

त्रिकुटा नींबकी छाल नकछिकनी कायफल ये सर्व औषध सममात्रा चूर्ण कर कपडछान करके नाकमें नास दीजे कफज्वर जाय शिरकी पीडा दूर होय ॥

पसेवको उद्धूलन ।

त्रिकुटा हड चिरायता कुटकी कूट कचूर कायफल लोध इसबन्द पुष्करमूल यह औषध बराबर लेकर चूर्ण करे चूर्णको तीन वार छानै पीछे कफवाले पुरुषकी छातीमें मर्दन करै कफका पसेव मिटै ज्वर जाय देह हलकी होय।

क्वाथ सन्निपात कलिकासे ।

त्रायमाण पुष्करमूल शालिपर्णी कटाई दोनों गोखुरू अरणी बेलगिरी स्योनाक कुंभेरी पृष्टिपर्णी पाटल यह सब बराबर ले आठवां हिस्सा बाकी रहे तब उतारे पीपलका चूर्ण ऊपर गेरदे पीछे मिलावे तो कफज्वर जाय। इति कफज्वर चिकित्सा ॥

अथ पित्तज्वर सन्निपात चिकित्सा कलिकासे।

चन्दन नेत्रवाला खस कायफल तज धावेके फूल पद्माक फूलप्रियंगु यह सब औषध सम मात्रा ले मिश्री १६ गुणी लीजे इस चूर्णमें मिश्री मिलायकर धरे टंक २ ताजे पानीसे नित्य ले दोनों वक्त रक्तज्वर श्वास कास गरमी दूर हो ॥

रक्तपित्तको चूर्ण वृन्दसे।

त्रिफला मुनक्का अडूसा नेत्रवाला दाड़िमकीछाल ये सब औषध सममात्रा लीजे चूर्ण करे पीछे चूर्ण टंक २॥ बकरीके दूधसेती ले दोनों वक्त तो रक्तपित्तज्वर जाय।

श्रीखंडादि चूर्ण योगचिन्तामणिमतसे।

चन्दनसफेद मिर्च लवंग तज दाख मुनक्का पीपल सोंठिरक्तचन्दन नेत्रवालासफेदजीरा स्याहजीरा,पीपला मूल जायफल पत्रज इलायची छोटी केसर नागकेसर छुहारा हल्दी कमलगट्टा धनियां मुलेठी चीता वंशलोचन गिलोयसत खैरसार यह सब औषध सममात्रा लेकर चूर्ण कीजे इन औषधोंसे १६गुणी मिश्री लीजे चूर्ण टंक २ताजे पानीसेती लीजे दोनोंवक्त रक्तपित्तज्वर श्वास कंठशोष क्षयज्वर वीस२० प्रमेह अतीसार विषमज्वर दाद भगन्दर अर्श दूर होवे वीज बँधे धातु थँभे देह दुर्बल होय तो पुष्ट होय ॥

अथ अवलेह योगचिंतामणि मतसे।

मिश्री टंक १६ वंशलोचन टंक ८ पीपल टंक ४ इलायची टंक २ दालचीनी टंक ४ जीरासफेद टंक २ मुलेठी टंक२ चन्दन सफेद टंक ४ यह औषध कपडछानकर मिश्री शहद घृत एकत्र कर टंक२चूर्ण गेरकर चटनी कीजे रक्तबुखार कासश्वास क्षय हाथ पांवका जलना यह सब रोग जावें और जीभसूखतीहोय तो तुरन्त नरम होय,शूल अरुचि नाक व मुखसे रुधिर पडता होय तो थँभै यह शीतोपलादि इतनेरोगोंको दूरकरे॥

क्वाथ सन्निपात कलिकासे।

मलयागिरि नागरमोथा पित्तपापडा नींबकी छाल विजयसार महुआ मुलेठी नेत्रवाला रक्तचन्दन यह औषध सममात्रा लीजे एकपैसाभरका काढ़ाकीजे आठवां हिस्सा उतारि पीछे मिश्री बुरकाय पीवे इस काढ़से कान मुख नाक गुदा इनमें रुधिर जाता हो तो थँभै॥

नास योगमतसे।

सरीयूब दाडिमका फूल इन दोनोंका रस निकाल चावलके पानीसे नास ले तो नकसीर थँभै॥ इति रक्तपित्तज्वरचिकित्सा॥

अथ एकान्तरज्वर वेलाज्वर तिजारीज्वर चौथाज्वर सर्व्वज्वर कूं अरिष्टादि निंबादि चूर्ण-चरक शास्त्रसे।

नींबके पंचांगकी छाल पान फूल फल जडटंक२सोंठि

टंक२ मिरच टंक२पीपल टंक २ त्रिफला टंक९सोंचर टंक ३ सेंधा टंक ३ सांभर टंक ३ सज्जीखार टंक ३ अजवायन टंक ३ जवाखार टंक३ इनका चूर्ण टंक २ गरम पानीसेती खाय नित्यज्वर शीतज्वर दाहज्वर वेलाज्वर तिजारी;एकांतरा,चतुर्थज्वर सर्वज्वर जायँ।

पुनः सर्वज्वरको षोडशांगचूर्ण वाग्भट्टसे।

चिरायता नींबकी छाल कुटकी गिलोय हडे नागरमोथा धमासा त्रायमाण कटाई दोनों काकड़ासिंगी सोंठि पित्तपापड़ा फूलप्रियंगु पटोलपत्र पीपल कचूर ये औषध बराबर लेके कूट छानकर पीछे मासा तीन गरम पानीसेती ले दोनों वक्त रूखो खाय पथ्य मोठ मूंग बाजरा चावल दीजे सर्वज्वर जायँ बहुत दिनोंका विषमज्वर जाय।

अथ एकाहिकज्वरकूं रस योगचिंतामणिमतसे।

पारा टंक १ शोधाआमलासार टंक २ बच्छनाग टंक ३ मिरचटंक ३ अभ्रकटंक ३ तामेश्वरटंक ३ हींग टंक३ नींबूके रसकी पुट १ दीजे दोपहर खरल करै बहेड़ाकी छाल पीस ऊपरसे गेरदे रातको शहदसंग खाय रत्तीदो तो वेलाज्वर तिजारीज्वर सर्व ज्वर जायँ॥

अथ ज्वरांकुश वृन्दसे।

कनेरकी जड़२पैसा भर मैनशिल पैसा१ भर कली

का चूना २ पैसा भर नीलाथोथा २ पैसा भर पानीसे पीस गोली बांध सुखायकर हांडीबीच रक्खे हांडीका मुंह खामदे घड़ी ४ आंच देनी शीतल होय तब काढ़ले मासे ४भर खांड़में १ रत्ती ज्वरांकुश दोनों मिलायके खाय पथ्य दूध भात बतासे देना नित्य एकांतरा तिजारी चातुर्थिक सर्व ज्वर जायँ यह ज्वरांकुश रुद्रदत्तने पुत्रके वास्ते कहा है ॥

अथ पूजापाठ गोली योगचिन्तामणिमतसे ।

पारा शोधा टंक५आंवलासार गन्धक टंक५सुहागा तेलिया भूना टंक ५ अजयपालकी मींगी शोधी टंक ५ये चार औषध पीसकर गोली छोटी बेरप्रमाण बांधे गोली एक पानमें धरकर खाय पथ्य दूधभात मिश्री खाय दस्त लगें ३० और उबाकी लगे तो शीतदाह एकांगी वेलाज्वर तिजारी नित्यज्वर दूर होय ॥

एकाहिकज्वर शीतज्वर दाहज्वरको अंजन वृन्दसे ।

नींबकी गिरी सिरसके बीज बरधूम्रा साबुन सांपकी कांचली मिरच सींग सहासन ये सर्व औषध सममात्रा लेकर पानीसेती गोली कीजे आंखोंमें अंजन कीजे ता सिया दाह एकान्तरा तिजारी सर्वज्वर जायँ ॥

अथ नित्यज्वर एकान्तरज्वरका ज्वरांकुश वृन्दसारसे ।

कलीचूना टंक१०हरताल बुगदादी टंक १०र्व

रके रसमें मर्दन कीजै पहर४ताईं टिकरी कर सुखाय-कर टिकरी दो सरवोंमें धरदे ऊपर मिट्टी कपड़ाकर गजपुट कीजै पहर चार आंच देनी शीतल होय तब काढ़ले खांड़ पैसा १ भरमें रत्ती२ ज्वरांकुश गरम पानीसेती ले नित्यज्वर एकान्तरा तिजारी सर्वज्वर जायँ।

अथ नित्यज्वरको काढा वृन्दसे ।

पटोलपत्र इंद्रयव यह दोनो बराबर काढ़ा कर पीवे नित्यज्वर जाय ॥

अथ तिजारीज्वरको काढा वृन्दसे ।

छड़ नागरमोथा सारिवा कुटकी पटोलपत्र यह औषध बराबर लीजै इनके काढेसे तिजारीज्वर जाय॥

पुनःतिजारीको काढा चरकसे ।

त्रिफला त्रिकुटा नागरमोथा मुनक्का पटोलपत्र नींबकी छाल यह औषध सममात्रा लीजै इनका काढ़ा कर पीवे मिश्री टंक २ ऊपरसेती बुरकायदे तो तिजारी ज्वर जाय ॥

अथ चतुर्थज्वरको काथ वाग्भट्टसे ।

रक्तचन्दन सोंठि चिरायता कुटकी नागरमोथा गिलोय आंवला यह सब औषध बराबर ले इनका काढ़ा पीने तो चतुर्थज्वर जाय ॥

पुनः काथ वृन्दसे ।

अडूसा हड़की छाल आंवला सोंठि देवदारु यह

औषध सममात्राले इनके काढेसे चतुर्थज्वर जाय वृन्दसखीने कहाहै ॥

अथ चतुर्थज्वरकी जडी।

बडी कटाईकी जड आदित्यवारको सुर्य्य निकलते प्रभातके समय लीजै धूप गूगुलकी देकर पुरुषके दाहने और स्त्रीके बायें हाथमेंबांधे तो तिजारी चतुर्थज्वर जाय।

पुनः तिजारीकी जडी।

दुद्धीकी जड़ आदित्य वारके दिन लीजै प्रभातके समय अथवा बुधके दिन लीजै गूगुलकी धूनी देकर गलेमें बांधदे तो तिजारी जाय ॥

अथ एकान्तरकोटोना वृन्दसे ।

अथ मंत्रः—गंगायासुत्तरेकूले अपुत्रौतापसौमृतौ ।
ताभ्यांतिलोदकंदद्यान्मुंचएकाहिकज्वरः ।

अथ विधिः ।

कालातिल पावसेर कुयेंका ताजापानी इसमंत्रसेती नित्यज्वरकोऔरसर्वज्वरकोनामलीजैबाहरजाय तिलों की ढेरीपास पानी गेरदीजै मुखसे मंत्र कहिये।।अमुक को नित्यज्वर जाय ऐसे कहिके उठिआवे पीछे फिरके देखे नहीं नित्य शीत दाह एकान्तरा वेला सर्वज्वरजायँ॥

अथ डाकिनीका मंत्र लिखते हैं ।

ओंनमोवातरस्यमुखंवीरंआदित्यसमतेजसम् ।
तस्यस्मरणमात्रेण ज्वरानश्यन्तितत्क्षणात् ॥ १ ॥

कालडाकिनीके ऊपर अथवा लालडाकिनीकें ऊपर यह मंत्रलिखे पीछे रोगीके शरीरके सातवार धुआवे शीतज्वर आताहोय तो ढकनीको चूल्हाके भीतरगाडिये ऊपर आगबारिये शीतज्वरजायदाहज्वरहोय तोढकनी लेकर सातबार रोगीके शरीर ऊपर उतारकर पानीमें राखिये औंधाधरिये ऊपर पत्थर धरिये घड़ो सबजलसे भरदीजे दाहज्वरहो तो३ दिन ढकनीको पानीके घड़ेके भीतर राखिये शीतज्वर होय तो दिन ३ चूल्हेमें या अँगीठीमें राखिये पीछे हनुमानके नामकी मिठाई सवापावकी बांटै दाहज्वर शीतज्वर जाय ॥

अथ तापकेगंडेका मंत्र ।

ॐनमःस्वस्तिश्रीलंकामहादुर्गात्महाराज श्रीरावण वामनजी वचनात् विभीषणलिखितं श्रीमर्त्यलोके एकान्तर ज्वर वेलाज्वर नित्यज्वर शीतज्वर दाहज्वर पित्तज्वर कफज्वर तृतीयज्वर चतुर्थज्वरभयज्वर अमुक नगरमें अमुकपांडे अमुकठिकाने अमुकजनके अमुकके शरीरमें रहेहे उस लेखदर्शनेन अग्निमाहिंपड़े भस्म हूजे नहींतो चन्द्रहास खड्गसेती शिर छेदिये राजा रावण की गदा तेरे माथे वजेगी॥ (ॐठःठःस्वाहा)॥

अथ गंडाकीविधि ।

ढाईपूनी तथा साढ़ेतीन पूनी आदित्यवार के दिन

अथवा मंगलवारको कन्यासे कतवावे डोरी करै पीछे इस मंत्रसे गांठि दीजै७एकएकमें तीनतीन वार पढ़िये मंत्र २१ बार पढ़कर गूगल देवे पाछे डोरा पुरुषके दहने हाथ स्त्रीके बायें हाथमें बांधिये मिठाई सवापावकी हनुमान्जीके नाम बांटिये तथा सवासेरका रोट कर अभ्यागत जिमाइये सर्व जातिका ज्वर जाय ॥

शीतज्वरका लक्षण माधवनिदानसे।

शरीरमें शीत लगे श्वास कास कफ होय मस्तकमें पीड़ा छर्दी भूख शरीर शीतल होय उबकाई होय। यह लक्षण शीतज्वरके हैं ॥

अथ सन्निपातका चूर्ण कलिकासे।

पीपलामूल १ टंक पीपल १ टंक चित्रक १ टंक सोंठि १ टंक भारंगी १ टंक चिरायता १६ टंक पुराना गुड़ १९ पैसाभरमें चूर्ण मिलाय पीछे प्रभातसमय खाय शीतांगज्वर जाय ॥

अथ कालारिरस।

पारा टंक१ गन्धक टंक२वत्सनाग टंक२पीपलला ख टंक १ लवंग टंक २ सुहागा तेलिया टंक २ अकरकरा टंक २ जावित्री टंक२ मिरच टंक२जायफल टंक २धतूरेके बीज टंक २ कनेरके पत्तोंके रसमें यह औषध पीसके खरलमें दिन २ पीछे दिन ९ मर्दन करै पीछे

रत्ती४औपध पानके रससे तथा अदरखके रसमें रोगीको खवावे तौ शीतज्वर दूर होय चौरासी वायु जायँ॥

कनकसुन्दरी रस सन्निपातकलिकासे।

वत्सनाग शोधा त्रिकुटा लवंग अजवायन खुरासानी अजवायन यह सब बराबर मुहरा भाग १ लीजे धतूरेके रसमें प्रहर १ मर्दन करै अदरखके रसमें प्रहर १ पीछे सुखायकर डबियामें रखना चूर्ण रत्ती चार रोगीको देना शीतज्वर शीतांग हाथ पांव बांड़ा होगया होय जवड़ा मिचगया होय तौ तुरंत खुलजाय अचेत चैतन्य होय हाथपांव शीतल होयँ तौगरमहोयँ कफज्वरसन्निपात दूर हो यह कनकसुन्दरीरस आप महादेवने बतायाहै॥

पीपलादि काढा वृन्दसे ।

पीपल पीपलामूल अतीस यवः चित्रक सोंठि पाढ कुड़ाकी छाल कुटकी चिरायता पीलूकीःजड़ जीरा सफेद सरसों मिरच धमासा बडी कटाई जवासा पुष्करमूल अजवायन वायविडंग अजमोद भारंगी आककी जड़ कायफल हींग काकड़ासिंगी यह सब औपध बराबर लीजे जव कूट काढ़ा कीजे आठवां हिस्सा आयरहै तब उतारले पीछे रोगीको पिलावे तौ शीतज्वर आलस सन्निपात जाय ॥

लघुज्वरांकुश वाग्भट्टसे ।

त्रिकुटा चित्रक वत्सनाग पारा शोधा यह औपध ब-

राबर लीजै गोली चनाप्रमाण मिश्रीसेती खाय जिसके ऊपर पानी नहीं पीवै शीतज्वर दूर होय शूल मिटै श्लेष्मज्वरका नाश होय तेरह सन्निपात मिटै कासश्वास मिटै और वायु चौरासी जायँ चित्तभ्रम जाय ॥

उद्धलन सन्निपातकलिकासे ।

मुहरा टंक १ मिरच २ पैसाभर कौड़ी की राख ५ पैसाभर कड़वी तोरईके बीज १२ पैसाभर पीपल ७१ सेर अरनाकी राख७१सेर ये सब औषध एकत्र करना कूटछान धतूरेके रसकी पुट देना पीछे धूपमें सुखावना पीछे पीसना देहमें मर्दन करना शीत मिटै देह गरम होय एते रोग दूर होयँ ॥

अथ अजीर्णके लक्षण ।

पहिले दशज्वर कहे वेलाज्वर बहुत दिन रहे जिसमें श्वासकास उपजें उस श्वासकाससे अजीर्णज्वर होय॥

अथ अजीर्ण ज्वरको गोली वृन्दसे ।

पीपल १० टंक गुड़ २० टंक मिलायकर खाय तौ अजीर्णज्वर जाय ॥

पुनः अजीर्णको चटनी ।

शहद १ तोला पीपल ६ माशे पीस मिलाय ७ दिन खाइये तौ अजीर्णज्वर जातारहै ॥

पुनः काढा वृन्दसे।

गिलोयका काढ़ा कीजे आठवां हिस्सा आयरहे तव पीपलका चूर्ण बुरकावे पीछे रोगीको पिलावे तो अजीर्णज्वर जाय ॥

पुनः क्वाथ वृन्दसे।

वेलगिरी स्योनाक पाढ़ अरणीकी जड़ ये पांच मूलका काढाकरे आठवां हिस्सा आयरहे तव अजीर्णज्वर वालेको पिलावे तो अजीर्णज्वर जाय ॥

पुनः काढा रसरत्नाकरसे।

सोंठि चाव चित्रक पीपल पीपलामूल ये सब औषध वरावर लीजे इनका काढ़ा कर ऊपरसेती जवाखार२ माशे बुरकावे पीछे पिलावे अजीर्ण ज्वर जाय ॥

अथ विषमज्वरकी उत्पत्ति लक्षण माधवनिदानसे।

जीर्णज्वरसेती उपजे जीर्णके काम करे क्रोध करे स्त्रीप्रसंगसे भयसे गई चीजके शोचसे दलगीरी से हो उस ज्वरका नाम विषमज्वर कहिये है ॥

विषमज्वर लक्षण कहते हैं।

हाथ पैर लगजायँ देह सुस्तरहे आलस्यरहे भूख बंद रहे कभी ज्वर रहे कभी शीतल देह होय कभी श्वासकास

होय शूल होय अरुचि होय रुधिर मांस सूखे देह पीली पड़जाय ये लक्षण विषमज्वरके हैं ॥

अथविषमज्वर वर्द्धमानपिप्पली योगमतसे ।

पहिले दिन३ पीपल दूसरे दिन५तीसरे दिन७चौथे दिन १० पांचवें दिन १०छठे दिन७ सातवें दिन ५ आठवें दिन३इसतरह पीवे चढ़ती उतरती१००पीपल पीवे तो विषमज्वर श्वास कास अजीर्ण हिचकी गुल्म भगन्दर प्लीह अर्श कुष्ठ सन्निपात इतने रोग वर्द्धमान पीपलसेती जायँ ॥

अथ हारिद्रकज्वर,कमलवायु,पीलिये-का लक्षण माधवनिदानसे ।

वातपित्तका कोप होय तब हारिद्रकज्वर होय कण्ठशोष होय देहमें दाह होय शरीर पीला होय आंख पीली होय नख पीले होयँ पेशाव पीला होय तृषा बहुत होय कोठा बंद होय इतने लक्षण हारिद्रकज्वरके कहे हारिद्रक ज्वरवाले को दस्तयोग हैं ॥

अथ हारिद्रकज्वरवालेको क्राथ योगचिन्तामणिमतसे ।

हरड़े नागरमोथा चिरायता अड़ूसा मुनक्का गिलोय नींब पीपलामूल मुलहठी ये औषध सब बराबर लीजे

सब समान कूटि काढ़ा करे ठंढा होय तब शहदगेरकर पीवै इस काढ़ेसे हारिद्रक पांडु कमलवायु जाय ॥

अथ क्वाथ वृन्दसे ।

नेत्रबाला पित्तपापड़ा नींबकी छाल नागरमोथा गिलोय धनियां अमलतास सौंफ पद्माक कुटकी जवासा रक्तचन्दन शतावर ये सब औषध बराबर लीजे सब औषधके बराबर मुनक्काका काढ़ा करे हारिद्रकज्वर जाय दाह गरमी मिटै ॥

अथ आमज्वरका लक्षण माधवनिदानसे ।

आलस्य होय निद्रा होय खांसी और भारीपन होय पेट भारी होय अरुचि होय देह सुस्त होय आमज्वरके इतने लक्षण कहे ॥ आमज्वरवालेको लंघन करावे औटा पानी दीजे हलका अन्न दीजे दालिका पानी दीजे कड़वी औषध दीजे शोधन काढ़ा दीजे योगचिन्तामणि चरक वृन्द शास्त्रनेभी कहा ॥

इति श्रीपद्मरंगशिष्यरामचन्द्रविरचित रामविनोदका सर्व पाचनकजीर्णोद्धार पित्तखेद वायुदृष्टि कफ रक्तज्वर एकाहिक द्वितीयक तृतीयक चातुर्थिक शीतजीर्ण विषमहारिद्रक-आमज्वर इनके उपाय उद्धूलन अंजन अवलेह नाम मंत्र गंडा टोना कथननाम द्वितीयाधिकार ॥ २ ॥

अथातीसार अधिकार वातपित्तकफनिदान् ।

शीतसे गरमसे भारीचीजसे वातपित्तका दोष प्रकट

होयहै लक्षण डकार होय मूर्च्छा होय तृषा बहुत होय।

अथ वातपित्तज्वरको चूर्ण वृन्दसे ।

त्रिकुटा पीपलामूल ये दोनों बराबर लीजे इनसे दूनी मिश्री ले ये सब कूट छान चूर्ण करे दो टंक पानीसेती ले तो वातपित्तज्वर दूर होय ।

पुनः चूर्ण वृंदसे ।

पीपल एक टंक मिश्री२टंक पीसि पानीसेती फांकले तो वातपित्तज्वर दूर होय ।

पुनः पंचभद्रकचूर्ण ।

पित्तपापडा नागरमोथा चिरायता सोंठ गिलोय यह सब सममात्रा लेके चूर्ण करे पानीसेती फांके तो वात पित्तज्वरजाय ॥

क्राथ शार्ङ्गधरसे ।

मुनक्का गिलोय आंवले कुटकी चिरायता कपूर यह सब औषध बराबर लीजै यव कूटकर अष्टावशेष काढ़ा करिये पीछे ठंढा करि २ टंक शक्कर गेरके पीवे तो वातपित्तज्वर दूर होय ।

पुनः वातपित्तको काथ वृन्दसे ।

नागरमोथा नेत्रवाला सोंठ पाढ़ कमलगट्टा चिरायता गिलोय यह बराबर लीजे काढ़ा कर पीवे वातपित्तज्वर जाय ॥

अथ कफपित्तज्वरका लक्षण सिद्धसारसे।

महादाह होय तृषा बहुत होय छर्दि(उवाकी)होय सारे शरीरमें पसेव होय कफपित्तज्वरके लक्षण ये हैं।

कफपित्तज्वरको चूर्ण वृंदसे।

अडूसा पानफूलसमेत १२ माशे कटाई९ माशे मिश्री १तोला पानीसेती नित्यले तो कफपित्तज्वर जाय ॥

कफपित्तज्वरको काढा शार्ङ्गधरसे।

सफेद चन्दन नागरमोथा गिलोय कटाईकी जड कुलींजन अडूसा इन्द्रयव भारंगी जवासा ये सब औषध बराबर ले काढ़ा करै पीछे पीवै तो पित्तकफज्वर तृषा कास श्वास अरुचि शूल इतने रोग जायँ ॥

पुनः कफपित्तज्वरको काढा वृन्दसे।

नींब गिलोय धनियां पद्माक रक्तचन्दन ये औषध बराबर लेकर काढ़ा कीजे पीछे पीवै तो छर्दि देहपीडा तृषा जाय ॥

कफपित्तज्वरको चूर्ण।

कुटकी १ टंक मिश्री ४ टंक पीस गरम पानीसेती फंकी लीजे तो कफपित्तज्वर दूर होजाय॥

कफपित्तज्वरको क्वाथ वृन्दसे।

धनियां इन्द्रयव नींबकी छाल पटोलपत्र पित्तपापड़ा ये औषध बराबर लीजे इनका काढ़ा करके पीवे तो पित्तश्लेष्म ज्वर जाय ॥

अथ वायु कफके लक्षण माधवनिदानसे ।

अन्दर वाहर शरीर गरम होय पसेव वहुत आवे कफ ज्यादा होय इतना लक्षण कफ वायुका कहा ॥

अथ कफ वायुको चूर्ण वृन्दसे ।

पीपल पीपलामूल चव्य चित्रक सोंठ ये सब वरावर ले कूट छानकर २ टंक चूर्ण गरमपानीसेती खाय तो वातकफज्वर जाय ॥

अथ वातपित्तको खैरसारादि गोली योगचिन्तामणिमतसे ।

खैरसार त्रिकुटा त्रिफला पीपलामूल काकडासिंगी पुष्करमूल लवंग कायफल इलायची कचूर ये सव औषध वरावर लीजे कूट छान अदरखके रसकी ७ पुट दे चनाप्रमाण गोली कीजे खाय तो वातश्लेष्मज्वर जाय पसवाडेको शूल स्वरभंग गलरोग इतने रोग जायँ ॥

अथ वायुकफको काथ वृन्दसे ।

कायफलनागरमोथा भारंगी धनियां हड़ काकडासिंगी सोंठ पित्तपापड़ा देवदारु हींग मुलहठीये औषध वरावर लीजे इनका क्वाथ पीवे तो हिचकी श्वासकासजाय ॥

पुनःपिप्पलादि काढा वृन्दसे ।

पीपल रीठा रासना हींग मुलहठी सँभालूके वीज नागरमोथा हड़ कुडाकी छाल विधारा एरण्डकी

न्द्रयव निसोत सफेदजीरा अजवायन मिरच नींबकी छाल भारंगी सोंठ पीपलामूल ये औषध बराबर लेके काढ़ा कर पिलावै कफवायु पसेव अंगपीड़ा खांसी धाँसी शूल पीपलादि काढ़ा इतने रोग दूर करै ॥

अथ सर्वज्वरको धूप योगमतसे ।

नेत्रबाला बालछड़ धतूरेके बीज बिनौला मोरपंख मजीठ गूगुल लहसन सरसों लाख वच कटाई माखी-को बीट हाथीका दांत हींग मिर्चलाल सांपकी केंचुलि इसबंध घीसे गोली बांधकर अग्नि ऊपर धूप दीजे आठों ज्वर जायँ भूत प्रेत राक्षस बैताल सन्निपात उन्माद चित्तभ्रम इतने रोग जायँ ॥

अथ सन्निपातकी उत्पत्ति सन्निपात-कलिकासे ।

रूखी वस्तुसे उष्णवस्तुसे,धातुक्षीणसे बोझ उठायेसे खेदसे शोचसे इतनी बातोंसे सन्निपात उपजैहै ॥

अथ तेरहों सन्निपातकेनाम सन्निपात कलिकासे ।

संधिक १ अंतक २ रुग्दाह ३ चित्तभ्रम४शीतांग५ तन्द्रिक ६ कंठकुब्ज ७ कर्णक ८भग्ननेत्र९रक्तष्ठीवी१० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ तेरह सन्नि-पातनाम धन्वन्तरिने कहे ॥

अथ सन्निपात आयुर्मर्यादा सन्निपात कलिकासे ।

संधिक मर्यादा ७ दिन तिसभीतर मरै अथवा जीवै अंतक मर्यादा १० दिन रुग्दाह मर्यादा२० दिन चित्त-भ्रम मर्या ३ दिन शीतांग मर्यादा १५ दिन तन्द्रिक मर्यादा २५ दिन कण्ठकुब्ज मर्यादा १३ दिन कर्णक मर्यादा १ महीना भग्ननेत्र मर्यादा ८ दिन रक्तष्ठीवी मर्यादा १० दिन प्रलापक सन्निपात मर्यादा १४ दिन जिह्वक मर्यादा १६ दिन अभिन्यास मर्यादा १५ दिन यह सन्निपातकी मर्यादा कही ।

अथ साध्य असाध्य लक्षण ।

संधिक सन्निपात साध्य कहिये१तन्द्रिक२चित्तभ्रम३ कर्णक ४जिह्वक५कंठकुब्ज६ये पांचों कष्टसाध्य कहिये रुग्दाह अति कष्टसाध्य कहिये ७अन्तक ८ रक्तष्ठीवी ९ भग्ननेत्र१० शीतांग ११ प्रलापक १२ अभिन्यास १३ इन तेरहमें एक साध्य अरु पांच कष्टसाध्य रुग्दाह सातवां अतिकष्टसाध्य है बाकी ६ असाध्य कहे इन सन्निपातके लक्षण चिकित्सा कहे हैं ॥

प्रथम संधिक लक्षण ।

पेटमें शूल होय वायु होय कफ होय नहीं ताप होय शरीरकी संधि सब दूखें तो संधिक जाने संधिकवालेको लंघन करावै सब शरीरमें विषगर्भ तेलका मर्दन कीजे

लंघन पीछे मूंगमोठका पानी दीजे ऊपरसे पीपल जीरा कालानोन बुरकावे ॥

अथ भारंगादि क्वाथ वृन्दसे ।

भारंगी पुष्करमूल रासना सोंठ वेलगिरी अजवायन चिरायता दशमूल ये सब दवाई बराबर ले एकसेर पानी लीजै दवाई छटाक भर लीजै काढा करे जब आठवां हिस्सा पानी आयरहे तब औषधको पीवे संधिक वायुका नाश होय सर्व शरीरका शून्यत्व जाय हाथ पैर अकडजायँ तो खुलजायँ ॥

पुनः संधिक सन्निपातको रासनादि क्वाथ कलिकासे ।

रासना गिलोय त्रिफला विधारा सोंठ शतावर देवदारु यह सब औषध बराबरलेकर काढ़ा करे गूगुल १ टंक गेरदे १४ दिन ताईं संधिक दूर होय पथ्य मोठकी दाल खटाई घृत दीजै नहीं ॥

पुनः काढा वृन्दसे ।

सोंठ गिलोय एरंडकी जड़ हड़ देवदारु रासना इन औषधोंका काढा करे पीछे पिलावे तोसंधिकवायुदूरहोय॥

पुनः क्वाथ सन्निपातकलिकासे ।

रासना सोंठ गिलोय अडूसा हरडै देवदारु कचूर कुटकीशतावर एरंडकी जड़ यह सब बराबरलेकर काढा करे पीछे पीवे संधिकवायु दूरहो और चौरासीवायु मिटै॥

पुनः संधिकको धूनी वाग्भट्टसे।

निंबौलीकी मींगी सँभालू भांगके बीज वच तगर देवदारु पीपलामूल बिनौला आकफूली सांपकी कांचलीशिरका बाल भेड़की चमड़ी शहदसंयुक्त धूप दे मालसामाहिं अग्नि राखके भूत प्रेत राक्षस वैताल चुडैल डाकिनी शाकिनी संधिकज्वर ये सब जायँ। इति संधिकसन्निपातचिकित्सा।

अथ अंतकसन्निपातका असाध्य लक्षण।

अंतकसन्निपातवालेको दाह बहुत होय बेचैनी बहुत होय ज्वर प्रबल होय हिचकी बहुत होय श्वास बहुत ले तिस पुरुषकी जीवनकी आश नहीं सब वैद्यवृद्धोंने कहा अंतकसन्निपात असाध्य है। जिसके अंतकसन्निपात होय तिसकी दवाई किसी ग्रन्थमें नहीं इसकी दवाई पुण्यदान और गंगाजल है और उपाय नहीं है। इति अंतकचिकित्सा॥

अथ रुग्दाह सन्निपातका लक्षण।

दाह प्रबल होय अग्नि मन्द होय भ्रम होय खाँसी बहुत होय शूल होय गला दूखै पीड़ा बहुत होय तृषा बहुत होय ये रुग्दाहके लक्षण हैं॥

रुग्दाह सन्निपातको क्वाथ वृंदसे।

त्रायमाण पुष्करमूल गिलोय सोंठ चिरायता पीपल धमासा रासना पित्तपापड़ा भारंगी मिर्च हड़ देवदारु बच कटाई ये सब औषध बराबर लीजे इनका .

प्रभात पीवै रुग्दाह सन्निपात दूर होय तृषा तन्द्रा निद्रा प्रलाप इतने रोग जायँ रातको नींद आवै ॥

रुग्दाहसन्निपातको काढा कलिकासे ।

ब्राह्मी नागरमोथा अजवायन कुटकी मुनक्का नींबकी छाल चिरायता अमलतास कड़वी तोरई नेत्रवाला गोखुरू बेलगिरी स्योनाक पाटल यह सब बराबर लीजै इनका काढ़ा कर प्रभात पीवै तो शरीरकी सर्व व्यथा जायँ रुग्दाह सन्निपात जाय ॥

क्काथ सिद्धसारसे ।

हड़ पित्तपापड़ा नागरमोथा कुटकी अमलतास मुनक्का यह औषध बराबर लीजै इनका काढ़ा करै सर्व वायु रुग्दाह सन्निपातको दूर करैहै ॥

लेप वृन्दसे ।

समुद्रझाग बेरीपत्र चन्दन सफेद नींबकी लकड़ी यह औषध पानीसे पीस शरीरमें लेप करै तो हाथ पैरकी दाह मिटै ॥

रुग्दाह सन्निपातकी धूप वृन्दसे ।

चन्दन सफेद नागरमोथा अमरनख कपूर गेहूँ इलायचीके बीज लोबानकी धूप रुग्दाहवालेको दीजै महाबलवान् दाह जाय ॥

अथ चित्तभ्रम सन्निपातके लक्षण ।

अंग२में पीड़ा होय ताप होय उन्माद होय नेत्र

निम्न हो २ फटी आंख होय अति हास्य करे गीत गावै नाचै ये लक्षण चित्तभ्रमसन्निपातके वैद्योंने कहे हैं ॥

चित्तभ्रमको क्राथ वृन्दसे ।

नेत्रवाला इन्द्रवारुणी सोंठ मिर्च पीपल कुटकी वच हड़ बहेड़ा आमला सुरदारु रासना धमासा जिमीकन्द हल्दी नागरमोथा त्रायमाण नींबकी छाल कटाई काकड़ासिंगी गिलोय साठीकी जड़इन्द्रयव पाटल ये औषध बराबर लीजे इनका काढ़ा कर प्रभात सन्ध्या पीवे तो चित्तभ्रमसन्निपात मूर्च्छा विकलता प्रलाप बकवादादि सब दूर होजायं जैसे सिंहको देख हाथी दूर भागजाय ॥

पुनः पटोलादिक्राथ योगचिंतामणिमतसे ।

पटोलपत्र गिलोय पित्तपापड़ा नागरमोथा धमासा चिरायता नींबकी छाल बहेड़ाकी छाल आमला अडूसा यह सब औषध बराबर लीजे इनका काढ़ा करै आठवाँ हिस्सा रहे तब पीवना ७ दिनतक पवनमें नहीं रहना चित्तभ्रम सन्निपात दूर होय ॥

पुनः वृद्धक्षुद्रादिक क्राथ शार्ङ्गधरसे ।

कटाई नींबकी छाल पटोलपत्र चन्दन नागरमोथा पित्तपापड़ा कुटकी गिलोय पद्माक बहेड़ा चिरायता सोंठि इन्द्रयव पुष्करमूल धनियां भारंगी धमासा यह सब औषध बराबर ले काढ़ा कर प्रभात पीवै चित्तभ्रम छर्दि दूर होय ॥

पुनःचित्तभ्रमको काढा सन्निपातकलिकासे ।

हड़ पित्तपापडा अमलतास नागरमोथा मुनक्का चिरायता कुटकी आमला पाटल यह औषध बराबर लीजै इनका काढ़ा कर पीवै चित्तभ्रम सन्निपात दूर होय ॥

पुनः तगरादिक्काथ सन्निपातकलिकासे ।

तगर असगन्ध पित्तपापड़ा मुनक्का अमलतास नागरमोथा देवदारु कुटकी ब्राह्मी बालछड़ हड़ यह सब औषध बराबर ले इनका काढ़ा कर पीनेसे चित्तभ्रम मूर्छा प्रलाप दूर होय ॥ इति चित्तभ्रम चिकित्सा ॥

अथ शीतांग सन्निपातके लक्षण कलिकासे ।

शीत लगै श्लेष्म होय श्वासकास होय शिथिलताहोय तृषा नही होय पसेव होय इतने लक्षण शीतांगके कहेहैं॥

अथ शीतांगको चूर्ण योगचिंतामणिके मतसे।

मोहरा४ टंक वगर२टंक मिर्च दक्षिणी६टंक फिटकरी १२ टकेभर ये सब औषध चूर्ण कर४ रत्ती अदरकके रससेती लीजै गोली छोटे वेरप्रमाण बांधनी मूर्छा शीत वात सन्निपात विच्छूविष उतरे ॥

अथ शीतांगगुटिका रसचिंतामणिके मतसे ।

लवंग जायफल जावित्री अकरकरहा केशर कस्तूरी दालचीनी ये सब औषध कूट छान गोली४रत्तीप्रमाण बांधे प्रभात संध्या१गोली खाय तो शीतांग जाय ॥

पुनःगोली कुर्कटसे ।

पारा १ पैसाभर गन्धक १ पैसाभर इनसे दूना गुड़ ले गोली छोटे बेरप्रमाणकी करिये १ गोली प्रभात ६ संध्याको खाय शीतांग दूर होय मूर्च्छा दूर होय ॥

पाचन गुटिका चरकसे ।

पारा १ टंक गन्धक १ टंक मोहरा १ टंक इनके बराबर पीपल लीजे सब औषधबराबर गुड़ लीजे २ रत्ती प्रमाण गोली करे इसकी गोली खायेसे शीतांगजाय कुष्ट अतीसार कृमि प्लीहप्रमेह शूलकफखांसी इतनेरोग जायँ।

वड़ी ब्राह्म्यादिगोली रसचिन्तामणिके मतसे।

ब्राह्मी तज लवंग केसर पीपलामूल पुष्करमूल सोंठि शतावर जायफल जावित्री मिर्च चिरायता शंखाहूली वच इलायची अकरकरहा अजमोद अजवायन चित्रक सोयेका बीज कुलींजनसार तमालपत्र अभ्रक तेजबल इन सब औषधोंसे दूने मुनक्का ले सब कूट गोली २ टंककी बांधनी प्रभात संध्या गोली खाय शीतांग श्वास कास चित्तभ्रम उन्माद कुष्ठबंध इतने रोग दूर होयँ ॥ इति शीतांगचिकित्सा ॥

अथ तन्द्रिकके लक्षण ।

प्रथम ताप होय आंखोंसे देखे नहीं निद्रामें लीन होय

मीठा बोले आंख मिची रहे अतीसार होय छर्दि होय श्वास होय तृषा होय जीभ स्याह होय अथवा कठोर होय अथवा कांटे होयँ खाज होय इतने लक्षण तन्द्रिकके कहेहैं॥

तन्द्रिकको अंजन सन्निपातकलिकासे ।

पीपल मैनशिल महीन पीसके तेलसेती अंजन करे तो तन्द्रिक जाय ॥

तन्द्रिकको अष्टादशांग क्वाथ वृन्दसे ।

चिरायता देवदारु सोंठि नागरमोथा धनियां कुटकी इन्द्रयव दशमूल गजपीपल यह औषध सममात्रा लेनी आठवां हिस्सा रहै तब पिलावे इससे तन्द्रिक सन्निपात जाय ॥

पुनःतन्द्रिकको क्वाथ शार्ङ्गधरसे ।

साठीकी जड कनेर कटेली सोंठि काकडासिंगी चिरायता धमासा कुटकी पाढ गिलोय यह औषध बराबर लीजे काढा कर पीवे श्वास कास छर्दि शूल तन्द्रिक इतने रोग जायँ ॥

पुनःक्वाथ सन्निपातकलिकासे ।

हड़ पुष्करमूल कटेली सोंठि गिलोय भारंगी यह सब औषध बराबर लेनी इनका काढ़ा कर पीवना इससे तन्द्रिक सन्निपात जाय पथ्य मोठकी दाल ि गर्म देना पवनसे बचना ।

पुनःतन्द्रिक को अंजन वृंदसे ।

त्रिकुटा कुड़ाकी छाल वरावर लेना नागरमोथाके रसमें पीसे पहर एक पीछे गोली वांधे रती प्रमाणकी गोली एक गऊके पेशाबमें घिसके अंजन करै तन्द्रिक दूर होय॥

पुनः अंजन सन्निपातकलिकासे ।

कूट सिरसके वीज नागरमोथा पीपल वच मिर्च हरद दारुहल्दी यह सब औषध बराबर ले वछियाके पेशावसेती अंजन करना तन्द्रिक सन्निपात जाय ॥

पुनः अंजन वृन्दसे ।

त्रिकुटा सैंधवनोन हींग वच कुटकी हड़ इन औष-धोंके बराबर सिरसके वीज लेना गोमूत्रमें मर्दन करे पहर एक गोली बांधि छायामें सुखावना चना प्रमाण गोली बांधे गोमूत्रमें घिसकर अंजन करै तन्द्रिक मृगी अचैतन्यता भूत प्रेत ओ परी पराई मिटै ॥

पुनः अंजन ।

पीपल गऊके गोवरके पानीसेती आंजै तन्द्रिक जाय॥ इति तन्द्रिकसन्निपातकी चिकित्सा ॥

अथ हारिद्रकसन्निपातके लक्षण ।

दाह होय नेत्रपीड़ा होय हड़फूटन होय स्याह जीभ होय इतने हारिद्रकके लक्षण कहे हैं ॥

हारिद्रकको काढा वृन्दसे।

रक्त चन्दन धनियां नागरमोथा गिलोय कुटकी सोंठि मूर्बा नेत्रबाला पित्तपापड़ा बालछड़ साठीकी जड़ खस रास्ना पाषाणभेद सफेद चन्दन मुलहठी यह सब बराबर लीजै इनका काढ़ाकर पीवै तो हारिद्रक जाय॥

पुनः गोली ।

कुटकी हड़ पीपल अतीस यह चारों बराबर लेके कटाईके रसमें गोली बांधै बेर प्रमाण खायेसेती हारिद्रक जाय ॥

अथ कंठकुब्जके लक्षण ।

माथो दुखै देहमें पीड़ा होय कांपै बहुत प्रलाप होय मूर्च्छा होय नींद नही आवै पसेव बहुत आवै कंठकुब्जके ये लक्षण कहे हैं ॥

अथ कंठकुब्जको क्वाथ वृन्दसे ।

नागरमोथा पित्तपापड़ा त्रिफला देवदारु सोंठि खस धमासा पीलूकी छाल नीवकी छाल निसोत चिरायता पाढ़ खरेंटी पीपलामूल मुलहठी यह औषध बराबर लीजै पीछे आठवें हिस्सेका पानी आय रहे तो पीवै कंठकुब्ज सन्निपात जाय ॥

पुनः क्वाथ सन्निपातकलिकासे।

त्रिकुटा त्रिकुटी नागरमोथा गजपीपल हड़ हल्दी क-, चिरायता इन्द्रयव पुष्करमूल चित्रक भारंगी बहेडा

आमला यह सब औषध बराबर ले काढ़ा करि रोगीको प्रभात समय पिलावै इस काढ़ेसे कंठकुब्ज दूर होय॥

पुनः क्वाथ हारीतसे ।

काकड़ासिंगी कुड़ाकी छाल कचूर हड़ नागरमोथा पुष्करमूल पीपल कायफल बहेड़ा आंवला देवदारु सोंठि चव्य कुटकी हल्दी मिर्च कटाई अडूसा भारंगी यह सब औषध बराबर लेके काढ़ा करना प्रभात समय पीवै चौरासी वायुको दूर करै पथ्य मोंठकी दाल ॥

कंठकुब्जको नास वृन्दसे ।

कुटकी तोरईके बीज त्रिकुटा पानीसेती घिस ३ वार नास देनी अंग चैतन्य होय मूर्च्छा मिटै ॥

अथ कर्णकके लक्षण ।

बकै बहुत कानमें पीड़ा होय मोह बहुत होय श्वास होय शून्यदेही रहै कानमें गांठकी बाधा होय ग्रीवाविषे पीडा होय ये कर्णक सन्निपातके लक्षण कहे हैं कानविषे गांठ होय तिसके ऊपर जोंक लगावै कानकी पीड़ा मिटै ॥

कर्णकका उपाय ।

गायका घी गरम करके कर्णक सन्निपातवालेको पिलावै तो कर्णक सन्निपात मिटै यह इलाज वृन्द ऋषीश्वरने बतायो है ॥

कर्णकको लेप योगचिंतामणिके मतसे।

दारुणी चीता तज गुड़ यह औषध आकके दूधमें पीस लेप करे इस लेपसे कर्णक ग्रंथि जाय कर्णकी गांठें तुरत मिटें॥

पुनः कर्णकको लेप वृन्दसे।

हल्दी इन्द्रवारुणी सेंधानोन दारुहल्दी आकके दूधमें चारों औषधोंको पीसकर कर्णग्रंथिके ऊपर लेप कीजे कानकी गांठ जाय॥

कर्णकको क्वाथ।

कायफल नागरमोथा यव पीपल कुटकी भारंगी इन्द्रयव धनियां रेवासन सोंठि पुष्करमूल सफेद जीरा पाढ़ कचूर दारुहल्दी हड़ देवदारु काकड़ासिंगी चिरायता यह औषध बराबर ले इनका काढ़ा कीजै काढ़ेके बीच हींग अदरकके रसका प्रतिवास दीजै तुरत प्यावै कानकी गांठ अच्छी होय कानको पीड़ा कफ वातज्वर माथा गलेकी शूल गांठको दूर करे।

अथ कर्णकको रासनादिक्वाथ वृन्दसे।

रासना पाढ़ कटेली धनियां पीपल वच पुष्करमूल कुटकी भारंगीशतावर काकड़ासिंगी यह औषधबराबर लेना इनका काढ़ा करना आठवांहिस्सा पानी आय रहे

तब रोगीको पिलावै गलेकी और माथेकी पीड़ा दूर होय जैसे भगवत्कथा पापको खोवै ॥

कर्णकका उपाय वृन्दसे ।

वासी पानी प्रभातके समय नाकसे पीवै तो इतने रोग जायँ कर्णकसन्निपात पीनस नाकमें वास आवै सो दूर होय आंख निर्मल हो ज्योति बहुत होय ॥

कर्णकमें मुख शुद्ध करनेको उपाय वृन्दसे ।

पीपल सैंधानोन पीसि ७ वार दांतमें मर्दन करै तो मुखदुर्गंध जाय ॥

कर्णकमें पथ्यापथ्य ।

रातिको भोजन दिनको सोवना स्त्रीसंगति वैंगन पेठा लहसुन कन्द सब मांस सूखासाग कर्णकमें इतनी वस्तु नहीं खाय और इतनी वस्तु खाय अदर सोया कोहला तोरईइतनी चीजपथ्य हैं॥इति कर्णकसन्निपातचिकित्सा

अथ भग्ननेत्रके लक्षण ।

ज्वर होय प्रलाप होय अचेत होय भग्नदंष्ट्र होय भ्रम होय मोह होय देह कम्पै सोजा कंठपीड़ा गलपीड़ा आंख फटी रहै यह लक्षण भग्ननेत्र सन्निपातके हैं ॥

भग्ननेत्रका अवलेह वृन्दसे ।

सोनामक्खी चिरायता पीपल यह तीन औषध

सम मात्रा लेना टंक २ चूर्ण शहदमें मिलायकर चाटना भग्नदंष्ट्र सन्निपात जाय ॥

भग्ननेत्रको अंजन।

पीपल मिर्च मैनशिल यह औषध महीन पीस पानीसेती अंजन करे भग्ननेत्रसे अचेत होय सो सचेत होय भूत प्रेत चुड़ैल बाधा जाय ॥

पुनःअंजन योगचिन्तामणिके मतसे।

मिर्च पीपल वच महुआ सेंधा यह सब औषध पीस अंजन करे भग्ननेत्र सन्निपात दूर होय ॥

भग्ननेत्रको नास।

वच मिर्च समुद्रफेन पीपल असगन्ध यह औषध बराबर पीस नास देना अचेतन पुरुष चैतन्य होय यह सिद्ध योग कहाहै ॥

भग्ननेत्रको काढा शार्ङ्गधरसे।

त्रिफला नागरमोथा कुटकी कटाई नीबके पत्ते हल्दी दारुहल्दी पटोलपत्र यह सब औषध बराबर लेना इनके काढ़ेसे भग्ननेत्र दूर होय॥इति भग्ननेत्रकी चिकित्सा॥

अथ रक्तष्ठीवीका लक्षण माधवनिदानसे।

नाकसेती रुधिर चलै छर्दि होय तृषा होय पेटमें शूल होय अतीसार होय अरुचि होय प्रलाप होय हिचकी होय

जीभ काली होय मोह होय भ्रम होय श्वास होय रक्तष्ठीवी के ये लक्षण कहेहैं ॥

रक्तष्ठीवीको चूर्ण शार्ङ्गधरसे ।

नेत्रवाला सफेद चन्दन पद्माक खस प्रियंगु छोटीइलायची दालचीनी धावेके फूल यह सब औषध बराबर लेनी औषधोंसे सोलहगुनी मिश्री लीजै इन औषधोंको कूट छान चूर्ण करै टंक२चूर्ण ताजा पानीसेती लीजै रक्तष्ठीवी जाय ज्वर उतरै लोहू गिरता थँभै ॥

नास चरकसे ।

पाषाणभेद गायके घीमें पीसकर प्रभातके समय नास ले लोहू नाकसे और मुखसे थँभै ॥

रक्तष्ठीवीका अवलेह ।

बहेड़ाका रस शहदमें मिलाकर पिलावे मुख नाक से लोहू थँभै यह सिद्धयोगमें कहाहै ॥

चूर्ण वैद्यवल्लभसे ।

इन्द्रवारुणीकी जड १२ टंक पोस्तकी जड १२ टंक यह औषध दोनों कूट छान चूर्ण करना गायके दूधसे टंक २ चूर्ण प्रभातको देना मुखका लोहू थँभै ॥

पुनः चूर्ण वैद्यवल्लभसे ।

फिटकरी फुलाई टंक४विलायती अनारकी छाल टंक४यह दोनों महीन पीसके चूर्ण करना माशा २ चूर्ण

ताजा पानीसेती खाय तो असाध्य रक्तष्टीवी जाय छर्दि थँभै रुधिर अवश्य थँभै ॥

पुनः नास वैद्यमनोरमासे ।

इस चूर्णको चावलके पानीसे घिसकर प्रभात नास दे तो लोहूका प्रवाह थँभै जैसे तलावका जल पालासे थँभै तैसे इस चूर्णसे मुख नाकका लोहू थँभजाय ॥

लेप मनोरमासे ।

बीजाबोल एलुवा गुजराती नींबूके रससेती पीस मुख नाकपै लेप करै लोहू थँभै ॥

वृद्धमंजिष्ठादि योग ।चिन्तामणिसे ।

मजीठ नींबकी छाल चन्दन नागरमोथा अडूसा त्रायमाण हल्दी दारुहल्दी धमासा पाढ़ चिरायता गिलोय वायविड़ंग त्रिफला निसोत कुटकी इन्द्रवारुणी वच पित्तपापड़ा खैरसार बकायन कुड़ाकी छाल निगन्ध बावची पटोलपत्र अतीस यह सब औषध बराबर ले इनका काढ़ा करै आठवां हिस्सा पानी रहै तब पीवै इससे रक्तष्ठीवीका नाश होय खाज मण्डल ब्योंची गलित कोढ़ गजचर्म हाथ पैर गलगये होयँ अच्छे हों लोहूविकार सब जाय ॥

रक्तष्ठीवीको क्वाथ सन्निपातकलिकासे ।

पित्तपापड़ा कुटकी धमासा अडूसा बहुफली जवासा चिरायता यहसब औषध बराबर लेनी इनकाकादाक

मिश्री टंक १ बुरकाइये यह काढ़ा प्रभातको दीजै.रक्त-ष्ठीवी रुधिरविकार रहै नहीं यह इलाज अपने पुत्रके वास्ते किया ॥ इति रक्तष्ठीवी चिकित्सा ॥

अथ प्रलापसन्निपातके लक्षण ।

शरीर कांपै प्रलाप होय अन्दर बाहर दाह होय गलेमें पीड़ा बहुत होय बहकी बातें करै जैसे भूतलगेके लक्षण होयँ तैसे प्रलापक सन्निपातके लक्षण कहेहैं ॥

प्रलापको जायफलादिचूर्ण शार्ङ्गधरसे ।

जायफल जावित्री लवंग तज छोटी इलायची वायविड़ंग चोबचीनी अजमोद चिरायता नागकेसर बहेड़ेकी छाल त्रिकुटा अजवायन खैरसार पीपलामूल अभ्रक पोस्तसार चीर यह सब औषध बराबर ले कूट छान टंक २ प्रभात समय टंक १ संध्याको खाय इससे प्रलापक सन्निपात अरुचि संताप जाय ॥

सिंहशार्दूल गोली चरकसे ।

हींग टंक १ वच टंक १ खुरासानी टंक१वायविडंग टंक ३ सेंधा टंक२ जीरा सफेद टंक५सोंठि टंक५मिर्च टंक ६ पीपल टंक ७ कूट टंक ८ हड़ टंक १० भारंगी टंक११चिरायता टंक १२ अजमोद टंक १२ इन औषधोंसे गुड दूनाले सुपारीप्रमाण गोली बांधे १प्रभात खाय १संध्याको खाय चौरासी वायु प्रलापसन्निपात अर्श भगंदर शाकिनीदोष भूत प्रेत राक्षस वेताल पिशाच मू-

च्छी अजीर्ण अहार फोड़ा फुन्सी मंत्र यंत्र टोना टामण मूठ पेटपीड़ा अफरा जंगमविप विच्छूका विप हडकिया कुत्ताका विप अफीम आक विप इत्यादि रोग दूर होयँ जैसे सिंहसे हिरना तैसे इस गोलीसे सब रोग दूर होयँ यह औपध धन्वन्तारिने अपने पुत्रको बताई ॥

पुनः गोली रसचिन्तामणि मतसे।

पारा ऑवलासार गन्धक हरताल त्रिकुटा कुटकी सुहागा त्रिफला यह सब औपध बराबर लीजे भँगराके रसमें गोली करै चनाप्रमाण १ प्रभात १ संध्याको खाय चौरासी वायु जायँ ॥

अंजन सन्निपातकलिकासे।

त्रिकुटा त्रिफला मालकांगनी सेंधानोन सरसों कुटकी वच ये औपध बराबर लेकर बकरीके पेशाब- सेती गोली बांधिये चनाप्रमाण छायामें सुखाय अंजन करै प्रलाप उन्माद चित्तभ्रम बकवाद गहेल डाकिनी शाकिनी दोप तेरह सन्निपात रतौंधी बेलज्वर तिजारी मृगीआदि रोग जायँ ॥

काथ सन्निपातकलिकासे।

तगर तमालपत्र इन्द्रवारुणी असगन्ध निसोत अमलतास ब्राह्मी शंखाहुलीकी जड हड नागरमोथा पित्तपापडा मूर्वा दाख यह सब बराबर ले इनके ढ़ेसे प्रलाप जाय ॥

पुनः क्वाथ शार्ङ्गधरसे।

नेत्रवाला सोंठि नागरमोथा शालिपर्णी पृष्टिपर्णी कटाई दोनों गोखुरू वेलगिरी अरणी स्योनाक कुंभेर पाढल अडूसा पित्तपापड़ा चंदन मलयागिरि यह सब औषधका काढ़ा करै आठवां हिस्सा रहे तब पीवै प्रलाप अंग पीडा वायुपीडा जाय ॥

चूर्ण सन्निपातकलिकासे।

त्रिकुटा कचूर चिरायता यह औषध कूट छान टंक२ गरम पानीसेती दीजै प्रलाप जाय महादेवका वचन है॥ इति प्रलापचिकित्सा ॥

अथ जिह्वकसन्निपातके लक्षण।

गलेमें तालुवेमें जीभ जायलगे कंठ कठोर हो रात दिन नींद आवे नहीं श्वास कास ज्वर होय बोला न जाय कानोंसे सुने नहीं आंखोंसे दीखे नहीं ये जिह्वकके लक्षण कहे।

जिह्वकको चूर्ण वृन्दसे।

कुटकी पित्तपापड़ा त्रिकुटा गिलोय यह सममात्रा लेके चूर्ण करै घृतसेती टंक२ नित्य खाय जिह्वक दूर होय

पुनः चूर्ण वृन्दसे।

चमेलीके पत्ते वेलगिरी जीरा यह दवाई लीजै टंक१ गरम पानीसे जिह्वक जाय ॥

नःलेप वृन्दसे ।

सेंधानोन कूट यह दोनों बराबर लीज बिजौरेके रसमें मर्दन करे अथवा अदरकके रसमें जीभपे लेप करे जीभ नरम होय जिह्वक सन्निपात दूर होय जीभके काँटे मिटैं ॥

पुनः लेप ।

पीपल मिर्च चिरायता सेंधा यह सब औषध सममात्रा लीजै अदरखके रसमें जीभपर लेप करे जीभ नरम होय जिह्वक मिटै ॥

पुनः लेप रत्नाकरसे ।

त्रिकुटा तुलसीके बीज अकरकरा इंद्रयव ये औषध बराबर लेके कूट छान कर बिजौरेके रससेती जीभपर लेप करे जीभ कोमल होय जिह्वक सन्निपात जाय ॥

गोली वृन्दसे ।

त्रिकुटा केसर लवंग खैरसार इन औषधोंको पीस कपड़छान कर गोली बेरप्रमाण बांधै मुखमें राखै जिह्वक सन्निपात जाय ॥

कुरला वृन्दसे ।

सोंठि चाव चीता चमेलीके पत्ते इलायची नींबके पत्ते आंधलासार गंधक विजयसार तिलोंका तेल नेत्रबाला यह सब औषध बराबर लेके काढ़ा करे आठवां हिस्सा उतारकर ठंढा होय तब कुरला करे - दिन ७ प्रभात और संध्याको जीभ कोमल हो जिह्वक दूर होय॥

पुष्करमूलादिकाथ रसरत्नाकरसे।

पुष्करमूल काकड़ासिंगी कुटकी रासना त्रिकुटा चिरायता नागरमोथा ब्राह्मी कटाई देवदारु हड़ शतावरि भारंगी गिलोय अडूसा भांगरा यह सब सममात्रा लेकर इनका क्वाथ करे पीछे पीवै श्वास कास दूर होय नींद आवे जीभ कोमल होय कांटे जीभके मिटें॥

पुनः क्वाथ सन्निपातकलिकासे।

देवदारु कुड़ाकी छाल नींबके पत्ते हड़ वहेड़ा पटोलपत्र सोंठि पुष्करमूल नागरमोथा हल्दी काकड़ासिंगी गिलोय यह सब सममात्रा लेके काढा कीजे प्रभात पीजै इस काढेसे जिह्वक सन्निपात दूर होय अंगपीडा जाय यह उपाय अश्विनीकुमारने वताया है। इति जिह्वक चिकित्सा॥

अथ अभिन्याससन्निपातके लक्षण।

दाह वहुत होय मोह वहुत हो शरीर अकड़ जाय श्वास होय चेष्टा न करे जिसकी दृष्टि रूपको देखै नहीं गंधको रसको जानै नहीं शिर धुनाकरे आहारको जानै नहीं अच्छे मुखसे बोलै नहीं संदिग्ध वचन कहे यह लक्षण अभिन्यासके कहेहैं॥

अभिन्यासको अंजन।

सिरसके वीज मिर्च इन दोनोंको बकरेके मूत्रमें पीसकर अंजन करे तो शरीरकी संज्ञा होय॥

काथ सन्निपातकलिकास ।

साठीकी जड़ नागरमोथा दोनों कटाई यह चार औषध बराबर लीजै इनका काढ़ा करे काढ़में गोमूत्र टंक २ मिलाइके पीछे पिलावे अभिन्यास दूर होय ॥ इति अभिन्यास चिकित्सा ॥

अथ त्रिदोषके लक्षण माधवनिदानसे ।

तन्द्रा होय कफ होय कंठशोप होय निद्रा होय जीभ कठोर होय अचैतन्य होय अरुचि होय पिंडी पसवाड़ेमें शूल होय माथा दूखे सब शरीर शून्य होय पसेव वहुत होय शरीरमें सोजा होय घड़ीमें दाह घड़ीमें सरदी होय आँखोंमें पानी आवे कभी आंख मूंदे कभी खोले यह असाध्य है । इसपर इलाज थोड़ा चलै वैद्य समझके हाथ गेरे ॥

त्रिदोषकी चिकित्सा सन्निपातकलिकासे ।

त्रिदोपवालेको लंघन करावे और गरमपानी पिलावे कपड़ेका परदा रखिये पवन लगने दे नहीं ॥

त्रिदोपको चूर्ण ।

पीपल चिरायता पीस चूर्ण करे अद्रकके रसमें दीजे इससे त्रिदोप मिटै देही चैतन्य होय ॥

अंजन वृन्दसे ।

जियापोताकी मीगी जिसकी बराबर मिर्च तुलसीके पत्तेके रसमें मर्दन करे पीछे अंजन करे त्रिदोप-सन्निपात जाय ॥

पुनः उपाय वृन्दसे ।

लौंग टंक ३ हाहूबेर टंक १२ गरमपानीसेती चूर्ण कर पिलावे त्रिदोष दूर होय ॥

त्रिदोषकी गोली योगचिन्तामणिसे ।

पारा पैसा १ भर गन्धक आमलासार पैसा २ भर सोंठि पैसा १ मिर्च पैसा १ पीपल पैसा १ विड़नोन पैसा १ कचनोन पैसा १ मोहरा पैसा १ भर लवंग पैसा १ भर यह औषध इकट्ठी करे पारा गंधककी कजली करे अद्रकके रसकी ७ पुट दे नागरपानके रसकी ७ पुट दे गोली १ छोटे वेरप्रमाण बांधे त्रिदोषवालेको गोली १ तुलसीके पत्तेके रससेती खिलावे तो त्रिदोष सन्निपात जाय ॥

फंकी ।

लौंग पीपल चिरायता जीरा सफेद यह चार औषध पीस फंकी गरमजलसे ले तो त्रिदोष सन्निपात जाय॥

त्रिदोषको क्वाथ सन्निपातकलिकासे ।

शालिपर्णी पृष्टिपर्णी गोखुरूअरणी वेलगिरी कटेली दोनों स्योनाक पाटल यह औषध बराबर लीजे इनका काढ़ाकरे आठवां हिस्सा पानी आयरहे तब ऊपरसे टंक १ पीपल बुरकाय पिलावे त्रिदोषज्वर श्वास कास चित्तभ्रम पसेव मस्तकशूल अरुचि गलग्रह इतने रोग जायँ॥

पुनः क्वाथ रसचिंतामणिके मतसे।

सोंठि कटाई गिलोय यह तीनों औषध बराबर लीजे इनका काढ़ा करे ऊपर पीपल बुरकायके पिलावै तो त्रिदोषज्वर जाय श्वास कास अरुचि शूल इतने रोग जायँ यह इलाज वृन्दऋषीश्वरने बताया रामविनोदने प्रकट किया ॥ इति त्रिदोषकी चिकित्सा ॥

अथ ज्वरजानहारके लक्षण वैद्यमनोत्सवसे।

शिर हलका होय पसीना होय शरीरमें खाजा होय मुखमें फुन्सी होयँ छींकें आवें भूख लगे ये लक्षण होयँ तो ज्वर गया जाने ॥ और ज्वरवाले पुरुषको इतनी वस्तु खानेदे नहीं तेल घी दही खाटी वस्तु मदिरा मांस वैंगन मैदाकी वस्तु सिंघाड़े उड़द दूध सिखरन चना धानकी खील बेर जंभीरी चूरमा और खेद करे नहीं रास्ता चले नहीं स्त्रीकी संगति करे नहीं क्रोध करे नहीं जबतक शरीरमें बल होय नहीं तबतक एती वस्तु न करे ॥

अथ धनुषवायुके लक्षण।

जिस पुरुषके तप होय मुख खवेकी तरफ फिर जाय अंग २ में पीड़ा होय सन्धि सन्धिमें पीड़ा होय तो यह लक्षण धनुषवायुके हैं।

अथ धनुषवायुको मर्दन रसरत्नाकरसे।

आकका दूध अफीम मीठातेल यह तीनों इकट्ठा कर शरीरमें मर्दन करे ९ वार धनुषवायु जातारहै ॥

अथ धनुषवात मृगीवात चौरासीवातकी गोली क्षीरपाणिसे।

लहसुन १ सेर दूध सेर २५ गायका तथा भैंसका लहसुनको महीन पीस दूधमें मिलाय पीछे कड़ाहीमें डाल चूल्हेपर चढ़ाइये पीछे गुड़की पात करै पातमें घृत पाव सेर दीजे ऊपरसे त्रिकुटा २ छटाक पातमें बुरकावे खोवा करे गोली टंक २ की बांधे एक प्रभात एक शामको खाइयें धनुपवात मृगीवात चौरासी वायु दूर होयं अंग पीडा जाय देह पुष्ट होय बल बहुत होय॥

अथ चौरासीवातको योगराजगूगुल वृन्दसे।

पीपल पीपलामूल चव्या चित्रक सोंठि इन्द्रयव हींग भारंगी संभालूके वीज अतीस कुटकी मूर्वा सरसों बच जीरा दोनों गजपीपल टंक टंक भर लीजे सार टंक२० केना इस औषधोंसे दुगुना गूगुल गेरै गोमूत्रमें पकायके पीछे और औषध कूट छान मिलाय दीजे टंक४प्रमाण गोली बांधै प्रभातके पहर गोली १ दीजै योगराजगूगुलके खायेसे धनुपवायु जाय मृगी जाय चौरासी वायु जायँ॥

अथ धनुपवायु मृगीवायु को काथ योग-चिंतामणिमतसे।

लहसुन पीपल पीपलामूल कुचला सोंठि भारंगी पुष्करमूल चिरायता कलौंजी यह सब सममात्रा

लीजै अष्टावशेष काढ़ा करै त्रिकुटा पीस प्रतिवास दीजै पिलानेसे तेरह सन्निपात मिटैं वायु चौरासी जायँ यह योग प्रसिद्ध है ॥

अथ मधूराके लक्षण योगचिन्तामणि मतसे।

ताप होय दाह होय भ्रम होय चित्त ठिकाने नहीं रहै वचन विकल होय अतीसार तृषा होय नींद आवै नहीं लाल मुख होय मुखसे लोहू गिरै दांत काले होयँ जीभ काली होय कंठ दुखै पित्तका प्रकोप होय यह लक्षण मधूराके हैं ॥

मधूराको घासा वृन्दसे।

तुलसीके पत्र नारियलकी डाढ़ी खस कछुआकी खोपरी इलायची छोटी यह सब औषध बराबर कूट छान गोबरके रसमें घिस पिलावै मधूरा जाय ॥

पुनः मधूराको घासा।

जीरा सुई माखी गोबरके रससेती पीवै मधूरा तत्काल जाय ॥

तथा।

सफेद चन्दन जीरा सांभरका सींग पानीसेती घिसके घूंटी दीजै मधूरा जाय ॥

पुनः मधूराको घासा।

चन्दन सफेद नागरमोथा पित्तपापड़ा नेत्रवाला

सोंठि चिरायता खस यह औपध बराबर लीजै काढ़ा करि पिलावे मधूरा पित्तज्वर जाय ॥

मधूराको काढा योगचिन्तामणिके मतसे ।

कुंभेर छोटी दाख सफेदचंदन नेत्रबाला सफेदजीरा स्याहजीरा नागरमोथा पित्तपापड़ा मुलेठी यह सब औपध बराबर लेनी इनका काढ़ा आठवें हिस्सेका देना शहद गेरके मधूरा दाह मूर्च्छा वमनइत्यादि रोग जायँ॥

अथ सर्वज्वरको बडो सुदर्शनचूर्ण मनोरमासे।

त्रिकुटा त्रिफला देवदारु भारंगी हल्दी दारुहल्दी पुष्करमूल झाऊवेर कटाई छोटी वड़ी दोनों साठीकी जड़ पीपलामूल अजमोद गिलोय वच धनियां पद्माख त्रायमाण तमालपत्र मूर्वा तज जायफल नागरमोथा शालिपर्णी पृष्टिपर्णी इन्द्रयव कुडाकी छाल मुलेठी नींब पटोलपत्र वंशलोचन वायविडंग अतीस तगर नेत्रबाला खस मोरशिखा कमलगट्टा धमासा जवासा जीवक ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षीरकाकोली लवंग गिलोयसत अभ्रक यह सब सममात्रा लेना इन सबसे आधा चिरायता लेना सब कूट छान चूर्ण करना२माशा ज्वरवाले पुरुपको देना ठंढे पानीसेती सब ज्वर दाह तृपा भ्रम श्वास कास विपमज्वर अजीर्णज्वर हृदयके रोग कमलवायु पांडुरोग हलदरोग

वमन कमरशूल सर्वव्याधि मिटै जैसे सुदर्शनसे दैत्यों का नाश होय तैसे सुदर्शनचूर्णसे रोगोंका नाश होय॥

इति श्रीपद्मरंगशिष्य रामचन्द्रविरचित रामविनोदका वायु पित्त कफ ज्वर निदान उपाय वायु पित्त कफ लक्षण तेरह सन्निपातस्थिति साध्य लक्षण तेरह सन्निपातकी औषध उपाय काथगोली चूर्ण अंजन अवलेह उद्धूलन लेप प्रमुखादि सर्व प्रदोषका उपाय धनुषवायुका अपचार चौरासी वाएको काथ मसूरा उपाय वृद्धसुदर्शन चूर्ण क०नाम तृ०अ० समाप्त।

अथ चतुर्थ अधिकार अतीसार निदान।

अजीर्णसे रसविकारसे रूखेसे मदपानसे शीतल वस्तुसे चिकनी वस्तुसे मिथ्या हारसे शोकसे बहुत खेदसे अतीसार होय है ॥

अथ वातातीसारके लक्षण।

उदरबंध अफरा लोहू दस्तकी राह जाय नींद न आवै आम जाय कुरकुरीसे ये वायुअतीसारके लक्षण हैं ॥

वातातीसारको चूर्ण भेड़ग्रंथसे ।

त्रिफला नागरमोथा अतीस कुड़ाकी छाल पाढ़ सेंधा हींग यह औषध बराबर लेनी कूट गरम पानीसेती फंकी ले इस चूर्णसे वातातीसार आमविकार पेटकी पीड़ा जाय ॥

पुनः चूर्ण विन्दुसारग्रंथसे।

काला नोन हरें हींग अतीस इन्द्रयव सोंठ

यह सब औषध समभाग ले कूट छान चूर्ण करना इस चूर्णसे आमशूल अतीसार संग्रहणी जाय ॥

पुनःचूर्ण ।

कुटकी चीता पीपलामूल खुरासानी इन्द्रयव बच पाढ़ सोंठि हर्रै यह सब औषध सममात्रा ले कूट चूर्ण करै कांजीके पानीके साथ लीजै टंक २ आमशूल अतीसार अफरा दूर होय ॥

पुनः चूर्ण हारीतसे ।

अरंडकी जड गोखरू वेलगिरी मुलेठी हर्रै इन्द्रयव ये सब औषध वरावर ले कूट छान गरम जलसेती पिये तो आमशूल अफरा जाय ॥

तथा काढा हारीतसे ।

नागरमोथा पित्तपापडा नेत्रवाला बच अतीस सोंठि यह सब औषध सममात्रा ले काढा कर प्रभात पीवे तृषा ज्वर अतीसार जाय ॥

पुनः चूर्ण वृन्दसे ।

पीपलामूल पीपल यव गजपीपल वेलगिरी सोंठि राल शिलाजीत चित्रक यह सब औषध ले कूट छा-नकर चूर्ण करे पीछे टंक २ गरमपानीसे खाय तो आमातीसार वातातीसार जाय ॥

अथ पित्तातीसारके लक्षण ।

पीला नीला रुधिर हरयालिया होय तृषा मूर्च्छा

दाह होय पेटमें गरमी होय अन्न पचै नहीं ये लक्षण पित्तातीसारके कहे हैं।

पित्तातीसारकी गोली वृन्दसे।

इंद्रयव वेलगिरी धावेके फूल लोध मोचरस नागरमोथा यह सव औषध सममात्रा लीजे कूटकर गुड़में मिलाय गोली बांधे १ गोली प्रभातको १ सन्ध्याको खाय नदीके प्रवाह सरीखा अतीसार जाय॥

तथा लघुगंगाधर चूर्ण वृन्दसे।

जामुनकी गुठली कचूर अनारदाना वेलगिरी सिंघाडेके पत्ते नेत्रवाला नागरमोथा सोंठि यह सब औषध सममात्रा ले चूर्ण करे टंक २ शीतल जलसे पीवे अतीसार गरमी सव दूर होय॥

तथा वृद्धगंगाधर चूर्ण वैद्यमनोत्सवसे।

कुटकी नागरमोथा इन्द्रयव लोध सोंठि पाढ धावेके फूल मुलेठी जामुनकी गुठली त्रिफला आमकी गुठली वेलगिरी अतीस यह सव औषध वरावर लीजे कूट छान चूर्ण करे टंक २ चावलके पानीके साथ पीवे रुधिरप्रवाह मिटे सवप्रकारका अतीसार जाय॥

अन्य उपचार चरकसे।

इंद्रयव वेलगिरी अतीस धावेके फूल रसोत सोंठि

मुलेठी यह सब औषध पीस कूट छानकर चूर्ण करै साठीचावलके पानीसेती लीजै पेटके रोग जायँ सब प्रकारका अतीसार जाय ॥

तथा फंकी चरकसे ।

सोंचरनोन विड़नोन वेलगिरी मंजीठ धावेके फूल कटाई अनारदाना यह सब औषध कूट चूर्ण करिये चावलके पानीसेती फंकी लीजै अतीसार दूर होय ॥

तथा काथ वृन्दसे ।

इंद्रयव नागरमोथा अतीस सोंठि कायफल ये सब औषध सममात्रा ले काढा पीवे तो पित्तातीसार जाय॥

पुनः काथ वाग्भट्टसे।

तिन्तड़ीक अनारदाना वेलगिरी मजीठ यह सब सममात्रा ले चूर्ण करे २ टंक चूर्ण फांके चावलके पानी-सेती तो पित्तातीसार दूरि होय यह वृन्दऋषीश्वरने बताया ॥ इति पित्तातीसार चिकित्सा ॥

अथ कफातीसारकी फंकी वृन्दसारसे ।

काला नोन सेंधानोन हींग हरें वच अतीस यह सब सममात्रा ले चूर्ण करे २ टंक चूर्ण गर्मपानीसे लेइ तो कफातीसार जाय ॥

पुनः फंकी क्षीरपाणिशास्त्रसे ।

त्रिकुटा पाढ़ा वच कुटकी कूट यह सममात्रा औषध

कूटि कपड़छान करै गरम पानीसे २ टंक लेइ कफातीसार जाय ॥

तथा काथ क्षीरपाणिशास्त्रसे ।

इन्द्रयव बेलगिरी सोठ अतीस इन औषधोको धावेके फूलसे दुगुना गुड़ इनका काढ़ा करै इस काढ़ेसे कफातीसार जाय ॥ इति कफातीसारचिकित्सा ॥

अथ वातपित्तातीसारके लक्षण ।

लोहूका फेन पीला होय उदरमें दुर्गंधि होय इन दोनो लक्षणोको वातपित्तातीसार कहे ॥

वातपित्तातीसारको काथ वृन्दसे ।

नागरमोथा अतीस कायफल हरैं कुड़ाकी छाल इन्द्रयव अनारकी छाल ये सब औषध बराबर लीजै इनका काढ़ा करै चावलके पानीसे पीवे तो वातपित्तातीसार जाय ॥ इति चिकित्सा ॥

अथ पित्तश्लेष्मातीसारके लक्षण वृन्दसे ।

आम सफेद होय नीली होय लाल होय पेट भारी होय इन लक्षणोंसेकफ व॰पित्त अतीसारके लक्षण कहे॥

पित्तश्लेष्मातीसारकी फंकी वृंदसे ।

सोठि इंद्रयव नागरमोथा अतीस दारुहल्दी यह सब औषध सममात्रा लीजै काढाभाहिं शहद गेरि पीछे पिलावे तो पित्तश्लेष्मातीसार दूरहोय ॥ इति पित्त-

वातश्लेष्मातीसारको क्वाथ वृन्दसे ।

बैलगिरी इन्द्रयव पाढ़ा हींग हैं यह सममात्रा ले इनका काढ़ा करि पीवे वातश्लेष्मातीसार दूरि होय ॥ इति वातश्लेष्मातीसार चिकित्सा ॥

त्रिदोषातीसारको चूर्ण योगचिन्तामणिसे ।

बेलगिरी अनारदाना धावेकेफूल पीपल अजमोद इन सबके सम मिश्री यह चूर्ण गरमपानीसेती लीजे २ टंक त्रिदोषातीसार दूरि होय ॥ इति त्रिदोषाधिकार चिकित्सा ।

अथ आमातीसारके लक्षण ।

कमर दूखे पेट भारी होय यहलक्षण आमातीसारके हैं॥

आमातीसारकी फंकी वृन्दसे ।

नेत्रबाला नागरमोथा धनियां सोंठि बेलगिरी अतीस चावलके माड़सेती यह चूर्ण लीजे शीतल जलसे फंकी लीजे आमातीसार जाय ॥

आमनिवाहीकी फंकी सिद्धसारसे ।

पाढ़ा अजमोद सोंठि मजीठ इंद्रयव धनियां यह सब औषध बराबर लीने इनका चूर्ण करे शीतल जलसेभी फंकी फांके आमातीसार जाय ॥

आमनिवाहीको अवलेह वृन्दसे ।

त्रिकुटा पीसकर शहदमें मिलाकर चाटे आमातीसार दूर होय ॥

आमनिवाहीको उपाय वृन्दसे ।

घी मीठा तेल शहद मिश्री सोवेके बीज सोंठि ये सब औषध बराबर लीजे सब मिलाय चाटै आमनिवाही दूरि होय ॥

सर्वातीसार व आमको काथ वृन्दसे ।

सोंठि मोथा अतीस गिलोय कुटकी चिरायता ये सब औषध बराबर ले काढ़ा करै प्रभात पीवै आम सब प्रकारका जाय ॥

ज्वरातीसारको नागरादि काथ वैद्यमनोत्सवसे ।

सोंठि अतीस मोथा चिरायता गिलोय कुड़ाकी छाल ये सब औषध सममात्रा ले काढ़ा कर पीवै तौ ज्वरातीसार जाय ॥

आमातीसार व ज्वरातीसारको काथ योगसतसे ।

कुड़ाकी छाल अतीस वेलगिरी मोथा ये औषध सममात्रा ले काढ़ाकर रोगीको पिलावे आमवात लोहू वहुत दिनोंका पड़ताहोय तौ थँभजाय सर्वातीसारजाय

अथ विड्वन्धको अहिफेनादिगोला चरकसे।

अफीम२टंक लवंग१टंक जायफल जावित्री मोचरस सिंगरफ वड़की कोंपल केसर यह सब औषध१पैसेभर

लेके पोस्तके पानीसे चना प्रमाण गोली बांधै मिश्री चावलके पानीसेती १ गोली लीजे सब अतीसार जायँ॥

अथ संग्रहणी रोगकी उत्पत्ति माधवनिदानसे।

कड़वेसेती तीक्षण सेकमें लेनेसे सूखेसे शीतलसे बहुत दिनोंके अतीसारके होनेसे संग्रहणी पेदा होय ॥

अथ संग्रहणीरोगके लक्षण वृन्दसे।

उदर भारी रहे कंठ खुश्क होय भूख तृषा एक घड़ी सही न जाय छाती दूखे हृदय भारी रहै ऊपरसे सब वस्तुका मन चले खाय बहुत ये लक्षण संग्रहणीके हैं ॥

संग्रहणीको चूर्ण वृन्दसे।

धनिया मोथा नेत्रबाला अतीस सोंठि खस यह औषध बराबर लीजे इनका काढ़ा कीजे अथवा चूर्ण करे इस चूर्णसेती नाज पचिजाय संग्रहणी जाय ॥

संग्रहणीपर चित्रकादि गोली।

चित्रक पीपलामूल सज्जीखार जवाखार सोंठि मिर्च पीपल सेंधानोन हींग चाव अजमोद वच यह औषध सममात्रा लीजे दाड़िमके रससेती गोली १ टंक प्रमाण बांधे संध्या प्रभात १ गोली खाय ॥

संग्रहणीको नागरादिचूर्ण वृन्दसे।

सोंठि नागरमोथा अतीस कुड़ाकी छाल कुटकी पाढा वेलगिरी धावेके फूल रसोत यह सब औषध

बरावर लेना कूट छान चूर्ण करना चावलके पानीसेती २ टंक ले संग्रहणी पेटके रोग सब दूरि होयँ ॥

संग्रहणीकी फंकी वृन्दसे ।

त्रिकुटा नागरमोंथा चिरायता इन्द्रयव कुटकी यह सब औषध वरावर ले कूट छान चूर्ण करना गुड़के शर्वतसेती यह चूर्ण२ टंक लेना संग्रहणी गोला व पेटके सब रोग जायँ ॥

अथ संग्रहणीको क्काथ योगसतसे ।

नागरमोथा सोंठि अतीस गिलोय ये चार औषध वरावर लीजे इनका काढा करि पिलावै आमवन्ध संग्रहणी सब विकार अतीसारके मिटें ॥

संग्रहणीको मरिचादिघृत वृन्दसे ।

मिर्च पीपल पीपलामूल गजपीपल सोंचर हींग वायविंडग अजवायन समुद्रफेन जवाखार चाब कचूर वच भिलावा विड़लोन चीता दशमूल ८ टंक औषध कूटकर पानीमें भिजोयदीजै चार पहरताईं पीछे औष-धोंका रस काढ़ि लीजै पीछे घीमें मिलाय पकावै जब परिपक्व होय तब उतारिले चिकने वासनमें रखना अच्छा मुहूर्त्त देख ७ टंक नित्य खाय संग्रहणी श्वास कास जायँ ॥

संग्रहणीको सोंठिघृत वृन्दसे ।

सोंठि ८ टंक दशमूल २ टंक पानीमें भिजोवै पहर

चार पीछे काढ़िले घृत डेढ़पाव मिलावै मंद अग्निसे पकावे पीछे उतारिले उस घीको खाय तो संग्रहणी शूल अफरा पेटके सब रोग जायँ वृन्दऋषिने यह कहा है ॥

संग्रहणीको कल्याणगुड़ श्रेष्ठ ।

आवँलेका रस डेढ़सेर लीजै गुड़ पुरानो दोसेर लीजै आवँलेके जलमाहिं गेरदीजै तेल १२ पैसाभर गेरदे पीछे मंद अग्नि देके पकायदे चासनी करि नीचे लिखी औषध मिलाय नीचे उतारिलीजै । गंधक जीरा सफेद चित्रक त्रिकुटा गजपीपरी हाहूबेर अजवाइन त्रिफला सेंधानोन वायबिडंग धनियाँ चाव ये औषध २ टंक लेना पीस छानकर गुड़के रसमें मिलाइये गाढ़ा होय तव सुपारी प्रमाण नित्य खाइये दुष्ट संग्रहणी उदरके सब रोग जायँ, अरुचि कंठशोष अर्श स्वरभंग भगन्दर शूल गोला इस कल्याण गुड़से इतने रोग जायँ ॥ इति संग्रहणीचिकित्सा ॥

अथ अर्शरोगकी उत्पत्ति ।

मीठेंसे शीतलवस्तुसे चिकनीवस्तुसे खारीसे तीक्ष्ण वस्तुसे शोकसे व्यायामसे वायुसे चावलसे गरमवस्तुसे कफविकारसे क्रोधसे दिनकेसोवनेसे इतनी वस्तुसे अर्श उपजे अर्श दो प्रकारका एक खूनी और दूसरा वादी॥

वादीका लक्षण ।

हाथ पैरगुदा मुख वृषण इतनी जगहशूल होय पस-

लीमें शूल हो खाजु पीड़ा बहुत होय गुदा भारी बहुत होय अर्शरोग असाध्य है ॥

खूनीके लक्षण।

तृषा अरुचि गुदामें शूल रुधिर चले देह दुर्बल होय अतीसार होय खाजु बहुत होय गुदाके बीच मस्सा होयँ ये लक्षण खूनीके हैं ॥

बादीबवासीरका चूर्ण क्षीरपाणिसे।

सोंठि त्रिकुटा चित्रक पीपरि पीपलामूल धनियां पाढ़ गोखुरू वेलगिरी गजपीपरि अजवायन ये सब औषध ४ पल लीजै चांगेरीके रसमें काढा करै अर्श हृदयरोग पांडुरोग एते जायँ ॥

अर्शरोगको काकापनमोदक चूर्ण क्षीरपाणिसे।

त्रिफला ५पैसाभर चाव चित्रक तालीशपत्र नागकेशर इलायची छोटी १टंक खस१टंक इनको कूट छान चूर्ण करै गुड पैसा २५ भर लीजै ये औषध पीसि गुडमें मिलायदीजै पीछे गोली १ पैसाभरकी बांधे प्रभातके पहर गोली १ खाय षट्प्रकारका अर्श जाय अरुचि पांडुरोग विषमज्वर हियारोग कृमिरोग गलेकी पीडा जाय मूत्रकृच्छ्र जाय भगन्दरादिरोग जायँ ॥

अर्शरोगपर सूरणको मोदक वृन्दसे ।

जिमीकन्द चूर्ण १६ पैसाभर चित्रक ८ पैसाभर मिर्च पैसाभर त्रिफला १पैसाभर पीपलतालीसपत्र पोहकरमूल कसेला यह औषध दो २ पैसाभर लीजे इन औषधोंसे गुड दूना लीजे गोली १ पैसाभरकी बांधे प्रहरके प्रहर गोली एक खाय छःप्रकारका अर्श जाय संग्रहणी श्लीपद शूल वात पित्त कफरोग कंप श्वास कास प्लीहा प्रमेह हुचकी इतने रोग जायँ वीर्य बढे यह सूरणवटी गोली कही है ।

अर्शरोगको शुंठ्यादिचूर्ण ।

सोंठि १ टंक मिरच २टंक पीपल ३ टंक तज ४टंक इलायचीबीज ५ टंक तेजपत्र ६ टंक नागकेशर ७ टंक यह सब औषध चढ़ती चढ़ती लीजे कूट छान चूर्ण करे दिन चढते १ पैसा भर प्रभात लीजे अर्श अरुचि गोला प्लीहा मंदाग्नि श्वास कंठरोग हृदयरोग इतने रोग चूर्णसे जायँ ॥

अर्शरोगको लघुसूरण गोली वृन्दसे ।

सूरण १६ टंक मिर्च८टंक सोंठि८टंक गुड़ ३२टंक यह औषध कूट पीस गुड़में मिलाय नींबूप्रमाण गोली करे १ गोली प्रभात खाय ववासीर भगन्दर शूल इतने रोग जायँ ॥

कल्याणचूर्ण वृन्दसे ।

त्रिफला चित्रक भिलावां दारूणी ये चार औषध

सममात्रलेनी इन औषधोंसे दूना सेंधानोन बराबर चीता कायफल यह औषध हांडीबीच गेरिकै हांडीका मुख खामदीजै नीचे मंदाग्नि दीजै जब सब परिपक्क होय पीछे शीतल होय तब मुद्रा खोलनी प्रभातसमय२टंक खाइये इस कल्याण चूर्णसे दुष्टअर्श भगन्दर जायँ ॥

त्रिफलादिक्षार वृन्दसे ।

सोंठि१।टंक मिर्च२ टंक पीपल ३ टंक तज ५ टंक चाव २॥टंक बेलगिरी १ टंक नागरमोथा ३ टंक हींग २टंक मुलेठी५टंक जवाखार५टंक कुडाकी छाल २टंक पीपलामूल २ टंक राल २टंक नींबूकी छाल२टंक अजमोद४टंक सार ५ टंक पांचो नोन ५ टंक यह औषध घीमें मकरोय पीछे तेलमें मकरोवे पीछे कोरी हांडीमें सब दवाई धरिये हांडीका मुंह बांधदीजै चूल्हेके ऊपर हांडीको चढ़ाय नीचे अग्नि दीजै पहर१ स्वांग शीतल हुए उतारले यह त्रिफलादिक्षार २ टंक गौके घृतमें पिलावै दुष्ट अर्श दूरि होय छः प्रकारका पांडु संग्रहणी प्लीहा मूत्रकृच्छ्र श्वासकास सुजाक शोष अतीसार प्रमेह स्थावर जंगम विष त्रिफलादिकसे इतने रोग दूरि होयँ॥

अर्शरोगको चव्यादिघृत वृन्दसे ।

यव त्रिकुटा पीपलामूल पाढ़ा जवाखार तुम्बर बिड़नोंन सेंधानोन अजवाइन चित्रककायफल बेलगिरी यह

औषध सममात्रा ले कूट छान चूर्ण कीजे डेढ़पाव घृतमें दवाई पकावे पीछे२टंकलीजे चव्यादि घृतसे अर्श जाय।

अर्शको पिप्पल्यादि तेल वृन्दसे ।

पीपरि मुलेठी वेलगिरी वच धतुरेके बीज पोहकरमूल कूट वड़ी कटाई कचूर चित्रक देवदारु यह सब औषध सममात्रा लेके पीसे चूर्ण करे इन औषधोंसे ड्योढ़ा मीठातेल मँगाय पकावे वह तेल अर्शवालेको२ टंक दीजे अर्शरोग जाय ॥

अर्शको भिलावाकी गोली वृन्दसे ।

भिलावा दो हजार मन पानीके माहिं भिगोवे पीछे दलिके पकावे जब चौथाई आइरहे तब उतारि छानिले तिस रसमें गुड़१९सेरे फिर नीचे अग्नि दे पकावे पकिजायतब कड़ाईको नीचे उतारिये पीछे ऊपरसे ये मिलाइये त्रिकुटा हेर आँवला नागरमोथा सेंधानोन नागकेशर एकएक टंक सब औषध लीजे महीन कूट छानकर चूर्ण कर मिश्रीको पात्रमाहिं वालिये पीछे चूर्ण मिलायके वरतनमाहिं गेरिये पीछे २ टंक प्रभातसमय खाय इसके खायेसे वायुगोला कुष्ट भगंदर पांडुरोग संग्रहणी कृमि प्लीहा अतीसार कमलवायु पेटरोग जायँ ॥

खूनीबवासीरकी इलाज वृन्दसे।

माखन घृत स्याह तिल नित्य प्रभात ८ दिन खाय तौ रक्तबवासीर दूरि होय ॥

अन्य उपाय वृन्दसे।

मजीठ चन्दन सफेद तिल मोचरस पित्तपापड़ा यह औषध सममात्रा ले कूट छान चूर्ण करे बकरीके दूधसे तीन टंक खाय तो दुष्ट बवासीर दूरि होय लोहू पड़ता रह जाय ॥

अन्य उपाय भावप्रकाशसे।

सूरणका चूर्ण दो टंक दहीमें मिलायकर नित्य खाय रक्तबवासीर जाय ॥

अन्य उपाय वैद्यमनोत्सवसे।

नागकेशर एक टंक मिश्री एक टंक माखन घृत दो टंक मिलायकर खाय तो रक्तार्श दूरि होय ॥

गोली वृन्दसे।

जवाखार संभलखार सुहागा नौसादर नीलाथोथा फिटकरी यह सब औषध सममात्रा लेकर नींबूके रसमें एक पहर खरल करे चनाप्रमाण गोली बांधि १ सन्ध्या १ प्रभात खाय खटे वियाटूका परहेज राखै रक्तबवासीर दूरि होय ॥

पुनः गोली।

लहसुन सज्जी हींग निवोलीगिरी यह सममात्रा पांच पांच टंक ले वीस टंक गुड़ लीजे औषध गुड मिलाके तीन टंककी गोली बांधे प्रभात सन्ध्या एक गोली खाय इस गोलीसे छःप्रकारका अर्श जाय पेटका शूल मिटे॥

अन्य उपाय वृन्दसे।

गोभीकी तरकारी घीमें छौंकी गेहूंकी रोटीके साथ खाय तौ छः प्रकारका अर्श जाय॥

अन्य उपाय वृन्दसे।

कीकरकी फली कच्ची छायामें सुखाय पीसि कपड़छान कर धेलाभरि चूर्ण फांकिले छःप्रकारकी ववासीर जाय॥

अन्य उपाय वैद्यवल्लभसे।

सूरणका चूर्ण १६ टंक गुड़ ८टंक नित्य खाय अर्श रोग जाय॥

लेप सिद्धसारसे।

चोखी गुजराती फिटकरी संभलसार शोरा नीलाथोथा हीराकसीस कलीका चूना नौसादर यह सब औषध सममात्रा ले कपड़छान कर चूर्ण करना मनुष्यके पेशाबसे पीसि सारी गुदापै ३ दिन लेप करै अर्श जड़मूलसे जाय॥

अन्य उपाय वृन्दसे।

हल्दी थूहरके दूधमें पीसि लगावै तो अर्श जाय॥
इति खूनीबवासीर चिकित्सा॥

अथ भगंदर निदानलक्षण वृन्दसे।

ऊकडू बैठनेसे विषमासनसे लोहूविकारसे त्रिदोषसे गुरु शास्त्रके शापसे इतनी बातोंसे भगन्दर उत्पत्ति होयहै गुदाकी सीवन बीच छिद्र होय देह दुर्बल होय पेट अफरा रहै खाया पिया न पचै दाह जलन बहुत होय कास हो इतने लक्षण भगंदरके हैं॥

भगंदरको त्रिफलादिक्षार योगचिन्तामणिसे।

हड़छाल १६टंक बहेराकी छाल १६टंक आंवला १६ टंक पीपरि १६टंक गूगल ८० टंक दूधमें शोधिके गेरिये पीछे कूटकर ६ टंक नित्य खाय तौ भगंदर जाय गुल्म शोथ तुरन्त जाय॥

अन्य उपाय वृंदसे।

नागकेशर १ टंक पोस्ताकी गिरी १टंक इन दोनोंका रस काढ़िके पिलावे तो भगंदर तुरन्त जाय॥

पिप्पल्यादिगोली योगचिन्तामणिसे।

पीपरि पीपलामूल हींग सोंठि चित्रक वायविडंग इन्द्रयव जायफल भारंगीचाब वच गजपीपरि अजमोद जीरा दोनों सरसों कुटकी गूगल अतीस सँभालूके बीज यह औषध समभाग ले चूर्ण करे इन औषधोंसे दुगुना

त्रिफला मिलाय गोमूत्रमें शुद्ध करे पीछे दवाई मिलाय कढ़ाईमें गेरदे पीछे मन्दाग्निसेती पकाइये जब थोड़ा-सा पके तब ऊपरसे शहद गेरे जब पकजाय तब उतारले पीछे कोरी हांड़ीमें रखदे२ टंक प्रभात खाय तौ भगंदर दूरि होजाय अर्श पांडुरोग वातगुल्म खाज लोहू विकार कोढ़ इतने रोग जायं ॥ इति भगन्दरचिकित्सा॥

अथ ज्वराधिकार में कथितअजीर्णके पुनः सामान्य कारण ।

आहारसे अजीर्ण होय और नहीं होय लोभ करिके वहुत खाय और अगलाअन्न पचा न होय तिस ऊपर भोजन फेरि करे रातको पानी न पीवे प्यासा सोरहे इन बातोंसे अजीर्ण होय ॥

अजीर्णके लक्षण माधवनिदानसे ।

वमन होय तृपा होय शूल होय भ्रम होय अतीसार होय मूर्च्छा होय उवाकी होय दाह होय कांपनी होय नींद थोड़ी आवे श्वास होय पेट भारी वहुत होय खट्टी डकार आवे अजीर्ण इस भांति कहा है ॥

अजीर्णको चूर्ण योगचिन्तामणिमतसे ।

हड़की छाल पीपरि सोंचरनोन बच हींग यह औषध सम मात्रा लेकर चूर्ण कर २ टंक गरम पानीसेती ले अजीर्ण मूर्च्छा दूरि होय ॥

अथ मूर्च्छा अजीर्णकी फंकी योगमतसे ।

हींग १ टंक वच २ टंक बिड़नोन ३ टंक सोंठि ४ टंक जीरा ५ टंक हड़ ६ टंक पोहकरमूल ७ टंक कूट ८ टंक इन औषधोंको कूट छान चूर्ण करे प्रभात संध्या गरम पानीसे लीजे अजीर्ण मूर्च्छा वायुगोला दूरि होय॥

अजीर्णकी गोली योगचिन्तामणिसे ।

लवंग मिच हड़की छाल पीपरि पीपलामूल अनारदाना अजवाइन तिंतड़ीक सज्जीखार जवाखार टंकणखार सोंचर सेंधा सांभर चित्रक धनियां जीरा दोनों सोंठि यह सब औषध सममात्रा लेकर कपड़छान करे पीछे बिजोराके रसमें १ टंकप्रमाण गोली बांधे प्रभात गोली १ खाइये अजीर्ण मिटै ॥

अजीर्णको अग्निमुख चूर्ण वृन्दसे ।

हींग वच पीपरि सोंठि अजवाइन चित्रक कूट यह औषध चढ़ती मात्रा ले कूट छान चूर्ण करे चूर्ण गरम पानीसेती पीवे चार प्रकारका अजीर्ण प्लीहा बंधकोष्ट खाजु श्वास गोला शूल मंदाग्नि इस अग्निमुख चूर्णसेती एते रोग जायँ ॥

वृहदग्निमुख चूर्ण वृन्दसे ।

सज्जीखार जवाखार चित्रक पाढा करंजुआ कालानोन भारंगी कपेला हींग कचूर इलायची तमालपत्र पोहकरमूल दारुहल्दी निसोत

चत्र मोथा इन्द्रयव डांसर आँवला हड़ चोभचीनी अनारदाना इमलीके चियां त्रिकुटा तिल अमलबेत देवदारु अजवायन अजमोद भिलावा रासना अमलतास हाहूवेरु अतीस सहँजनेकी फली पलाश पापड़ा कालीजीरी तालमखाना लोध राल लोहकी कीटी गोमूत्रमें पीसै ३ दिनताईं अदरखके रसमें पीसै ३ दिन बिजौरेके रसमें पीसे३दिन पुट ९ देनी यह चूर्ण सुखाय गरम पानीसेती २ टंक प्रभात समय लेना अजीर्ण मंदाग्नि अष्ठीला पथरी प्लीहा वायुगोला वमन उबाकी इतने रोग मिटैं मनइच्छा भोजन करै खाया पिया सब पचै ॥

अन्य चिकित्सा ।

पीपरि धनियां पीपलामूल डांसरिया जीरे चारों वायबिड़ंग सेंधानोन तालीसपत्र गजकेशर यह सब दो पल ले सूरण मिर्च सोंठि ये औषध एक एक पल लीजै तज पत्रज इलायची छोटी ८ टंक लीजै अनारदाना पैसा १० भर लीजै अमलवेत२ पल औषध मिलाय कूट छान चूर्ण करिये नित्य २ टंक फांकिये गरम पानीसेती अथवा गोमूत्रसेती अथवा कांजीसेती वायुगोला प्लीहा कफ वायु श्वास शूल अपची अजीर्ण मन्दाग्नि अर्श भगन्दर संग्रहणी सोफ कृमि वन्धकोष्ठ इतने रोग जायँ ॥ इति अजीर्णचिकित्सा ॥

अथ कृमिउत्पत्ति कारण।

मीठे गुड़से चावलसे मैदाकी वस्तुसे गुड़ खांडसे बेरसे सिंघाडेसे इतनी वातोंसे कृमि पेटमें पड़े हैं ॥

पेटमें कृमिके लक्षण माधवनिदानसे।

ताप होय शूल होय छर्दि होय उबाकी होय खाली अतीसार होय चित्तभ्रम होय भोजनकी इच्छा नहीं होय छाती बहुत दूखे भूख रहा न जाय इतने लक्षण कृमिके हैं ॥

कृमिरोगपर चूर्ण वृन्दसे।

वायविडंग सेंधानोन जवाखार कसेला हड़की छाल यह औषध सममात्रा लेकर कपड़छान चूर्ण करे गायकी छांछसे २ टंक चूर्ण खाय तो सब कृमि जायँ ॥

अन्य चूर्ण योगचिन्तामणिसे।

वच अजमोद पलाशपापड़ा हींग कसेला निसोत ये सब औषध सममात्रा ले चूर्ण करे यह चूर्ण २टंक गोमूत्रसेती९दिन पीवे पटके कृमि दस्तमें निकल जायँ ॥

पुनः त्रिफलादिचूर्ण वृन्दसे।

त्रिफला दात्यूणी निसोत कुचिला यह औषध सम मात्रा ले चूर्ण करे गरम पानीसे पीवे कृमि पेटके जायँ ॥

कृमिउपाय राजमार्तंडसे।

गुड़का हलुवा पेटभर संध्याको खाय प्रभातके पहर इतनी वस्तु मिलायकर पीवै कसेला ६ पैसाभर दही १ सेर मिलाकर निरनो खाय कृमिरोग मिटै घृत खिचडी खाय यह सिद्ध योग पंडितोंने कहाहै॥ इति कृमिरोग चिकित्सा॥

अथ पांडुरोगोत्पत्तिनिदान माधवनिदानसे।

माटी खाय दिनमें बहुत सोवै अति तीक्ष्ण वस्तु खाय परिश्रमसे मदिरा पेशाव दस्तके रोकनेसे इतनी बातोंसे पांडुरोग उपजै वड़े वैद्योंने यह वात कहीहै॥

पांडुरोगके लक्षण माधवनिदानसे।

तृषा होय दाह होय भ्रम होय छर्दि होय अरुचि होय मुख नाक नेत्र नख जिह्वा ये पांच अंग पीले होयँ क्षय होय नेत्र पीला हो पांडुरोगके ये लक्षण हैं॥

पांडुरोगका उपाय योगमतसे।

त्रिकुटा तज मारी लोहकी कीटी वेरकी गुठली मिर्चे चूमी सोनामाखी यह औषध सममात्रा ले कूट चूर्ण कर शहदमें गोली ४ टंककी वांधनी प्रभात गोली १ खानी ऊपर गऊकी छांछ पीवनी पांडुरोग दाह उदरकी व्यथा इतने रोग दूरि होयँ॥

पांडुरोगकी फंकी शार्ङ्गधरसे ।

साठीकी जड़ हड़की छाल गिलोय दारुहल्दी यह औषध सममात्रा ले चूर्ण करे चूर्ण २ टंक गोमूत्रमें मिलाय पीवे गोमूत्रमें गूगुल माशे ३ बुरकावना पांडुरोग सोफोदर चर्मरोग इस चूर्णसे इतने रोग जायँ ॥

पांडुपर अभयादिगुटिका सिद्धिसारसे ।

हरडै पीपलामूल सोठि मिर्च तज तमालपत्र बायविडंग आंवले नागरमोथा ये सब औषध बराबर लीजे दन्ती २। टंक निसोत २ पल मिश्री १६ टंक यह औषध पीसि छान चूर्ण कीजै शहदमें मिलाय गोली टंक ३ की बांधे गोली १ प्रभातसमय खाय ऊपर शीतल पानी पीवना इस अभयादिगोलीसे पांडुरोग सोफोदर दाह कोढ़ भगन्दर मूत्रकृच्छ्र शिरःशूल मृगीरोग कृमिरोग इत्यादिक रोग जायँ विरेचन लागे, पेटके सब रोग जायँ ॥

पांडुरपर नवरसादिगुटिका रसचिन्तामणिसे ।

त्रिफला चित्रक नागरमोथा वायविडंग सोठि मिर्च पीपल यह औषध सममात्रा लेके चूर्ण करना शहदमें गोली बांधे गायके पेशाबसे पीवना अथवा छांछकेसाथ पीवना अथवा शहदमें अवलेह करकेखाय इस नवरससे

पांडुरोग सोफ हृदयके रोग भगंदर श्वास कास कोढ़ अर्श संग्रहणी मंदाग्नि शूल कृमि पेटकी पीड़ा इतने रोग जातेरहें ॥

वृद्धिनवरसादिगोली योगचिन्तामणिसे ।

त्रिफला वायविड़ंग त्रिकुटा तज तमालपत्र वंशलोचन तवाखीर मो नागकेशर सोनामक्खी छोटी इलायची सालममिश्री यह सब औषध बराबर ले पीसि छानि चूर्ण करै शहदमें मिलाय टंक ३ की गोली बांधिये इस वृद्धिनवरससे सोफ पांडु प्रमेह कमलवायु गोला श्वास कास रोग जायँ ॥

पांडुरोगकमलवायुकी चटनी सिद्धसारसे ।

इड़का चूर्ण गुड़साथ चाटे दिन ७ ताईं कमलवायु दूरि होय ।

आमवातका उपाय वृंदसे ।

त्रिफला मोथा मिर्च देवदारु कुटकी वायविड़ंग यह सब औषध बराबर लीजे कूटि छानि चूर्ण कीजे गिलोयके रसमें गोली टंक १ की करे प्रभात संध्या को गोली खाय तो कमलवायु जाय ॥

अन्य उपाय वृन्दसे ।

गधाके मेंगनेका रस तोला २ गौकी छाँ सेर मिलाय दिन ७ पीवे तो कमलवायु जाय ॥

पुनः उपाय वृन्दसे।

कुटकी टंक २ मिश्री टंक ३ ये दोनों मिलाय गर्म पानीसेती या ठंढेसे लीजै दिन७तौ कमलवायु जाय॥

कमलवायुको नास।

तूंबीकी गिरी हरी तौर कुटकी इनकी नास दे तो कमलवायु जाय॥

कमलवायुको काढा वृन्दसे।

दारुहल्दी नींबकी छाल इनका काढ़ा कीजै पीछे शहद मिलायकर पीवै दिन सात तौ कमलवायु जाय॥ इति पांडुकमलवायुचिकित्सा॥

अथ रक्तपित्तके लक्षण माधवनिदानसे।

देह दुर्बल होय व नित्यप्रति देह क्षीण होय श्वास कास होय मंदाग्नि होय तृषा बहुत होय भूंख नहीं लगै रक्तविकार होय इतने लक्षण रक्तपित्तके कहे हैं॥

रक्तपित्तकी चटनी वृन्दसे।

तालीसपत्रको महीन पीसिकर शहदमें चाटै दिन २१ तौ क्षयी रक्तपित्त जाय॥

रक्तपित्तपर चूर्ण वैद्यवल्लभसे।

शतावरि विलायती गोखुरू इन दोनोंको पीसि सूक्ष्म चूर्ण कर बकरीके दूधसे १४ दिन पीने तौ रक्तपित्तका नाश होय॥

रक्तपित्तको काढा टोडरानन्दसे।

हड़ै अडूसा मुनक्का इनको बराबर लेकर काढ़ा करै शहद मिश्री मिलायकर पीवै तौ रक्तछर्दि जाय गर्मी जलन मिटै ॥

रक्तपित्तको पेठापाक योगमतसे।

पेठा बड़ा पका लाइये पीछे ऊपरसे छीलिये बीचके बीज सब दूर करिये बाकीके खंड२ अंगुल दोके टुकडे करिये टुकड़ोंके बीच चाकूसे छेद करिये पीछे भूनिये भूनते २ जब शहतके रंग होजायँ तब थालीबीच उतारिये पीछे जितना पेठा होय तिस बराबर खांड चोखीकी चासनी करे चासनी पकजाय तब कड़ाहीको नीचे उतारै पीछे उस चासनीमें इतनी वस्तु और मिलावै सोंठि पल १ सफेद जीरा१पल मिर्च १।पल इलायची १पल तज १ पल धनियां १ पल तेजपत्र१ पल यह औषध पीसकर रक्खे चासनीमें भूना पेठा मिलाइये पीछे कौंचासे सब एक करै पीछे मिश्री युक्त कर सब दवाई मिलायदीजै पीछे उतारलीजै पीछे कोरे बर्त्तनमें रखदे तब ३ पैसाभर नित्य खाय रक्तपित्त ज्वर तृषा क्षयी बवेसी श्वास मुख नाकसेती लोहू गिरता होय इतने रोग जायँ देहीकी गर्म्मी मिटै वीर्यबँधे ॥ इति रक्तपित्तकी चिकित्सा ॥

अथ राजयक्ष्माका लक्षण माधवनिदानसे।

अंगमें ज्वर सदा रहै सोफ होय रक्त पित्त

होय कफका कोप होय पांडुवर्ण होय देह दुर्बल होय देह कँपै इतने लक्षण राजयक्ष्माके हैं ॥

राजयक्ष्माकी फंकी वृन्दसे ।

असगंध शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी कटाई दोनों गोखुरू बेलगिरी अडूसा पुष्करमूल अफीम यह औषध पीस कर बकरीके दूधमे फंकी लीजे टंक २ भर दिन२१ले राजयक्ष्मा जाय ॥

क्षयी पीनस श्वास कासपर भस्मा-कंचूर्ण वृन्दसे ।

इंद्रायणके फल ५ घीकुवाँरका पाठा५थोहरकी लकडी३॥हाथ बेंगनमारू १ कटाईके फल ५० पांचो नोन आधसेर अजवायन आधसेर यह सब औषध कूट सुखायकर अच्छी लीली हांडीमें रक्खे तिस हांडीके मुहँपर मालसा धरना मिट्टीसे खाम देनी सुखाय गज डेढ़का गढ़ा खोदना गढ़ेमें अरना भरदेनी बीचमें हांडी रखना ऊपर और अरना रख पीछे अग्नि देनी शीतल होय जब काढ़ना हांडीमेंसे काढ़ पीस लेना चूर्ण टंक२ ठंढे पानीके साथ खाना दिन ३२ तो श्वास संग्रहणी वायुगोला अफरा शूल अजीर्ण अरुचि जलोदर कफोदर वातोदर सोफोदर कठोदर इतने रोग भस्माकंचूर्णसे जाये ॥

क्षयीरोगको चूर्ण चरकसे ।

वच१२टंक खुरासानी अजवायन१२टंक नाशपाल

२०टंक अजवायन १०टंक इन सब औषधोंका चूर्ण करे आकके फूल ४०टंक मिर्च २ टंक सोंठि १ टंक लवंग १टंक पीपल२टंक यह ऊपरकी औषध जुदी जुदी कूट सुखाय ऊपरकी औषध हांडीमें गेरदे मुद्रा दे गजपुटमें दे भस्म करना पीछे शीतल हो तब काढ़ना हांडीको पीछे नीचेकी दवाई मिलायके पीस दे कपड़छान कर गर्म पानीसे यह चूर्ण डेढ़ टंक लीजे तो क्षयी श्वास कफ खांसी प्लीहा वायुगोला इतने रोग जायँ यह चूर्ण चरक ऋषिने मनुष्योंके उपकारके वास्ते बताया ॥

क्षयीका उपाय वृन्दसे।

मिश्री पीपल मुनक्का यह तीनों मिलायकर गोली टंक२की बांधिये प्रभात संध्याको एक गोली खाय तो क्षयी श्वास कफ खांसी जाय वायु सर्व जायँ ॥ इति श्वासकासस्वरभंगचिकित्सा ॥

अथ हिक्काश्वासनिदान वृन्दसे।

वायु कफसे हुचकी होयँ सो पांच प्रकारकी हैं हुचकी रोग बहुत कठोर है जो हुचकीका इलाज पुरुष न करे तो धर्मराजके घरमें वास होय ढूंडीमेंसे हुचकी वारम्वार उठें तिनका उपाय करे ॥

हुचकीका उपाय सिद्धिसारसे।

पीपल मुलेठी मिश्री यह तीनों औषध शहदके संग चाटे पांच प्रकारकी हुचकी तत्काल जायँ ॥

पुनः हुचकीका उपाय ।

पीपल आंवला सोंठि यह तीनों बराबर लेकर चूर्ण कर तीन बेर दिनमें चाटै या चार बेर तो हुचकी सब दूरि होय मदिराके पीवनेसे हुचकी जाय तमाखूके पीवनेसे,खड़िया शहद चाटै तो हुचकी दूरि होय गेरू शहद चाटै तो हुचकी दूरि होय हल्दी पीस तमाखूकी भांति हुक्केमें पीवै तो हुचकी जाय उड़दका चूर्ण हुक्केमें पीवै तो हुचकी जाय कोरा कागज़ पानीमें मथकर पीवै तो भी हुचकी जाय ॥

हुचकीका उपाय शार्ङ्गधरसे ।

उड़दका चूर्ण हल्दी पीसि चिलममें भरि पीवै तो पांच प्रकारकी हुचकी जायँ स्त्रीका दूध माखीकी बीट दोनों मिलाय नास दे तो हुचकी जाय ॥

हुचका श्वासको चूर्ण योगचिन्तामणिसे ।

काकड़ासिंगी सोंठि मिर्च पीपल हड़ बहेड़ा आवँला भारंगी कटाई पुष्करमूल सेंधव सांभर बिडनोन यह सब औषध कूट छान चूर्ण करे पीछे चूर्ण २ टंक गरम पानीसेती दीजे हुचकी ऊर्द्धश्वास क्षयी खांसी पीनस इतने रोग जायँ ॥

श्वासको काथ वाग्भट्टसे ।

कुलथी सोंठि कटाई अडूसा यह औषध बराबर ले इनका काढ़ा करे पुष्करमूलका चूर्ण बुरककर पीवे श्वास कास हुचकी जायँ ॥

श्वासको अवलेह वृन्दसे ।

मुनक्का हडे पीपल धमासा काकड़ासिंगी बहेड़ा यह औषध सममात्रा लेके २ टंक चूर्ण गर्म पानीसेती अथवा शहदमें चाटे तो हुचकी दुष्ट श्वास दूरि होय ॥

श्वासकासका अवलेह वैद्यवल्लभसे ।

त्रिकुटा काकड़ासिंगी भारंगी अकरकरा तेजबल कायफल लवंग यह औषध सममात्रा ले शहदमें प्रभात समय चाटे तो श्वास कास कफ हुचकी पीनस जायँ ॥ इति हुचकी श्वास कास चिकित्सा ॥

अथ स्वरभंगलक्षण विंदुसारसे ।

ऊंचे स्वरसे बोले नहीं मंद२बोले अल्पस्वरसे नीठ नीठ बोले कफ कण्ठविषे आयरहे देह दुर्बल होय बल क्षीण होय आलस्य बहुत होय ॥

स्वरभंगको चव्यादि चूर्ण शार्ङ्गधरसे ।

यव चित्रक त्रिकुटा अमलवेत तिंतडीक सफेद जीरा वंशलोचन तालीसपत्र यह औषध सममात्राले कूटछान चूर्ण करे तज तेजपत्र छोटीइलायची यह सब औषध

दोदो टंक लीजे सबसे दूना गुड लीजे गोली सुपारी-प्रमाण बांधे इस गोलीके खायेसे स्वरभंग श्वास पीनस इतने रोग जायँ ॥

स्वरभंगका उपाय वृन्दसे ।

पीपल बहेडा सेंधवनोन यह औषध सममात्रा ले कूट छान चूर्ण करै २ टंक चूर्ण शीतल जलसे १४ दिन ले तो स्वरभंग अच्छा होय ॥

अन्य उपाय ।

हलदी पीपल मिर्च सेंधवनोन सबके बराबर गुड इनको जलके साथ ले तो स्वरभंग जाय ॥

अन्य उपाय मनोरमासे ।

अभया दूधके साथ पीवै तो स्वरभंग जाय आंवलेका चूर्ण ३ टंक गोदुग्धमें पीवै तो भी स्वरभंग जाय ॥ इति स्वरभंगचिकित्सा ॥

अथ अरुचिके लक्षण ।

तृषा होय दाह होय सोफ होय कफ होय भोजनकी इच्छा नहीं होय शूल होय इतने अरुचिके लक्षण हैं॥

अरुचिको चूर्ण राजमार्तण्डसे ।

त्रिकुटा त्रिफला हल्दी यह औषध बराबर ले चूर्ण करै शहदसंग २ टंक चूर्ण मिलाय खाय अरुचि दूरि होय ॥

अन्य चूर्ण राजमार्तंडसे ।

मिर्च कलौंजी अनारदाना सोचरनोन जीरा मुनका

डांसरा गुड़में तथा शहदमें मिलाय २ टंक खाय तो अरुचि दूरि होय ॥

पिप्पल्यादि चूर्ण राजमार्तंडसे।

पीपरि १०० मिर्च २०० मिश्री १६ टंक इनका चूर्ण करे २ टंक प्रभात के प्रहर खाइये अरुचि दूरि होय ॥ इति अरुचिचिकित्सा ॥

अथ छर्दिका कारण माधवनिदानसे।

दुष्ट भोजनसे वासी खायेसे उद्वेगसे भयसे अजीर्णसे कृमिसे तीनप्रकारकी छर्दि कही अथवा वात पित्त कफ द्विदोष त्रिदोषसे पांच कारण कहे ॥

अथ लक्षण माधवनिदानसे।

मूर्छा तृषा श्वास छाती दूखै तलुवेमें पीडा भ्रम खेद मुख सूखे कफ होय डकारें होयँ इतने लक्षण। वायुकी कफकी छर्दिका नीला वर्ण व पीला होय और पित्त कफ होय छर्दिका के लक्षण इतने कहे हैं ॥

वातछर्दिकी फंकी राजमार्तण्डसे।

त्रिकुटा दूब यह दोनों पीसि पीवे वातछर्दि दूरि होय। विड़नोन सोंचरनोन सांभरनोन पानीसे फांके वातछर्दि दूरि होय ॥

अन्य उपाय।

घृत २ टंक सेंधानोन १ टंक तीनदिन ताईं पीवै वातकी छर्दि दूरि होय॥इति वातछर्दिकी चिकित्सा ॥

अथ पित्तछर्दिकी चिकित्सा राजमार्तण्डसे ।

सफेद चन्दन १ टंक इमिलीका रस यह दोनों इकट्ठे कर शहदसे चाटै पित्तकी छर्दि दूरि होय ॥

अन्य उपाय ।

हड़की छाल शहदसे चाटै पित्तछर्दि दूरि होय यह उत्तम इलाज अग्निऋषिने परोपकारके वास्ते बताया है॥

पित्तछर्दिको काढ़ा शार्ङ्गधरसे ।

त्रिफला नींबकी छाल पटोलपत्र गिलोय यह सब औषध सममात्रा ले काढ़ा करे शहद गेरकर पीवै पित्त वमन ज्वर खांसी श्वास छर्दि तृष्णा इतने रोग जायँ पित्तपापड़ेका क्वाथ करके पीवै तो पित्तछर्दि दूरि होय ॥ इति पित्तछर्दिचिकित्सा ॥

अथ कफछर्दिकी फंकी वृन्दसे ।

पीपरि सरसों नींबकी छाल धनियां सेंधानोन मैनफ़ल यह सब औषध सममात्रा लेकर चूर्ण करे गरम पानी सेती२टंक तीनदिन ताईं फाँकै तो कफछर्दि दूरि होय ॥

अन्य उपाय बिंदुसारसे ।

त्रिफला सोंठि वायविडंग सोनामक्खी इन औषधों-का चूर्ण शहदमें मिलायकर चाटै कफछर्दि दूरि होय॥

अन्य उपाय वृन्दसे ।

धमासा पीसि शहदमें चाटै कफछर्दि जाय ॥ इति कफछर्दि चिकित्सा ॥

अथ त्रिदोपछर्दिकी चिकित्सा योग-चिन्तामणिसे ।

पीपरि मिर्च धानकी खील इलायची इन सब औष-धोंको कूटि चूर्ण कर शहदमें चाटै तो त्रिदोपछर्दि जाय॥

अन्य उपाय सिद्धसारसे ।

हड़ त्रिकुटा धनियां जीरा सफेद जीरा स्याह इनका चूर्ण शहदमें चाटै त्रिदोप छर्दि जाय ॥

अन्य उपाय सिद्धसारसे ।

गिलोय हड़ मिर्च पीपरि ये चारों औषध चूर्ण कर शहदमें चाटै त्रिदोपछर्दि जाय ॥

अथ त्रिदोपछर्दिको एलादि चूर्ण शार्ङ्गधरसे ।

इलायची लवंग नागकेसरि वेरकी मींगी धानकी खील नागरमोथा आमका बौर अगर तगर सफेद चन्दन पीपरि मिश्री इन औषधोंका चूर्ण करिके शहदमें चाटै त्रिदोपछर्दि जाय ॥

अथ तृषाका उपाय योगमतसे ।

बड़की जड़ इलायची बड़ी कूट मिश्री मुलेठी चावलकी खील कमलगट्टा ये औषध सममात्रा ले शहदसंग गोली बांधै मुखमें रक्खै तृषा दूरि होय ॥

अन्य उपाय वृन्दसे ।

मुलेठी दाख छोटी इलायचीके बीज यह दवाई शहदमें मिलाय चाटै तो तृषा दूरि होय ॥

अन्य उपाय वैद्यजीवनसे ।

जामुनकी गुठली आमकी गुठली इन दोनोको रवाल कर शहद गेरि पीवै तृषा दूरि होय ॥ इति तृषाचिकित्सा ॥

अथ क्षुधाचिकित्सा वृन्दसे ।

सौंफ वायविडंग सैंधानोन मिर्च यह सब सममात्रा लेके कूट चूर्ण करे २ टंक गरम पानीके साथ फंकी लेवे तो भूख बहुत लगै मंदाग्नि जगे ॥

क्षुधाकी फंकी ।

हड़की छाल वायविड़ंग सोंचरनोन चित्रक सोंठि पीपरि अनारदाना अजमोद नागरमोथा अमलबेत विड़नोन जीरा दोनों अजवायन धनियां ये औषध सममात्रा ले कूट छान चूर्ण २ टंक फंकी ठण्डे पानीसे ले तो क्षुधा बहुत लगे भोजन भस्म हो ॥

क्षुधाको वड़वानल चूर्ण योगसतसे।

सोंठि पीपरि हड़ बायविडंग चीता करंजुवेके पत्ते बहेडा तज तेजपत्र इलायची जीरा सफेद जीरा काला अजमोद अजवायन डासर विड़नोन सोंचरनोन अनारदाना ये औषध वरावर लेकर दूनी मिश्री गेरि चूर्ण करे २ टंक प्रभात फंकी लीजे भूंख वहुत लगे खाया पिया भस्म होय॥

अथ मूर्च्छाका लक्षण माधवनिदानसे।

छातीमें पीड़ा हो वहुत जँभाई आवे वदन गिरापड़े चेतनाकरके रहित होय एक पासूमें पीड़ा होय नेत्र मूंदे रहें कानोंसे सुनाई न पडे जीभसे बोला न जाय॥

मूर्च्छाका निदान माधवनिदानसे।

बलहीन होय वहुत दोप उपजे दुष्ट आहारसे विरुद्ध आहारसे चिन्तासे शोचसे वायुविकारसे शीतलवस्तुसे छः प्रकारकी मूर्च्छा उपजेहै॥

मूर्च्छाकी फंकी वृन्दसे।

मिर्च खस नागकेसरि वेलगिरी यह औषध कूट छान चूर्ण करे शीतल पानीसे यह चूर्ण २ टंक फांके तौ भूंखे लगे अपस्मार मृगी दूरि होय॥

मूर्च्छाको अवलेह वृन्दसे।

मुनक्का आँवला सोंठि ये तीनों सममात्रा ले चूर्ण करे शहदके साथ चाटे मूर्च्छा मिटे॥

मूर्च्छाको क्वाथ विन्दुसारसे ।

सोंठि पीपलामूल गिलोय पुष्करमूल मुनक्का ये सब औषध बराबर ले इनका काढ़ा करै इससे सचेत होय मूर्च्छा मिटै ॥ इति मूर्च्छानिदानचिकित्सा ॥

अथ मदविभ्रमके लक्षण माधवनिदानसे ।

हुचकी आवे दाह होय शिर कँपै शूल होय श्वास होय चित्त विकल होय नींद आवे तृषा होय मूर्च्छा होय ये लक्षण मदभ्रमके हैं ॥

मदविभ्रमको चूर्ण वृन्दसे ।

सोंचरनोन जीरा सफेद जीरा काला अमलवेत डांसरिया तज इलायची छोटी मिर्च ये सब औषध सममात्रा ले इन सब औषधोंकी अर्द्धभाग मिश्री लीजे प्रभातको २ टंक खाय मदविभ्रम विकलता धांस जाय यह चूर्ण वृन्दऋषीश्वरने बनाया है ॥

मदविभ्रमका उपाय सिद्धसारसे ।

चाव सोंचर हींग सोंठि अजवायन यह औषध सममात्रा ले चूर्ण करना शीतल जलसे फांकना मद-विभ्रम रोग जाय ॥

अन्य उपाय वैद्यवल्लभसे ।

मुनक्का दाख पेडुकीका पंख दाड़िमके पत्ते मिश्री ये दवाई पीस शहदमें चाटै मदविभ्रम जाय ॥ इति मदविभ्रमचिकित्सा ॥

अथ दाहके लक्षण माधवनिदान से ।

बाहर अन्दर दाह बहुत होय उदर गरम होय मूर्च्छा होय तृषा होय ये लक्षण दाहके होतेहैं ॥

दाहको घासा वृन्दसे ।

नेत्रवाला पद्माक चन्दन नागकेसर मोथा खस पानीसे घिसकर पिलायदे दाह पीड़ा मिटै ॥

दाहका अन्य उपाय वृन्दसे ।

सफेद चन्दन पीपल मिश्री मिलाय चूर्ण करै२ टंक प्रभातके समय ठंढे पानीके साथ खाय तो दाह गरम मिटै ॥ इति दाहचिकित्सा ॥

अथ उन्मादका निदान माधव निदानसे ।

वायुसे गुरुशापसे ब्राह्मणके शापसे विशेप भांगके पीनेसे मदिरापानसे द्रव्यके गयेसे संग्रामसे विरुद्ध भोजनसे भूतप्रेतादि दोपसे इतनी बातों करके उन्माद उपजैहै ॥

उन्मादके लक्षण ।

मति विचल होय जीभसे वृथा वचन बोले हृदयशून्य होय बहुत हँसै अपनी इच्छा चले कभी गीत गावै व नाचै व रोवै व जीभ काढ़े बांकी आंखें करि देखें उन्माद बहुत होय भूतप्रेतके वचन बोले हेलाहेल करे शिथिल होय लाज बहुत करे उन्मादका यह लक्षण ॥

उन्मादको घासा योगसतसे ।

हड़ सरसों बहेड़ा आंवला सिरसके बीज करंजुवेके पत्ते देवदारु मालकांगनी हल्दी दारुहल्दी त्रिकुटा मजीठ निसोत हींग असालिया यह औषध सममात्रा ले पीस छान बकरीके पेशाबसेती घिस पीवै तो भूत प्रेत शाकिनी डाकिनी उन्माद कमान टुमन टामन मंत्र यंत्र तंत्र दोष छायादिक रोग जायँ ॥

उन्मादको त्रिकुटादिघृत वृन्दसे ।

त्रिकुटा केसर केल कन्द सज्जी देवदारु पीपलामूल खस हल्दी दारुहल्दी कपूर काकरासिंगी सांठीकी जड़ कुटकी मेनफल हड़ अतीस इलायची तगर चाव जामुनकी गुठली यह औषध सममात्रा ले चूर्ण करे चूर्ण १ पैसाभर गोमूत्र १ पैसाभर गोघृत ८ माशे मिलाय उन्मादवालेको पिलाना उन्माद भूत प्रेत अरुचि अपस्मार मृगी पिशाच मेद सब दोष जायँ ॥

उन्मादको अंजन वृन्दसे ।

त्रिकुटा हींग सेंधव वच कूट सिरसके बीज सफेद सरसों गोमूत्रसेती चनाप्रमाण गोली बांधे आंखोंमें अंजन कीजे अपस्मार उन्माद चौथिया ज्वर प्रलाप इस अंजनसे जायँ ॥

उन्माद भूत प्रेतकी धूनी वृन्दसे ।

गूगल पीपलामूल इम्रवन्द नीले वस्त्रमें बांधि धूनी दीजे उन्माद भूत प्रेत इतने दोप जायँ ॥

अथ मृगीके लक्षण माधवनिदानसे ।

हृदय गला जीभ शून्य होय मूर्च्छा होय पसेव होय नींद न आवे मति विसरे कम्प होय तृपा होय मुखमें झाग आवे आंखें फेरे मृगीके इतने लक्षण कहे हैं॥

मृगीको चूर्ण वृन्दसे ।

शालिपर्णी पृष्टिपर्णी वडी कटाई गोखुरू वेलगिरी अरणी स्योनाक कुंभेरी पाड़ल कटाई छोटी यह सव औपध सममात्रा ले चूर्ण करना शहदमें चाटना अथवा काढा कर पीवना मृगी जाय ॥

मृगीका नस्य आनन्दमालासे ।

इन्द्रायणफल २ पकेहुए कुटकी १ तोला चिरायता १ तोला इन तीनोंको कूटि कपड़में गेरि रस काढे पीछे कांचके शीशामें राखे पुरुपको तथा स्त्रीको मृगी आवे जव शीशेमेंसे फोहा कर नाकमें निचोडे ऐसे २१ दिन तथा ४१ तथा ५१ दिन जव मृगी आवे तव नास दे तो मृगी भूत प्रेत उन्माद डाकिनी शाकिनी योगिनी छायादूपण टामन राक्षसज्वर जाय ॥

मृगीको अंजन वृन्दसे ।

हीग मुलहठी मोथा वच मिर्च सिरसके बीज यह सब औषध बराबर ले कूट छान चूर्ण करै बकरीके पेशावमें पीसि गोली करै आंखोंमें अंजन करै मृगी व उन्माद जाय ॥

मृगीरोगकी बाती वृन्दसे ।

त्रिकुटाकी बछियाके पेशाबसे गोली करै पीछे अंजन करै अपस्मार सर्पविष इतने रोग जायँ ॥ इति मृगीरोगचिकित्सा ॥

अथ बंधकुष्ठके लक्षण ।

वायु कोठेमें होय उदरबंध जलकी शंका मिटै नहीं कोठा पूरा झड़े नहीं अन्नका अफरा होय खाया पिया पचै नहीं ऐसे लक्षण मिलैं तो बंधकुष्ट कहिये ॥

बंधकुष्ठमोदक योगचिन्तामणिसे ।

हड़की छाल १६ टंक बहेड़ेकी छाल १६ टंक आंवलाकी छाल १६ टंक भिलावां ६४ टंक बावची ८० टंक बायविडंग ४ पल सार १। पल निसोत ४ पल गूगुल १ पल शिलाजीत १६ टंक पुष्करमूल ४ टंक चित्रक ८ टंक इन्द्रायण १ टंक मिर्च १ टंक पीपरि १॥ टंक नागरमोथा १॥ टंक छोटी इलायची १। टंक नागकेशर १। टंक तज १। टंक पत्रज १। टंक ये औषध पीसि सूक्ष्म

चूर्ण करिये सबसे दूनी चीनी (खांड़) लीजै तिसकी चासनी करै चासनी पक्किजाय तब दवाईका चूर्ण मिलादे १ पैसाभरका लड्डू बांधे १ लड्डू प्रभात खाय १ संध्याको खाय तो बंधकुष्ठ प्लीहा वायुगोला भगन्दर जीभ तालुवा कंठरोग दूर होयँ महा गुण करताहै ॥

इति श्रीपरमहंसशिष्य रामचन्द्रविरचित रामविनोदका अतीसार-निदान लक्षण चिकित्सा १ वात पित्त कफ आमातीसार संग्रहणीरोग निदान लक्षण चिकित्सा २ अर्शरोग निदान लक्षण उपाय ३ अजीर्णलक्षण उपाय ४ कृमि लक्षण उपाय ५ पांडुरोग निदान लक्षण उपाय ६ रक्तपित्तका लक्षण ७ रक्तछर्दि ८ मुख नासिकासे रक्त गिरता होय तिसका उपाय ९ राजयक्ष्माका उपाय १० कास श्वासका लक्षण उपाय ११ स्वरभंग लक्षण उपाय १२ अरुचिका उपाय १३ छर्दिलक्षण उपाय १४ वात पित्त कफ छर्दिका उपाय १५ तृषालक्षण उपाय १६ दाह उपाय १७ उन्मादनिदान लक्षण १८ मूर्छा-निदान लक्षण १९ मृगी लक्षण उपाय २० बन्धकुष्ठ चिकित्सा २१ कथन चतुर्थ अधिकार समाप्त ।

अथ पांचवां अधिकार वातकी उत्पत्ति ।

शीतल वस्तुसे रूखे हलके अन्नसे विषम आसनसे दण्ड करनेसे परिश्रमसे खेदसे क्षीणबलसे क्षीणधातुसे

वातल वस्तुसे वातल अन्नसे शीतसे वर्षासे इतने कारणोंसे वात उपजैहै ॥

वायुके लक्षण चरकसे ।

माथेमें पीडा होय नाक आंखि दांत जीभ हृदय गला ढूँड़ी गोड़ कटि संधि उदर पसुली पीठ जंघा पोता इतनी जगह पीड़ा होय यह भेद वायुके हैं ॥

सब वायुके उपाय वृन्दसे ।

तेलका मर्दन करावे सर्वांगमें पोटली आदिकसे सेंक करावे नास दीजे स्वेद और विरेचन करावे सब प्रकारकी वायु जायँ ॥

वायुकी फंकी वृन्दसे ।

असगन्ध नेत्रवाला दशमूल सोंठि यह सब दवाई२ टंक लीजे अथवा दो टंक चूर्ण गरम पानीसे नित्य लीजे सब वायु जायँ ॥

अन्य उपाय ।

अजमोद रास्ना बहेड़ा यह सममात्रा लेके चूर्ण करे गरम पानीसे फांके सब वादी दूरि होय ॥

वातकी फंकी वृन्दसे ।

सफेद जीरा त्रिकुटा सोंचरनोन यह औषध बराबर लीजे चूर्ण करे १ टंक एकवक्त दीजे चौरासी वायु व सब अंगकी पीड़ा मिटे ॥

वातकृत शिरदर्दकी औषध वृन्दसे ।

हल्दी स्याह कूट अजमोद सोंठि मुलेठी सेंधानोन मिर्च यह सब औषध सममात्रा लेकर घृतसेती अवलेह करे प्रभातसमय २१ दिनतक खाय तो माथाकी पीड़ा मिटे ॥

वातसे अंगहीनता व पक्षाघातका उपाय वृन्दसे ।

दशमूल सोंठि नेत्रवाला रास्ना गिलोय इन औषधोंका चूर्ण करे घीके साथ चाटै तो सब वायु जायँ शूल कमरकी मिटै ॥

कटिशूलका उपाय वृन्दसे ।

एरंडकी गिरी ८ टंक भैंसके दूधमें गेरि खीर पकावै पीछे बूरा घृत युक्त करि७ दिन खाय कमरशूल संधिर की वायु जाय मस्तकरोग जायःपुष्टि होय ॥

मस्तकभ्रम व वायुका उपाय वृंदसे ।

मूसली स्याह४ पैसाभर असगन्ध४पैसेभर सतुआ सोंठि ४ पैसाभर मेदालकड़ी ४ पैसाभर पीपल २

पैसाभर खांड़१ सेर घृत१सेर गरमकर कोरी हांडीके बीचमें गेरिकर हांडी मुखबन्दकर नाजके कोठामें ७ दिन गाड़राखै इसके खायेसे मस्तकभ्रम मिटै कमरकी चोट मिटै ४ पैसाभर प्रभात खाना चाहिये ॥

पुनः शिरदर्दका उपाय वंगसेनसे ।

लवंग धमासा चिरायता मिर्च यह सब औषध सम-मात्रा लीजै एक माशाकी गोली करै १ गोली गर्म पानीसे लीजै शिरदर्द व भ्रम मिटै ॥

अकडवायुका उपाय वृन्दसे ।

त्रिकुटा वायविडंग जायफल जावित्री लवंग अकर-करा सुपेद जीरा चिरायता तज तेजपत्र छोटी इला-यची भारंगी कवाबचीनी नागकेसर यह औषध सम-मात्रा ले पुराने गुड़में मिलाय१ टंककी गोली बांधिये गर्म पानीसेती १गोली लीजै १ संध्याको खाय तो पेटशूल संधानवायु दूरि होयँ ॥

अकडवायुको गुटिका शार्ङ्गधरसे ।

नागौरीअसगन्ध २ पैसाभर दूध २ सेर दूधमें पकाय दानेदार खोया करे.२ सेर चीनी (खांड) लीजे जिसमें खोवा मिलायदे पीपल २ पैसाभर

बायविडंग२पैसाभर जीरा २ टंक चित्रक२टंक तज२ टंक तेजपत्र २ टंक नागकेसरि३टंक इलायची २ टंक जावित्री २ टंक जायफल ३ टंक दालचीनी ३टंक यह सब औपध कूट छान कर खोवेमें मिला २ पैसाभरकी गोली बांधिये प्रभात१गोली संध्याको१गोली खाय यह गोली प्रसूतवाली स्त्रीको दीजै महागुण करै कटिशूल संधिशूल वायुकी पीड़ा सब मिटै ॥

उदरविषे वायु पीडाका उपाय चरकसे ।

नींबकी छाल ७ दिन घिस घिस पीवे तो पेटकी पीडा पांसुलीकी पीड़ा कटिकी पीड़ा सब मिटै ॥

ऊर्ध्ववायुका उपाय मनोरमासे ।

तगरका मूल छांछसेती घिस घिस २१ दिन पीवै तो ऊर्ध्ववायुकी पीड़ा जाय देहमें सुख होय ॥

वायुको काथ लोलिंवराजसे ।

असगन्ध शतावरि रास्ना रेवासनके फूल इन चार औपधोंका काढ़ा करै अरंडका तेल मिलायकर पीवै वायु संधानकी पीड़ा जाय ॥

वातरक्तको काथ योगसतसे ।

अडूसा गिलोय किरमाला तीनोंको बराबर ले काढ करै पीछे अरंडका तेल मिलाय पीवै तो सब वायु दूरि होय ॥

कंपवायुका उपाय वृन्दसे ।

पारा २ टंक हरताल वुगदादी४टंक मैनशिल२टंक तज१२टंक तेजपात१२टंक छोटी इलायची १२ । टंक नागकेसरि१२टंक सब औषधोंके बराबर सोनामक्खी ले यह सब औषध कूट छान आकके दूधसेती बहुत महीन पीसै एक कपड़ा बहुत वारीक सफेद लेके यह औषध कपड़ेमें लेप करै पीछे उस कपड़ेकी वत्ती करै फिर पांच पैसाभर कडुवे तेलमें वत्ती भिगोकर वत्तीके शिरपर लोहेका तार बांधदे तारको कपड़ेमें बांधिदीजे पीछे नीचे पीतलका अथवा तांबेका बर्त्तन धरिये उस कपड़ेकी बत्तीको अग्निमें लगायके ज्यों ज्यों बत्ती जले त्यों त्यों बत्तीमेंसे तेल टपकै जब बत्ती सब जलचुकै तब बत्तीका तेल शीशीमें धरै ,पीछे गायके दूधमें तेलको मिलाय मर्दनकरै तथा एक रत्ती तेल गायके दूधमें खाइये वायुकी वस्तुको न खाय तो मस्तक हाथ पेट आदिसब शरीरका कंप जाय ॥

कंपवायुको अवलेह ।

हल्दी हींग सोंठि वच अजवाइन मिर्च पुष्करमूल सोये-

के बीज अजमोदा ये सब औषध पीस छानकर २ टंक गोघृतमें २ टंक चूर्ण मिलाय अवलेह कर चाटे तो कम्पनवायु दूरि होय ॥

पुनः कंपवायुको अवलेह वृन्दसे ।

लहसुन १ सेर पुरानी खांड़ १ सेर गायका घृत आधसेर तीनों वस्तुको मिट्टीकी श्रेष्ठ हांड़ीमें रक्खे मुंहपर ढकनी दे गेहूंके भीतर हांड़ी ७ दिन रखे आठवेंदिन काढ़ले पीछे २ पैसाभर प्रभातको नित्य एकमहीनेतक खाय तो कंपनवायु जाय सब तरहका वातरोग दूरि होय ॥

रांघन वायुका उपाय वृन्दसे ।

मूसली स्याह पीपरी असगन्ध सोंठि सिंहाड़ा गोंद बेलगिरी मिश्री यह औषध १ पैसाभर लीजे इन औषधोंको कूट चूर्ण करे २ पैसाभर चूर्ण पैसाभर गायके घृतसे मिलाय अवलेह कर खाय रोग जाय ॥

संधान वायुका उपाय आत्रेयसे ।

आंवले २ पैसाभर पानीमें भिगोय राखे पीछे प्रभात समय रस काढ़कर पीवे १४ दिनतक मूंगकी दाल रोटी खाय सन्धानवायु कब्जवायु रुधिर विकार इतने रोग जायँ ॥

ग्रंथि वायुका उपाय मनोरमासे ।

हलदी सोंठि पीपरि सरजरस अरंडका तेल गरम

करके गांठिके ऊपर ७ दिन लगावे गांठि दूरिहोय ॥ इति वायुचिकित्सा ॥

अथ वातरक्तनिदान वृन्दसे ।

शरीर विषे आलस्य होय शरीर विकल रहे चित्त उदास रहै गोड़ा सांथल पेट गला हाथ पैर इतनी जगह शून्यता होय मंडल चकत्ता होय इतने लक्षण मिले तो वातरक्त का दोष जानिये ॥

वातरक्तको चूर्ण वृन्दसे ।

गूगुल गिलोयका सत २ टंक दोनोंके चूर्णको १ महीना ताईं फंकी लीजै अलोना भोजन करै नोन हींग तेल यह नहीं खाना वातरक्त दूरि होजाय ॥

अन्य उपाय वातरक्तका वैद्यविनोदसे ।

गिलोय धनियां सोंठि अरंडकी छाल यह औषध कूटकर पुडिया ६ टंककी बांधे एक पुडिया प्रभात एक संध्या को गरमपानीसे १ मासताईं खाय वातरक्तका नाश होय ॥

वातरक्तका काढा वैद्य मनोत्सवसे ।

त्रिफला नींव मजीठ कुटकी वच इन्द्रायण दारुहल्दी यह सब औषध सममात्रा ले क्वाथ करना वातरक्तवाले पुरुषको १४ दिनतक पिलावे तो वातरक्त जाय ॥

वातरक्तको चूर्ण वृन्दसे ।

मुलेठी सारिवा राल जामुनकी छाल इन औषधोंका चूर्ण करिये अरण्डके तेलसों पीवै वातरक्त दूर होय ॥

वातरक्तको उपाय योगसतसे ।

शतावरि देवदारु गिलोय अरंडोली अरंडकी छाल साठीकी जड़ पीपर असगन्ध पीपलामूल सोंठि चिरायता कुलींजन यह औषध एक २ पल लीजै पीछे २ टंक गोघृतसे खाय वातरक्त जाय ॥

वातरक्तको अमृतादिगूगुल चरकसे ।

गिलोय ५६ टंक गूगुल १२८टंक त्रिफला२००टंक इनका महीन चूर्ण करिके इन औषधोंसे तिगुना पानी लीजै,लोहेकी कड़ाहीमें रख नीचे आंच दीजै चौथे हिस्सेका काढ़ा आय रहै तब कड़ाही चूल्हेसे उतारि पानीको छान लीजै पीछे उसमें दात्यूणी त्रिकुटा त्रिफला वायबिडंग तज गिलोय निसोत यह औषध चारि चारि टंक ले चूर्णकर कड़ाहीमें मिलायदे तब कड़ाही उतारि कोरे बरतनमें रखदे २ टंक औषध नित्य खाय तो वातरक्त दुष्टव्रण प्रमेह भगन्दर आमवात सोफ इतने रोग जायँ ॥

वातरक्तको सिंहनादगूगुल योग-चिन्तामणिसे।

त्रिफला वायविडंग शिलाजीत रास्ना चित्रक सोंठि शतावरि दात्यूणी पीपलामूल देवदारु गूगुल गिलोय दारुहल्दी साठिकी जड बड़ी इलायची गजपीपल यह सब औषध एक एक पल लीजै इन सब औषधोंके बराबर गूगुल लीजै सबको कूट छानकर २०सेर पानीमें चार प्रहर भिजोयराखै पीछे कड़ाहीमें गेरि चढ़ाइदे जब ढाई सेर पानी रहै तब उतारि छानके खाय तो वातरक्त पित्त कोढ़ पांडु सोफोदर नाभिदर्द इतने रोग मिटे॥

शून्यवहरी व मंडल व कोढरोगोंका स्वर्णक्षीर रस योगचिन्तामणिसे।

चोप ८० टंक दोदो पैसेभरके टुकडे कर छाछमें १ घडी उबाल गरम पानीसे धोय फिर दूधमें १ घडी औटावे पीछे गरम पानीसे धोवे चौकेकी लकड़ियोको धूपमें सुखाय ३२टंक लीजे मिर्च और चौकेकी लकड़ी दोनों पीसि काजलसा महीन चूर्ण करिये पारेकी राख १६ टंक मिलायकर अथवा सिंदूररस मिलायदे ताजे जलसेती १ टंक चूर्ण२१ दिनतक प्रभातको लीजै पथ्य चावरु मोठकी दाल दे तो शून्यवहरी मंडल तथा कोढरोग जाय॥

गलितकोढकी गोली वृन्दसे।

वायविडंग १६ टंक हड़ोंकी छाल २६ टंक आंवले २० टंक निसोत४८टंक यह सब औषध कूट छानकर दूने गुड़में मिलाय सुपारीप्रमाण गोली करे गरम पानीसे खाय तो गलितकुष्ट दूरि होय ॥

सफेदकोढको लेप सिद्धसागरसे।

अच्छी मलंगी २ टंक पवांड़बीज ९ टंक बकुची ९ टंक इनका चूर्ण कर ताजे पानीसे यह चूर्ण २ टंक दीजै मंडलके ऊपर पवांडजड़ घिस लेप करे दूध चावल खीर खांड़के भोजन दीजै हींग नोन खटाई इतनी वस्तु १४ दिनतक नहीं दे सफेदकुष्ट जाय ॥

चांठाका उपाय सारसंग्रहसे।

हडोंकी छाल हल्दी यह दोनों बराबर ले भांगरेके रसमें रगड़ चांठाके ऊपर लेप करे लसोड़ेके पत्ते भांगरेके रसमें पीसकर ऊपर ७ दिनतक बांधिये सफेदकोढ़ दूरि हो ॥

सफेद कोढका उपाय सारसंग्रहसे।

आककी जड़ छांछियागन्धक हरताल कुटकी हल्दी यह सब औषध सममात्रा ले गोमूत्रमें पीसकर ७ दिन लेप करे चांठा जाय ॥

सफेद चांठा का उपाय अमृतसागरसे।

नौसादर चिरमठी पलाशपापडा ये औषध टंकटंक

लीजै अफीम ४ टंक इन औषधोंको नींबकी छालके रसमें पीस गोली बांधे ७ दिन चांठाके ऊपर लेप करै तथा १० दिन अलोना खाय सफेद चांठा दाद चकंदा जाय ॥

सफेद चांठाका लेप वृन्दसे ।

भिलावां२४ एक सेर भैंसके दूधमें उबाले जब खद-बदाय तब सोठि मिर्च पीपरी हड़ बहेड़ा आंवला एकर टंक महीन पीसकर मिलाकर गरम गरम ४वार लेप करै सफेद खाल उतर पड़े देह मिले सब चांठा तुरंत मिटैं ॥

सफेद कोढको चूर्ण वृन्दसे ।

बावची चित्रक भंगरा असगन्ध भिलावां यह औषध सममात्रा ले कूट छानकर चूर्ण करै प्रभात समय १टंक चूर्ण ठंढे पानीसेती लीजै १ पहर धूपमें बैठे २७ दिन-तक औषधका सेवन करै जब सफेद चांठा लाल होजायँ तब जानिये कि अच्छा भया ॥

गलितकोढ शून्यवहरीपर हरताल योगचिन्तामणिसे ।

बुगदादी हरताल १६ टंक चूर्ण कर कांजीके जलमें ४ पहर राखिये पीछे हरतालके चूर्णकी पोटली बांधकर दोलकयंत्र कर पेठेके रस २ सेरमें औटावनी नीचे तेज अग्नि देकर पेठेका रस सब जलादे पीछे मीठे तेलमें दो-लन करि औटावना फिर त्रिफलेके रसमें १ पहर

औटावना फिर गोमूत्रमें १ पहर औटावना यह हरताल निर्विष हुए पीछे ढाककी राख लाइये हांडीके वीच हरतालकी टिकियाधरिये ऊपर ढाककी राख और दीजे हांडीके ऊपर ढँकनी दीजिये हांडीके मुंहमें कपडा मिट्टीकी खाम दीजे पीछे धूपमें सुखाय चार पहरकी आंच देकर इसभांति हरताल कमाइ पीछे हरताल कचे पक्केकी परीक्षा लीजे लोहा खूब गरम कर चावल २ वरावर हरतालमें धरिये धुआं नहीं निकले तो पका और धुआं निकलै तो कच्चा रहा यदि ऐसा होय तौ फिर ढाककी राखमें गरम करे खूब शुद्ध होय तब १ रत्ती हरताल ४ माशे खांडमें ९६ दिन तक देना पथ्य चनेकी रोटी नोन तेल घृत इन वस्तुओंका परहेज रक्खै तो शून्यवहरी गलित कोढ रुधिरविकार वीमचीदाद इतने रोग जायँ ॥

गलितकोढकी अन्य विधि योगचिन्तामणिसे ।

हरताल बुगदादी २ पेसाभर कांजीकी पुट २ देके धूपमें सुखाइये और १ पुट जँभीरीकी देनी पहर एक पीछे वकरीके दूधसेती हरतालकी टिकिया वांधिये सुखाइये पीछे हांडीके वीच ढाककी राख विछाय हरतालकी टिकिया धरिये ऊपरसे राख और विछाइये

पीछे हांड़ीके मुखपै कपड़ा ले गाढ़ी मुद्रा दे धूपमें सुखाय पीछे अरने उपलेकी गजपुटमें आंच दीजै शीतल होय तब काढ़ले लोहा गरम कर२ चावलभर हरताल गरम लोहेपर गेरदे जो धुआं नहीं निकले तौ शुद्ध है और धुआं निकले तौ अशुद्ध है यदि अशुद्धहो तो फिर ढाककी राखमें शुद्ध करिये ४९ दिन तक सेवन करे पथ्य चावल चना मोठ खानेको दीजै खारा खट्टा नहीं दीजै सब कोढ दूरि होयँ शरीर सोनेकासा होय जो कदाचित हरताल गरमी करै तौ मिश्रीका शर्बत पिलाइये रुधिरविकार रहने न पावै ॥

खाजुकोढको लेप वैद्यमनोरमासे ।

पलासपापड़ा पीसके नींबूके रससेती लेप करनेसे खुजलीकी हानि होय ॥

पुनः खुजुलीकोढको लेप मनोरमासे ।

पवांडबीज २ पैसाभर मेहँदी ३ पैसाभर कड़ुवा तेल सात पैसाभर आकका दूध ४ पैसाभर गोमूत्र सेरभर सब चीजें मिलाय७ दिनतक धूपमें रखदे शरीरमें मर्दन करे खाजुकोढ़ दाद जायँ ॥यह सिद्धयोगकहाहै ॥

उरुस्तम्भके लक्षण माधवनिदानसे ।

रोम खड़े रहें मुखमें उवाकी रहै जांघ पैरमें शूल होय

कंठ विपे कफ होय ऊरुस्तम्भके इतने लक्षण कहे हैं॥

अथ ऊरुस्तम्भको काथ वृन्दसे ।

पीपरि सोंठि गुग्गल शिलाजीत गोमूत्रमें यह दवाई पीस पिलावे अथवा दशमूलका काढ़ा पिलावे ऊरुस्तम्भ दूरि होय ॥

अथ ऊरुस्तम्भको अवलेह वृन्दसे ।

त्रिफला कुटकी चाव पीपलामूल इनका चूर्ण सम मात्रा ले शहदमें चाटे ऊरुस्तम्भ रोग दूरि होय ॥

ऊरुस्तम्भको चूर्ण वैद्यमनोरमासे ।

भिलावा दशमूल देवदारु सोंठि हड़ गिलोय यह सब औपध वरावर ले चूर्ण कर ताजे पानीसे पिलाइये ऊरुस्तम्भ रोग जाय ॥

पुनः ऊरुस्तम्भको चूर्ण शार्ङ्गधरसे ।

पीपरि शहद संग चाटै ऊरुस्तम्भ जाय अथवा गुड़में मिलाय पीपरि खाय ऊरुस्तम्भ जाय इति ऊरुस्तम्भचिकित्सा ॥

अथ आमवातके लक्षण माधवनिदानसे ।

दुष्ट भोजनसे मन्दाग्निसे चिकने भोजनसे वहुत भोजनसे चलनेसे वायु विकारसे मैदाकी वस्तुसे आमवात उपजै ॥

पुनः लक्षण।

हाथ पैर मस्तक गोड़ इतनी जगह सूजन होय दाह होय शूल होय पसेव होय छर्दि होय भ्रम होय इतने लक्षण आमवातके कहे हैं ॥

अथ आमवातको चूर्ण वृन्दसे।

हड़का चूर्ण २ टंक अरंड तेलमें नित्य दीजे७ दिन तक आमवात दूरि होय ॥

पुनः पंचकोल चूर्ण वृन्दसे।

सतुवासोंठि कांजीके साथ प्रभात पिलाइये आमवात जाय ॥

पुनःपंचकोल चूर्ण वृन्दसे।

पीपरि पीपलामूल चाव चित्रक सोंठि इनको सममात्रा ले चूर्ण करिये गरम पानीसे दे आमवात दूरि होय॥

अथ आमवातको व कोढ व कुब्जको व पंगुको रसोतपिंड वृन्दसे।

लहसुनकी गिरी१६पल काला तिल८पल ये दोनों गौकी छाछमें पीसिये चार पहर भिगोय रखिये पीछे चूर्ण धूपमें सुखाय इतनी वस्तु और मिलाइये त्रिकुटा चाव चित्रक धनियां अजमोद इलायची गजपीपरि पीपलामूल तज जीरा डांसरा इतने औषध एक एक पल लीजे मिश्री ८ पल लीजे इन सबको पीस

चूर्ण कर पिलाइये एरंड तेलके साथ दीजे अथवा मदिरासे अथवा गरम पानीसे दीजे गुदाकी पीडा योनिपीडा हृदयके रोग संधानपीडा आमवात कोढ़ रसोत पिंड इतने रोगजायँ ॥

अथ आमवातको चूर्ण वृन्दसे।

हडै सोंठि अजवायन इनका चूर्ण गोतक्रमें पीवना आमवात दूरि होय ॥

आमवातपर क्वाथ।

गिलोयका रस एरंडकी छाल देवदारु अमलतास चित्रक इनका काढ़ा दिनमें २ वार दे तो आमवात कटिपीड़ा पसुरीकी पीड़ा इतने रोग जायँ ॥ इति आमवायुचिकित्सा ॥

अथ शूलनिदान माधवनिदानसे।

स्त्री संगतिसे वहुत पानीपीनेसे रातके जागनेसे सूखा अन्न खानेसे शीतसे शोकसे वीर्यके वँधेसे पेशाबके बँधेसे वायुके विशेषसे मोहके होनेसे धातुकी क्षीणतासे॥

आमशूल व वायुशूलका लक्षण।

कफ वायुके दोषसे अंग विषे शूल उठे श्वास कास होय मूर्च्छा होय ववाकी होय वहुत तृषा होय ॥

शूलका उपाय वृन्दसे।

सोंठि १। पैसाभर कालानोन १। पैसाभर हींग २ माशे इनका चूर्ण गरम पानीसे दीजे वायुशूल मिटै ॥

अथ वायुशूलकी फंकी वृन्दसे।

त्रिकुटा सेंधानोन हींग सोंचरनोन अनारदाना यह बराबर ले चूर्ण करे शूलवायुवाले को दीजे शूलपीड़ा तुरंत जाय ॥

शूलको काढा शार्ङ्गधरसे।

त्रिकुटा हींग अरंडजड़ कटाइ दोनों गोखुरू साठी-की जड़ इनका क्वाथ कीजे पीछे पिलावे शूल मिटे ॥

शूलको चूर्ण टोडरानन्दसे।

अरंडजड़सेंधानोन विड़नोन कचनोन पोहकरमूल हींग यवाखार वायविड़ंग अजवाइन ये औषध सममात्रा लीजे इनसे तिगुणी निसोत लीजे चूर्ण करे२तथा२ टंक एरंडके तेल संग लीजे अथवा गरम पानीसे लीजे शूल वायुगोला प्लीहा इतने रोग जायँ ॥

वायुशूलको क्वाथ वृन्दसे।

हींग सोंठि अरंडजड़ सोंचरनोन ये चार औषध सममात्रा ले इनका काढ़ा करे वायुशूल इस काढ़ेसे तुरंत जाय ॥ इति वायुशूलचिकित्सा ॥

अथ पित्तशूलचिकित्सा।

त्रिफला कूट अमलतास मुरेठी इनका चूर्ण शहद-के साथ चाटे तो पित्तशूल दूरि होय ॥

पित्तशूलपर क्वाथ।

प्रभात समय आँवलेका रस व मिश्री पीवै पित्तशूल जाय ॥

अथ कफशूलचिकित्सा वृन्दसे।

सैंधानोन विड़नोन सोंचरनोन पीपलामूल चाव सोंठि चित्रक हींग यह औषध सममात्रा ले चूर्ण करै गरम पानीसे चूर्ण२टंक खाय कफशूल स्वाकी तुरंत मिटै॥

त्रिदोषको चूर्ण वृन्दसे।

हींग अरंडकी छाल पोहकरमूल इनका चूर्ण गरम पानीसे दीजे त्रिदोषशूल जाय ॥

सर्व शूलको चूर्ण।

सोंठि अरंडकी छाल पोहकरमूल यह औषध सम मात्रा ले चूर्ण करै६माशे गरमपानीसे ले हियाकी शूल कटिशूल पसवाड़ेकी शूल गुल्म एती शूल दूरि होयँ ॥

सर्व शूलको लेप योगचिंतामणिसे।

धतूरेका फल कुडाकी छाल कांजीके पानीसेती गरम कर नाभिपर लेप करे पेटकी शूल मिटै ॥

शूलको अन्य लेप वैद्यमनोत्सवसे।

सोंठि हींग पोहकरमूल सांभरका सींग यह औषध गोमूत्रमें पीसि पेटपै लेपकरे पेटका शूल दूर होय ॥

अन्य लेप योगचिंतामणिसे।

गुजराती एलुवा हलदी फिटकरी सुहागा विषखपरा खपरिया नवसादर अरंडके बीज यह औषधें कूट पीस पानीमें गरम कर पेटपै लेप करै सब शूल नाश होयँ॥

अथ वायुगोलाको निदान माधवनिदानसे।

दुष्ट वायुमें दुष्ट आहारमें गोला पांच जगह होय है गांठ हृदय नाभि पांसुली कटिमें दाहिनी तरफ इतनी जगह बेदना होय ॥

वायुगोलाका लक्षण माधवनिदानसे।

ताप होय तृपा होय शूल होय कफ होय अरुचि होय दाह होय ये लक्षण वायुगोलाके कहे हैं ॥

वायुगोलाको चूर्ण वृन्दसे।

चित्रक हींग हड़ सेंधानोन अमलवेत यवाखार अजवाइन यह सममात्रा ले चूर्ण करे२टंक प्रभातके समय गरम पानीसे दीजै ७ दिनतक तो वायुगोला शूल तुरंत जाय ॥

वायुगोलाकी गुटिका वृन्दसे ।

साठीकी जड़ पोहकरमूल दात्यूणी चित्रक कुटेली निसोत सोंठि वच यह औषध एक एक पल लीजै अमलवेत अजवाइन यवाखार जीरा धनियां मिर्च पीपरि हड़ इतनी औषधें दो२पल लीजे यह सब पीसि छान चूर्ण कर नींबूके रसकी पुट दे गोली १टंककी बांधिये प्रभात संध्या१गोली गोमूत्रसे खाय दूध घृत ऊपरसे पिलावे तो सन्निपात जाय रक्तगुल्म स्त्रीके होय । गरम पानीसे देना ॥

हिंग्वादि चूर्ण योगचिन्तामणिसे ।

भूनी हींग चाब सुहागा यवाखार अमलवेत त्रिकुटा सोंचरनोन डांसरा सेंधानोन अनारदाना हाहूबेर पीपलामूल अजवायन समुद्रफेन सफेदजीरा साठीकी जड पाढ़ा हड़ पुष्करमूल जवासा यह औषधें सम मात्रा लेकर कपडछान करे बिजोराके रसकी पुट दीजै गरम पानीसे यह चूर्ण २ टंक लीजै गुल्म अर्श संग्रहणीका दोष मिटै ॥ इतिवायुगोला चिकित्सा ॥

अथ हृदयरोगनिदान माधवनिदानसे ।

जिस पुरुषके अग्नि अबल होय और पचे नहीं अपक्व रस रहै वायु कफसे पेट बंध होय उसके हृदयरोग उपजे ॥

हृदयरोगका लक्षण वृन्दसे ।

तृषा होय दाह होय भ्रम होय शोकहोय अरुचि होय देह भारीहोय छाती हिया भारी होय, ये लक्षण हैं॥

हृदयरोगको अवलेह वृन्दसे ।

पुष्करमूल २ टंक चूर्ण कर शहदमें मिलाय ९ दिन चाटै हृदय रोग जाय ॥

चूर्ण मनोरमासे ।

सोंठि चित्रक इन दोनोंको चूर्ण करे गरम पानीसेती २ टंक दीजै ७ दिनतक हृदयरोग तुरंत दूरि होय

हिंगुपंचककी गोली वृंदसे।

हींग पीपरि नोन अनारदाना सोंठि यह सब औषध सममात्रा ले चूर्ण कर नीबूके रसमें पीस गोली छोटे बेर प्रमाण बांधै प्रभातके पहर १ गोली गरम पानीसे खाय हृदयरोग श्वास कास दूरि होयँ ॥ इति हृदयरोग चिकित्सा ॥

अथ मूत्रकृच्छ्रको निदान माधवनिदानसे।

व्यायामसे तीक्ष्ण वस्तुसे रूखे अन्नसे मदिरासे मच्छीके मांससे अजीर्णसे मलविकारसे मैदाकी चीजसे नाटकसे खेदसे इनसे मूत्रकृच्छ्रकी उत्पत्ति होयहै ॥

मूत्रकृच्छ्रके लक्षण माधवनिदानसे।

वात पित्त कोप करे पेटके ऊपर भार होय पेशाबका मार्ग बहुत दुखता होय इन्द्रीशूल होय गुदाका द्वार बंद होय ॥

मूत्रकृच्छ्रका उपाय वृन्दसे।

जिस पुरुषके मूत्रकृच्छ्र होय या मूत्र टपक टपक कष्टसे आता होय उस पुरुषको मिश्रीका शर्बत पिलाइये और शोरेको नाभिमें भरदे मूत्रकृच्छ्र छूटे ॥

अन्य उपाय वाग्भट्टसे।

गुड़ हल्दी दोनों बराबर लीजै कांजीसेती पीवे तो मूत्र तुरन्त छूटे ॥

अन्य उपाय।

शोरा २ टंक यवाखार २ टंक गोमूत्रसे पीवै ३ दिन मूत्रबंध छूटै ॥

अन्य उपाय वृन्दसे।

पेठेकी गिरी गौका दूध मिश्री यह तीनोंको मिलाकर पीवै मूत्रशंका दूर होय।

अन्य उपाय वैद्यवल्लभसे।

वायविडंगका चूर्ण कर शहदमें मिलाय चाटै दिनमें २ वार मूत्रधारा छूटै ॥

मूत्रबंधको लेप वैद्यवल्लभसे।

भीमसेनी कपूर २ रत्ती पानीसेती पीसि वत्ती करै इन्द्रीके छिद्रमें वाती रखिये पेशाब तुरन्त छूटै ॥

अन्य उपाय हितोपदेशसे।

टेसूके फूल स्वाल तुहाता डूंडोंके नीचे बांधै मूत्रबंध छूटै ॥

तथा अन्य उपाय हितोपदेशसे।

बिनौलेकी मींगी २ टंक गौके दूधमें पीसि पीवै तौ मूत्रबंध छूटै ॥

अन्यउपाय योगसतसे।

इलायची पाषाणभेद शिलाजीत पीपरि यह औषध बराबर ले चूर्ण करै यह चूर्ण चावलके धोवनसे पीवै वा गुड़के पागमें मिलाय चाटै मूत्रकृच्छ्र दूरि होय

अन्य उपाय योगसतसे।

हड़की छाल गोखुरू किरमाला पाषाणभेद अडूसा धमासा यह सब औषध सममात्रा ले इनका काढ़ा करै शहद मिलाय पीवै अथवा मिश्री मिलाय पीवै तो मूत्रबंध तुरन्त छुटै ॥ इति मूत्रबंधचिकित्सा ॥

वारम्वार मूत्रआवै तिसका उपाय हितोपदेशसे ।

मिश्री ३२ टक सोंठि २ पलको चूर्णकर चार बार फंकी लीजै मूत्ररोग मिटै ॥

अन्य उपाय ।

सोहेके बीज ४ पल मैदालकड़ी ४ पल मिश्री४पल गोंद ३ पल घृतसे ४ पलके लड्डू बांधि खायेसे मूत्ररोग दूरि होय ॥

मूत्राघातका उपाय वृन्दसे ।

त्रिफलाके क्वाथमे मिश्री मिलाय पिलावै मूत्रबन्ध तुरन्त मिटै ॥

अन्य उपाय ।

गोखुरू आँवला इनका क्वाथ करै गुड़ गेरिकै पीवै तौ मूत्रकृच्छ्र मिटै ॥

पथरीयुक्त मूत्रकृच्छ्रका उपाय वृन्दसे ।

अरनी सोंठि सहँजन गोखुरू पाषाणभेद अमल-

तास बरनेकी छाल इन औषधोंका काढ़ा करे ऊपर नोन बुरकाय पिळावे मूत्रकृच्छ्र पथरी मिटे इन्द्रीकी चसक जाय ॥

अन्य उपाय वृन्दसे ।

बरनेकी छालका काढ़ा करे गुड़के साथ पीवे वायु पथरी जाय ॥

अन्य उपाय वृन्दसे ।

कुटकी हड़ नागरमोथा पटोलपत्र केलाकन्द अडूसा चन्दन दाख यवाखार इन औषधोंसे दूनी मिश्री लीजे चूर्ण करिये पीछे दो टंक ठंढे पानीसे लीजे मूत्रबन्ध पथरी जाय ॥

अन्य उपाय देवदत्तसे ।

पित्तपापड़ा १६ टंक गायकी छांछसे १४ दिन पीवे इस औषधिसे पथरी निकल पड़े ॥

अन्य उपाय वृन्दसे ।

एरंडकी जड़ ३ टंक२दिन घृतसे पान करे पथरी जाय ॥

अन्य उपाय हितोपदेशसे।

मूली धूपमें सुखाय पीवे मूत्रकृच्छ्र पथरी जाय ॥

अन्य पथरीका उपाय।

देवदारु सोंचरनोन तिलोंका खार सतुआसोंठि

इनका चूर्ण कर दूधसे २० दिन पीवे पथरी जाय ॥ इति पथरीचिकित्सा ॥

अथ प्रमेहनिदान माधवनिदानसे ।

मदिरासे मांससे कफके विकारसे क्लेशसे उष्णतासे पित्तके क्षीण होनेसे मज्जासे रस आदिकसे बीस प्रमेह उपजैहैं ॥

बीसों प्रमेहोंके लक्षण माधवनिदानसे ।

दांत जिस पुरुषके मैले रहे हाथ पैरमें जलन रहे देह सुस्त और आलस्य आवे धातु तुरंत खलास होय बंधेज थोड़ा होय तृषा थोड़ी होय इतनी बातें प्रमेहकी कही हैं ॥

बीसों प्रमेहोंके उपजनेका कारण ।

बहुत बैठनेसे बहुत सोनेसे दाहसे मेहके पानीसे रससे अन्नसे गुडसे पकवानसे मैदाकी वस्तुसे इतनी बातोंसे प्रमेह उपजै ॥

बीस प्रमेहोंमें दश प्रमेह कफके साध्य हैं, छः प्रमेह पित्तके कष्टसाध्य हैं, चार प्रमेह वायुके असाध्य हैं उन बीसों प्रमेहोंके जुदे जुदे लक्षण कहते हैं ॥

उदकप्रमेहके लक्षण ।

पेशाब निर्मल होय बहुत होय सफेद होय पेशाबमें दुर्गंधि नहीं होय पानीसरीखा पेशाब होय उसे उदकप्रमेह कहेहैं ॥ १ ॥

इक्षुप्रमेहके लक्षण ।

ईखसा मीठा पेशाव होय सो इक्षुप्रमेह है ॥ २ ॥

सान्द्रप्रमेहके लक्षण ।

कपड़ा पेशावसे भरा रहै वा धातुसे भरा रहै धोतीमें शरदी रहा करै तिसको सान्द्रप्रमेह कहिये ॥ ३ ॥

सुराप्रमेहका लक्षण ।

सुरा सरीखा पेशाव ऊपरसेती निर्मल नीचे गोलासा जाबैठे तिसको सुराप्रमेह कहिये ॥ ४ ॥

पिष्टप्रमेहका लक्षण ।

पिष्ट प्रमेहसे छेदमें कांटा होय आटाके रंग सरीखा सफेदसा पेशाव होय सो पिष्टप्रमेह कहिये ॥ ५ ॥

शुक्रप्रमेहका लक्षण ।

धातुसरीखा रंग पेशावका हो तिसको शुक्रप्रमेह कहिये ॥ ६ ॥

सिकताप्रमेहका लक्षण ।

पेशावकी राह तनक २ रुधिर निकले व धातु निकले तिसके तई सिकताप्रमेह कहिये ॥ ७ ॥

शीतप्रमेहका लक्षण ।

शीत प्रमेहवाले वारम्वार पेशाव करें मीठा पेशाब होय अतिशीतल पेशाव होय तिसको शीतप्रमेह कहिये ॥ ८ ॥

शनैःप्रमेहका लक्षण।

बारम्बार टपक २ पेशाव उतरे तिसको शनैःप्रमेह कहिये ॥ ९ ॥

लालियाप्रमेहका लक्षण।

पेशाव लाल छूटे तातसा छूटे चिकना पेशाब उतरे तिसको लालियाप्रमेह कहिये ॥ १० ॥

क्षारप्रमेहका लक्षण।

जिस पुरुषके पेशाबका गंध खारा होय वर्ण खारा होय स्पर्श खारा होय ऐसा खाराहो जैसा खारा पानी तिसको क्षारप्रमेह कहिये ॥ ११ ॥

नीलियाप्रमेहका लक्षण।

नीलावर्ण पेशाब होय तिसको नीलियाप्रमेह कहिये १२

कालाप्रमेहका लक्षण।

स्याही सरीखा पेशाब हो तिसको कालाप्रमेह कहिये १३

हलदियाप्रमेहका लक्षण।

हलदिया प्रमेहवालेका पेशाब कटुक होय रंग हल्दी-सरीखा होय उसको हल्दीप्रमेह कहेहैं ॥ १४ ॥

मजीठियाप्रमेहका लक्षण।

मजीठिया प्रमेहवालेके पेशावमें दुर्गंध होय मजीठियारंग सरीखा पेशाव होय तिसको मजीठिया प्रमेह कहिये ॥ १५ ॥

रक्तप्रमेहका लक्षण ।

रक्त श्याम गरम सलोना ऐसा पेशाब होय यह लक्षण रक्तप्रमेहका कहिये ॥ १६ ॥

वसाप्रमेहके लक्षण ।

वास संयुक्त होय वसासरीखा पेशाब होय यह लक्षण वसाप्रमेहके कहे ॥ १७ ॥

मज्जाप्रमेहके लक्षण ।

मज्जासरीखा पेशाब हो मज्जाकरके संयुक्त होय तथा बारम्बार पेशाब करै इतने लक्षण मज्जाप्रमेहके कहे ॥ १८ ॥

क्षौद्रप्रमेहके लक्षण ।

मीठा पेशाब होय कसैला होय जहां पेशाब करै तहां मक्खी चींटी बहुत आवैं इतने लक्षण मधुप्रमेहके कहेहैं ॥ १९ ॥

हस्तीप्रमेहके लक्षण ।

हस्तीके मदसरीखा पेशाब होय पेशाब बेरबेरमें आवै आलस्य बहुत आवै पेट बंध रहै इतने लक्षण हस्तीप्रमेहके कहे ॥ २० ॥ इति वीसप्रमेहके लक्षण ॥

अथ दश कफप्रमेहके लक्षण ।

परिपाक होय नहीं अरुचि होय छर्दि होय निद्रा होय बहुत कफ होय कफप्रमेहके इतने लक्षण हैं ॥

अथ छःप्रकारके पित्तके लक्षण।

आंडोंपै इन्द्रियमें पीड़ा होय दाह होय तृषा होय ज्वर होय खट्टी डकार आवे मूर्च्छा होय दस्त पतला आवै इतने पित्तप्रमेहके लक्षण कहे॥

अथ चार वायुप्रमेहके लक्षण।

उदावर्त होय कंप होय हिया भारी हो लार पड़े शूल होय नींद न आवै कंठशोष होय श्वास कास -होय इतने वायुप्रमेहके उपद्रव लक्षण कहे॥

बीसों प्रमेहोंका इलाज जुदा २ कहे हैं॥

छाछियाप्रमेहका इलाज।

दूध १० टंक जीरा सफेद १० टंक मैदालकडी १० टंक मूसली स्याह १० टंक मूसली सफेद १० टंक गोखुरू १० टंक यह औषध कपड़छान कर मिश्री १६० टंक मिलाय ३ टंक नित्य खाइये छाछियाप्रमेह तुरन्त जाय॥

मूत्रियाप्रमेहका उपाय।

शतावर १० टंक गोखरू १० टंक खरेंटी १० टंक तालमखाने १० टंक साठीकी जड़ १० टंक असगन्ध १० टंक मिश्री ६० टंक चूर्ण कर गायके घृतसेती १० टंक नित्य लीजै मूत्रीप्रमेह तुरन्त जाय॥

कांकरियाप्रमेहका उपाय।

जलभांगरा १० टंक तिल सेंके १० टंक अजवायन

१० टंक यह सब सम मात्रा ले चूर्ण करे ३ टंक प्रमाण नित्य लीजे कांकरियाप्रमेह जाय ॥

नोनियांक्षारप्रमेहका उपाय ।

हरड़ १० टंक वहेडा १० टंक आंवला १० टक हल्दी १४ टंक माजूफल १० टंक मजीठ १० टंक यह औषध पीस छानकर चूर्ण कर ४ टंक शहदमें नित्य लीजे नोनियांक्षारप्रमेह तुरन्त जाय ॥

घृतियाप्रमेहका उपाय ।

गुवार पीस छानकर चूर्ण करे७ पुट गोभीके रसकी दीजै जितना गुवारका चूर्ण तितनी मिश्री मिलाय ५ टंक नित्य लीजे पानीसे २१ दिन इस चूर्णसेती घृतियाप्रमेह जाय ॥

खारियाप्रमेहका उपाय ।

असगन्धनागौरी १० टंक शतावर १० टंक गोंद १० टंक मेढ़ासींगी १० टंक शिरहाली १० टंक यह औषध २१सेर पानीमें औटावना तीन सेर पानी आयरहै तब और औषध मिलावना पीछे ७ टंक लेना खारियाप्रेह जाय ॥

नीलियाप्रमेहका उपाय ।

रासना १० टंक इन्द्रायण १० टंक असगन्ध१० टंक आंवकी छाल१०टंक तज २॥ टंक तेजपात२॥ टंक छोटी इलायची२॥ टंक नागकेसर २॥ टंक यह

औषध १० सेर पानीमें उवालना डेढ़सेर पानी रखना पीछे पानी छानलेना १० टंक क्राथ ४ टंक शहद मिलाय पीना नीलियाप्रमेह जाय ॥

दोषत्रयप्रमेहका उपाय।

पाषाणभेद ५टंक सँभालूके बीज५ टंक गोखरू ५ टंक एरंडकी जड़ ५ टंक पीपल ५ टंक इलायची ५ टंक मुलहठी५ टंक पियावांसा ५ टंक मिश्री४० टंक ये सब पीस छान चूर्ण कर २टंक प्रभात२ टंक संध्याको खाय दोषत्रयप्रमेह जाय ॥

मूत्रप्रमेह, हस्तिया प्रमेहका उपाय।

बड़ी कटाईके फूल १ टंक कालाजीरा १२ टंक कौंचके बीज २४ टंक स्याह मूसली १० टंक मिश्री ४४ टंक यह औषध पीस छान डेढ़सेर गौके दूधमें औषध ४ टंक मिलाय पीवना मूत्रप्रमेह हस्तिप्रमेह तुरत जाय ॥

मजीठिया प्रमेहका उपाय।

मस्तगी१० टंक मजीठ१० टंक पीपलामूल १ टंक स्याह मूसली १ टंक यह औषध सब चूर्ण करना चूर्ण२ टंक शहद ५ टंक मिलाय खाना इससे मजीठिया प्रमेह जाय ॥

चपियाप्रमेहका उपाय।

कन्पोड़ा २० टंक चित्रक २० टंक भांग २० टंक

कंभारी १० टंक सब कूट छान २ टंक नित्य खाय १४ दिनतक चपिया प्रमेह जाय ॥

दधिया प्रमेहका उपाय ।

मारा पारा १। टंक सोंठ २ टंक मिर्च२ टंक चित्रक २ टंक नागकेसर २ टंक नागरमोथा २ टंक इन औषधोंको कूट छान शहद मिलाय १० टंककी गोली करना प्रभात संध्या नित्य खाय इसके खायेसे दधिप्रमेह जाय ॥

श्यामप्रमेहका उपाय ।

कीकरके फूल सुखाय कूट छानकर मिश्री अर्द्धभाग मिलाय ३ टंककी फंकी लीजै श्यामप्रमेह जाय ॥

जल प्रमेहका उपाय ।

धतूरेके बीज १ टंक कत्था १० टंक पारा ४ रत्ती७ पानके साथ २१ दिनतक खाय जलप्रमेह जाय ॥

हल्दिया प्रमेहका उपाय ।

हल्दी १० टंक आंवला १० टंक मिश्री २० टंक नित्य ५ टंक लेना इसके खायेसे हल्दिया प्रमेह जाय॥

लालिया प्रमेहका उपाय।

आंवला ५ टंक सफेद मूसली ५ टंक कूट ५ टंक शतावर ५ टंक हल्दी ५ टंक कौंचके बीज५टंक मिश्री ६० टंक इन औषधोंका चूर्ण गोघृतमें मिलाय ४ अवलेह कर खाय लालिया प्रमेह जाय ॥

तेलियाप्रमेहका उपाय।

चना पीस सुखाय९टंक चबाना तेलिया प्रमेह जाय॥

चलप्रमेहका उपाय।

बंग ६ टंक तामेश्वर २ टंक पारा२टंक सार ३ टंक मिरच ३ टंक जायफल ३॥ टंक लवंग २ टंक इलायची २ टंक अकरकरहा२ टंक असगन्ध २ टंक गजकेसर २ टंक मिश्री ४० टंक शहदके संग १ टंककी गोली करै खारा खट्टा त्यागदे चलप्रमेह जाय ॥

रक्तिया प्रमेहका उपाय।

भारवरी १० टंक बहेडा १० टंक आंवला १० टंक मजीठ १० टंक माजूफल १० टंक यह सब औषध पीस छानकर पीछे ९ टंक शहदमें मिलाय अवलेह कर चाटना रक्तप्रमेह जाय ॥

रक्तप्रमेहको अवलेह वृन्दसे।

मजीठ माजूफल गोखुरू मस्तगी गोंद सिरस त्रिफला यह सब औषध सममात्रा लीजै कूट चूर्ण करै९ टंक शहदमें मिलाय प्रभातसमय खाय रक्तप्रमेह दूर होय॥

हल्दिया प्रमेहका अन्य उपाय वृन्दसे।

नींबकी हरी छाल कूट रस काढ़लेना उतनाही शहद लेना दोनों चीज ९ टंक प्रभातको लेना हल्दिया प्रमेह जाय ॥

कांकरियाका अन्य उपाय ।

पलाशपापड़ा कूट चूर्ण करिये अर्द्धभाग मिश्री मिलाइये२ टंककी फंकी लीजै कांकरिया प्रमेह जाय॥

गुहियाप्रमेहका उपाय वृन्दसे ।

घृत१पैसा भर खांड़ (चीनी)२पैसाभर चावलके मांड़में मिलाय लीजै कांकरिया गुहियाप्रमेह जाय ॥

सर्व प्रमेहोंको लवंगादि चूर्ण योग-चिन्तामणिसे ।

लवंग त्रिकुटा सफेद चन्दन नागरमोथा खस छोटी इलायची अगर काला वंशलोचन असगन्ध शतावर गोखरू जायफल गिलोय निसोत तगर नागकेसर कमलगट्टा इन औषधोंके बराबर सफेद मिश्री मिलावै२टंक प्रभातसमय लीजै बीसो प्रमेह दूर होयँ॥

तथा चन्द्रकला गोली योगचिन्तामणिसे ।

सार२टंक जायफल लवंग जावित्री छोटी इलायची अकरकरहा दालचीनी त्रिकुटा केसर चीता असगन्ध नागोरी शतावर गोखरू यह सब औषध एक२ कर्ष लीजै मिश्री२९ कर्ष लीजै खरल करे गोली २ टंककी बांधै सांझ सबेरे गोली खाय बीसों प्रमेह जायँ ॥ इति प्रमेहचिकित्सा ॥

अथ मेदरोगनिदान माधवनिदानसे ।

दिनके वहुत सोवनेसे वा कफसे गरिष्ठ भोजनसे बहुत चिकने आहारसे दूधसे दहीसे अतिमीठेसे इतनी बातोंसे मेदरोग उपजै उदर बँधे देह पुष्ट होय ॥

मेदरोगके लक्षण ।

पेटके रोगके विषे वायु होय हाथ पैर अति गरम और जीभ गला अति रूखे हों भोजन पचै नहीं ॥

मेदरोगको चूर्ण वृन्दसे ।

कुटा जीरा सफेद चाव हींग सोंचल चित्रक यह सब औषध कूट छानकर प्रभात जलसेती पीवे मेदरोग जाय ॥

मेदरोगको अवलेह वृंदसे ।

त्रिकुटा त्रिफला लोहचन यह सब औषध शहद मिलाय कुटकीके रससेती पीवे मेदरोगको नाश होय॥ इति मेदरोगचिकित्सा ॥

वातोदर पित्तोदर कफोदरका निदान ।

पेटके चलनेसे अजीर्णसे मलके संचयसे वात पित्त श्लेष्मके विकारसे उदरके विकारसे होय हैं ॥

वातोदरलक्षण माधवनिदानसे ।

जिस पुरुषके वातोदर होय उसका पेट वहुत दुखे पेट

बहुत बोलै गल २ करै ज्वर मूर्च्छा अतीसार दाह होयँ ये वातोदरके लक्षण कहे ॥

जलोदरके लक्षण ।

पानीकी मट्ठकी समान पेट होय भूख लगै नहीं अन्न की अरुचि होय ये जलोदरके लक्षण हैं ॥

कठोदरके लक्षण ।

पेट बहुत कठोर होय अन्न भावै नहीं यह महा असाध्य है चतुर वैद्य हाथ न लगावै उसका उपाय निष्फल जावे ॥

सोफोदरके लक्षण ।

श्वासहोय कफहोय अरुचिहोय पेटमें व्यथा बहुतहोय।

वातोदरका उपाय वृन्दसे।

पीपल नोन छांछसे पिलाइये वातोदर दूरि होय ॥

प्लीहरोगको चूर्ण ।

अजमोद चित्रक जवाखार टंकणखार संगमरमरका चूना यव अतीस सेंधानोन पीपलामूल सोंचरनोन सांभरनोन पुष्करमूल अरणी हींग अमलबेत वायविडंग इन्द्रायण हरड़ हाहूबेर वर्ना पाढ़ यह सब औषध सममात्रा लीजै इनको कूट छान चूर्ण करै सहिंजनके रसकी ३ पुट दीजै पीछे विनोलेके रसमें ३ पुट दीजै पीछे सुखाइये फिर गरम पानीसे २ टंक लीजै व मदिरासे लीजै दुष्ट प्लीहा जाय ॥

प्लीहा वायुगोलाको अवलेह।

ढांककी राख जवाखार नोन तिलकी लकड़ीकी राख२ टंक सबका चूर्ण घृतके संग अवलेह कर खाय तो प्लीहा वायुगोला दूर करै ॥

सोफोदर चूर्ण वाग्भट्टसे।

सांठीकी जड़ पाढ़ हड़ सोंठि गोखरू दारु हल्दी अजवायन पीपल चित्रक बड़ी कटेली सब दवाई बराबर ले इनका चूर्ण करै गायकी छाछमें ९ दिनतक खाय तो शूल सोफोदर पांडुरोग मिटै ॥ इति सोफोदर चिकित्सा ॥

खोजाका उपाय वृन्दसे।

सौंफ अरंडकी छाल सांठीकी जड़ शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी बड़ी कटेली छोटी कटेली गोखरू गिलोय इन सब औषधोंका चूर्ण कर गरम पानीसे पीवे वायुगोला दूर होय ॥

पित्तसोजाका उपाय चरकसे।

देवदारु सांठीकी जड़ सोंठि इनका २टंक चूर्ण गायके दूधमें पिलावे समस्त शरीरका सोजा जाय ॥

अथ त्रिदोष सोजाको चूर्ण।

पीपलपाढ़ गजपीपल चित्रक पीपलामूल सोंठि कटेली नागरमोथा हल्दी जीरा इनको सममात्रा ले चूर्ण करै २ टंक गरम जलसे खाय सब सोजा जाय ॥

अन्य उपाय ।

सांठीकी जड़ देवदारु सोंठि यह सब सममात्रा लीजे क्काथ कर पीवे सर्वप्रकारका सोजा जाय ॥

वायुसोजाका उपाय योगचिन्तामणिसे ।

चन्दन दोनों मुलेठी पद्माक कमलगट्टा खस नेत्र-बाला सँभालूकी जड़ इन सबका चूर्ण२टंक पानीसेती लीजे वायुसोफ दूर होय ॥

जलोदर कठोदरका इलाज ।

बहेडा आंवला सफेद जीरा स्याह जीरा कूट सेंधानो-न सोंचरनोन सुहागा जवाखार वायविडंग सांभरनोन कचनोन पाढ़ मुलेठी सज्जी लोटक त्रिकुटा चित्रक जवासा जमालगोटा सोवेके बीज कच्चर चीढ़ नवसादर एरंडके मूलकी छाल शोरा जायफल पीपलामूल अज-वाइन फिटकरी हींग लवंग जावित्री अकरकरा अज-मोद इलायची एलुवा यह सब औषध सममात्रा लेकर चूर्ण करिये अमलवेतमांह भरिये अमलवेत धूपमें सुखा-इये पीछे पीसकर चूर्ण२टंक गरम पानीसे दोजे प्रभा-तके समय खाय जलोदर कठोदर वातोदर पित्तोदर सोफोदर वायुगोला पथरी वायुकी गांठ इतने रोगोंको जीते । धन्वन्तरिनें यह उपाय बताया है

जलोदर कठोदरको चूर्ण योगचिंतामणिसे ।

लोहाचूर्ण बिडंग हड़ बहेड़ा आंवला त्रिकुटा जवाखार यह सब वस्तु १० तोले लीजे शहद १० तोले गुड़ ६० तोले यह औषध कूट छान शहदमें मिलाय १० टंक नित्य खाय कठोदर प्लीहा इतने रोग जायँ ॥ इति जलोदर कठोदर वातोदर सोफोदरकी चिकित्सा ॥

अथ पेटके बीच मांस गोंद मैदाकी वस्तु केलाकी चिहटका इलाज अजीर्णमंजरीसे ।

पेठाकी गिरी ४ टंक १४ दिनतक प्रभात दीजे मांसकी चिहट मिटै पेटका दुःख दूरि होय ॥

पेटकी लागको लेप वृन्दसे ।

सरसो वा बकरीकी मेंगनी छांछसेती पीस गरम करके पेटपै लेप करै मांस और अन्नकी गांठ मिटै अन्नका दर्द पेटमें होय तो मिटै ॥

अथ उपदंश फिरंगमें निदान ।

बुरी स्त्रीके पास जाय अथवा कपडोंसे होय तब जाय व्यभिचारिणीसे वेश्यासे वृद्धा स्त्रीके सेवनसे उपदंशवालेके संगसे गरम वस्तुसे वात पित्त कफके कोपसे ।। वातो कफके फिरंगवायु उपदंश उपजैहै ॥

अथ उपदंशका लक्षण।

ताप होय भूख थोडी लगे इन्द्री और जंघा और मुखपर गुमडी पीली होय इन्द्रीपै सीवनमें चींटीसी लगे गरमी बहुत लगे, ग्लानि गूमडियोंकी रहै इतने लक्षण उपदंश फिरंग वायुके हैं॥

उपदंश फिरंगवायुकी गोली योगचिंतामणिसे।

खुरासानी अजवायन १॥ टंक मेथी २ पल गूगल २ पैसाभर गुड़ २ पल सार १ टंक यह औषध सब पीस गोली करे २ टंककी गोली १ संध्या १ प्रभात नित्य खाय दिन ११ तक तो फिरंगवायु उपदंश जाय॥

उपदंशपर गोली और काथ।

इन्द्रायणकी जड़ ३ पैसाभर मिर्च ३ पैसाभर यह दोनों पीसकर इसकी दो दो पैसाभरकी पुड़िया करे एक एक पुडियाके साथ तीन तीन पाव पानी कोरी हांडी बीच उबालना गुड़ एक एक पुडियाके साथ दो दो पैसा भर देना कंडीकी आंच देना पाव १ आय रहैतब छानना गरमीवाले पुरुषको पिलावे झाडा लगे फोडा उपदंश बहुत दिनोंका गरमी मेंवाडा फिरंगवायु जाय।

उपदंशकी टांकीको लेप वाग्भट्टसे।

मुरदारशंख पैसाभर राल ४ पैसाभर घीसे मलहम करे ऊपर टांकीके लगावे टांकी तुरंत अच्छी होय॥

उपदंशकी धूनी वृन्दसे।

आकको जड़ हीगलू हुलहुलके बीज अकरकरा यह औषध कूट ७ दिनतक धूनी दीजे तो उपदंश दूर होय इति फिरंगमेवाड़ा चिकित्सा ॥

अथ व्रणका लेप।

कमीला घरका धमासा मिर्च हल्दी सुहागा सुपारी कौडीकी राख आकके पीले पतेकी राख कडुवे तेलसेती व्रणपै लेप करै सब जातिका व्रण जाय ॥

व्रण फोडाटांकीका उपाय योगचिकित्सासे।

सिंदूर राल हल्दी देवदारु कमीला सुहागा सज्जी सोना मक्खी मैनशिल घोडेकी डाढ जला रखिये धावेके फूल यह औषध पीस गायके चार पैसाभर घीमें ४ पैसाभर मोम २ पैसाभर पकायकर पीछे यह औषध पीस गेरिये ठंढी कर पानीमें ४ बार तथा ५ बार धो फोहापै लगाय व्रण ऊपर धरिये व्रण टांकी दूर होय॥ इति फिरंगवायुकी टांकीका इलाज ॥

अथ कीडीनगराकी औषध।

नवसादर संभलखार नीलाथोथा नींबके पत्ते चूना बाजरेकी कड़वीकी राख जुवारकी जड़की राख सज्जी यह औषध सममात्रा लीजे जलसेती पीसिये कीड़ीनगराके ऊपर बांधिये ७ दिन

तक यह उपाय करे पीछे नींबके पत्तेको ऊपर बांधै कीड़ीनगरा विषकंटा जाय ॥ इति कीड़ीनगरा विषकंटाचिकित्सा ॥

कंडूका उपाय।

सज्जी नीलाथोथा नींबके पत्ते अनारके पत्ते सिंदूर सुहागा कबीला ढाकका गोंद यह सब औषध पीस थालीमें गायका माखन गेर तांबेसे रगडे पीछे खाज-पर दिन १९ चुपड़िये कण्डू जाय ॥

अन्य उपाय।

सीसेके पत्र एक एक कराइये सांपकी कांचली उस-में मिलाइये कपडेसेती गांठ बांधके राखकर तेलमें गेर लेप करै कुष्ट सब दूर होय सिद्धयोग है ॥

गंडमालाकी चिकित्सा सुषेणशास्त्रसे।

चोवा सज्जी मिरच चिरमटी हल्दी दारुहल्दी नोन यह औषध पैसा २ भर लीजे कूट छानकर मीठातेल पैसा २० भर लीजे तिस तेलको पकाय गरम तेलमें औषध गेरदे पीछे चिकने बरतनमें रखिये गंडमालाकी गांठपै यह तेल लगाइये विसर्परोग जाय ॥

विस्फोटक विसर्प श्लीपदको लेप योगचिन्तामणिसे।

नदीकी सीप ९ पैसाभर जलाय आकके दूधमें पीस लेप करै छादन वायु जाय ॥

कंठमालाको लेप शार्ङ्गधरसे ।

पेठेके बीज इन्द्रायणके फलकी गिरी कनेरकी जड़ नागरमोथा हीराकसीस ककोड़ाकी जड चन्दन सुरख मीठा मोहरा यह औषध बराबर ले कडवे तेलमें पका-इये पीछे ठंढा कर गंडमालापै लगाइये २१ दिनतक अ-साध्य गंडमाला जाय ॥ इति गंडमालाचिकित्सा ॥

अथ दभ्रूतरोगका लक्षण माधवनिदानसे ।

ग्लानि होय शरीरमें सब जगह खुजली हो तृषा बहुत होय यह लक्षण दभ्रूत रोगके हैं ॥

दभ्रूतरोगका उपाय योगचिन्तामणिसे ।

दारुहल्दी हरताल शंखभस्म देवदारु मूलीके बीज नागरवेलके पानका रस मिलाय शरीरपै धूपमें बैठके७ दिनतक लेप करै दभ्रूतकी खुजली दूर होय ॥

अन्य उपाय वैद्यवल्लभसे ।

हल्दीकी गांठ ले पकेहुए इंद्रायणके एक फलमें गेर १ पहर अरनेकी आंच दीजे कपड़मिट्टी कर खाम दीजे पीछे भस्म करना फिर दभ्रूतपर लेप करै ७ दिन सब दभ्रूत जाय ॥ इति दभ्रूतचिकित्सा ॥

मुखछायाका उपाय योगचिन्तामणिसे ।

रक्तचन्दन कूट मजीठ हल्दी दारुहल्दी आम्रबौर

पवांड़के बीज केसर बड़की जड़ यह सब औषध सम-मात्रा ले कपड़छान कर चूर्ण करना जलसेती मुखपै ८ तथा १० वार मसलनेसे मुखछाया दूर होय ॥

अन्य उपाय मनोरमासे ।

पीपलकी लाख और बेरकी मींगी नींबूके रससेती १४ दिनतक मुखपै लेप करै तो मुखछाया जाय ॥ इति मुखछायाचिकित्सा ॥

मुखपाककी औषध योगशतसे ।

त्रिफला मुनक्का गिलोय दारुहल्दी जवासा चमेली-के पत्ते इनका जोशान्दा करना तीन पाव पानी चढ़ावना पावसेर आयरहै तब प्रभातसमय और सांझसमय दोनों वक्त कुल्ला करना मुखछाला दूर होय ॥

मुखपाककी वटी अमृतसागरसे ।

खैरसार मुर्दारसंग छोटी इलायची वंशलोचन शीत-लचीनी सफेद चन्दन ववाशीर सौंफ गुलाबके फूल मि-श्री सफेद यह सब औषध पीस छानकर गुलावजलसे गोली बाँधिये झड़बेरप्रमाण पीछे छालावाले मुखमें पुरुष सेंधानमक मिरच पीसि मुखमें गेरे जब छालेमेंसे लार निकले तब पीछे कुरला कर गोली गेरे चाहे जैसी गरमी होय सब शान्त होय ॥ इति मुखपाकचिकित्सा ॥

गल रोगकी गोली योगशतसे ।

रसोत पाढ़ तेजबल हल्दी पीपल यवाखार देवदारु

यह औषध सममात्रा ले पीसछानकर शहदमें गोलीबांधे झड़बेरप्रमाण छायामें सुखाय मुखमें रखिये रस चूसिये गलपीड़ा सब दूर होय ॥ इति गलरोगचिकित्सा ॥

नहरुवाका उपाय।

केसूलाके फूलकी गुड़में ७ गोली करै सूर्य्यके निकलते गोली सब निगल जाय नहरुवा दूर होय ॥

नहरुवेका मंत्र ।

ॐ नमो आदेश गुरुकी वामन कोठी योगी हुआ तोड़ जनेऊ नहरुवा किया पके न फूटै श्रीवीरियांनाथ की आज्ञा फुरै ॐ ठः ठः ठः स्वाहा । आदित्यवारकी रात्रिको क्वाँरी कन्यासे पूनी २॥ कताइये सूत्र तार नव लेना गुडकी नव गोलीमें एक एक तार सात सात बार आंकिये आदित्य वारको सूर्य्य निकलते गोली नवो निगलजाय तो नहरुवा जाय ॥

अन्य उपाय

हींग १॥ पैसा भरकी पुडिया ३ बाँधिये पावसेर दहीमें पुड़िया १ मिलाकर खाय ३ दिनके भीतरही नहरुवा भस्म होय पीड़ा दूर होय ॥ इति नहरुवेकी चिकित्सा ॥

अथ गजचर्मको तेल योगचिन्तामणिसे ।

थूहर चित्रक भंगरा कुड़ाकी छाल सेंधव सांभर कच विड़ सांभर यह पांचोंनोन आककीजड यह सब दवाई

पांच पांच टंक ले पीसकर गोमूत्रमें भिजोवे ४ दिन-तक १२ पैसाभर तेलमें गेर औषध पकाय पीछे छान-कर धूपमें बैठकर शरीरमें तेल मर्दन करे गजचर्म बीमची खाज दाद सत्र दूर होय ॥

लेप योगशतसे।

हड़ सेंधा पवांड़ कूट दूबका रस कांजी यह सब चूर्ण कर कांजीसे अथवा छांछसे मर्दन करे दाद खाज दूर होय ॥

अथ कंडूदाफड़को तेल योगशतसे।

गूगुल नीलाथोथा सिंदूर रसौत मैनशिल दो २ टंक लीजे कडुवे तेलमें पकाय लगाइये खाज फुनसी दूर होवे। इति चिकित्सा ॥

अथ नासूर चिकित्सा।

स्यारकी विष्टा सज्जी चूना मनुष्यका हाड़ बकरीका हाड़ चोप इन औषधोंको बराबर ले दोनों हाड़ ज-लाले शहदमें मलहम कर वत्ती बनाय १४ दिनतक नासूरमें देदेना नासूर तुरन्त मिटै ॥

मलहम चिन्तामणिमतसे।

धतूरेकी जड़ आककी जड़ नागरमोथा गूगुल राल मुर्दासंग कमीला कत्था सुहागा तेलिया यह सब बराबर पीस छान गऊका घृत गरम कर मिलाय

पीस छानकर मलहम करै पीछे नासुरमें भरिये नासूर बादी टांकी सब दूरि होयँ ॥

पुनः मलहम ।

भैंसका सींग जलायकर राख लीजै मक्खनमें मिलाय मर्दन करे नासूरके ऊपर लगाइये छिद्र तुरंत मिटै ॥ इति नासूर चिकित्सा ॥

अथ बगलगन्धका उपाय योग-चिन्तामणिसे ।

मोहरा चिरमटी नीलाथोथा सिंदूर नवसादर यह सममात्रा पीस बगलमें लेपकरै बगलगन्ध दूर होय॥

अन्य उपाय ।

गूगुल इमलीके बीज दोनो पानीसेती लेप करै तो बगलगन्ध जाय ॥

अथ मस्सा रसोलीका उपाय योग-चिन्तामणिसे ।

सज्जी चूना कलीका पीस पानीसेती मस्सेके ऊपर लेप करै तो मस्सा जाय ॥

अथ वायुगांठका उपाय जेजडग्रंथसे ।

पुष्करमूल कूट मिरच सेंधननोन हलदी यह सब औषध पीस बारीक पानीसेती वायुगांठपै लेप करै सब वायुगांठ दूर होय ॥

अथ कानके रोगका उपाय योगशतसे ।

सोंठका रस सैंधवनोन चिरौंजी कडुक तेल यह सब औषध२वारकानमें निचोड़िये कानकी पीड़ा दूर होय॥

अन्य उपाय योगशतसे ।

नींबूके रसमें सज्जी घिसकर कानमें गेरे तौ कानकी पीड़ा जाय ॥

कानमें जानवर होय तिसका उपाय वंगसेनसे।

देवदारु वच हड़ घीकुँवारके रससेती पीस तेलमें पकाय कानके बीच गेरिये कानका दुःख तुरन्त मिटे॥

बहरेका उपाय ।

हल्दी ९ टंक पीपल ९ टंक सोंठि ५ टंक घीकुँवार ५ टंक अरण्डोली ५ टंक आकके फूल ३ टंक शहद १० पैसाभर गायका घृत ६ पैसाभर सब पीस इकट्ठा कर चिकनी हाँडीमें रखिये शुभ दिन देखकर खाय अनसुना सुने ॥

अथ वायुकृत मस्तकदर्दका उपाय आत्रेयमतसे ।

एरण्डवीजको तेलमें कूट महीन पीसकर शिरमें मर्दन करे ३ वार खाय शिरोवर्ति जाय ॥

शिरोवर्तिको लेप ।

नेत्रवाला सफेद चन्दन रक्तचन्दन पद्माक कमलगट्टा

खस कसेला जलसेती पीस प्याइये तथा लेप करै पित्त शिरोवर्ति दूर होय ॥

त्रिदोषशिरोवर्तिको लेप ।

मिरच कूट मुलहठी बच चित्रक यह सब सममात्रा ले पीस कांजीसेती लेप करै सूर्य्यावर्त आधाशीशी सब जाय ॥

आधाशीशीका उपाय ।

हींग और गुड़की नास दीजै आधाशीशी तुरंत मिटै।

आधाशीशीको नास वृन्दसे ।

अगर केसर कस्तुरी कपूर यह चारों बराबर पीस पानीसेती नास दीजै आधाशीशी सूर्यवायु मिटै यह वृन्द ऋषीश्वरने कहाहै ॥

इति रामविनोदका वायु उत्पत्ति लक्षण उपाय, अंग हीन कटिशूल उपाय, माथेका भ्रम पीड़ा अकड़वायु कटिशूल संधान उदरपीड़ा वायु, कम्पवायु रांघणवायु उपाय पुनः सप्त मण्डल उपाय कुष्ठका उपाय गलितकुष्ठ उपाय श्वेत मण्डल उपाय षट् कुष्ठका उपाय ऊरुस्तंभका उपाय, आमवातनिदान लक्षण उपाय शूलनिदान लक्षण उपाय पित्तशूल उपाय वायुगुल्मनिदान लक्षण उपाय हृद्रोगनिदान लक्षण आदि कथन नाम पंचम अधिकार समाप्त ॥ ५ ॥

अथ छठा अधिकार ॥

आधाशीशीका उपाय वृंदसे ।

कनेरके पत्तेके रसकी प्रातःकाल नास दीजे आधाशीशी तुरन्त मिटै ॥

आधाशीशीका यन्त्र ।

२३	२६	२९	१६
२८	१७	२२	२७
१८	३१	२४	२१
२५	२०	१९	३०

आधाशीशीमें यह चौरानबेका यंत्र कागजमें लिखकर बांधे आधाशीशी तुरंत जाय ॥

बकरीके दूधमें वा मूत्रमें सफेद फेन घिसकर नास दीजे प्रातःकाल आधाशीशी तत्काल जाय ॥

तथा नस्य ।

घूंघताधेराका उपाय मनोरमासे ।

मुनक्का १० पैसाभर मिश्री ७ पैसाभर मिरच दक्षिणी १ पैसाभर पीपल २ टंक इन औषधोंको पीस छान गोली १ टंककी करे प्रभात संध्या गोली एक २ खाय घूंघतावेरा दूर होय ॥

११

अथ सर्व मस्तकरोग शीतांगका उपाय योगचिन्तामणिसे ।

कूट कलौंजी मोहरा वच अजवायन पुष्करमूल अनमोद यह सब औषध बराबर लीजे गेहूंके आटामें सब औषध मिला रोट कर १४दिनतक खवावे इससे मस्तकपीड़ा और शीतांग जाय ॥

घूंघताघेराका उपाय वैद्यवल्लभसे ।

सोंठि मिरच धनियां सांठीचांवल इनका चूर्ण आदित्य वारको एकसौ आठ वेर इस मंत्रसे मंत्रियेः- "सूर्यनाथेन तं प्रोक्तं यंत्रोक्तं ब्रह्मचारिणा । तदुक्तं नारसिंहेन तेन चक्रेण वायुना" ॥ पीछे ठंढे जलसेती खाइये माथाका सब दुःख जाय ॥

नेत्ररोगका लेप योगशतसे ।

रसोत हड़ सेंधवनोन फिटकरी इनको पीस नेत्रपै तीनदिनतक लेप करे नेत्ररोग तुरन्त जाय ॥

पोटली वैद्यवल्लभसे ।

लोध फिटकरी मुर्दाशंख हल्दी जीरा अफीम यह औषध माशा माशाभर लीजे नीलाथोथा आधा माशा लै पीस पोटली कर आंखमें निचोड़िये आंखकी ललाई कड़क सब दूर होय ॥

चिपडी आंखका उपाय वैद्यवल्लभसे।

रसौत गोरोचन मिरच समुद्रफेन यह औषध बराबर ले बारीक चूर्ण कर ७ दिनतक अंजन करे वो पानी पड़ता थँभे ॥

ब्रह्मासेसवलवायुका उपाय।

सिरसके बीज लेकर पातालयंत्र कर तैल काढ अंजन करनेसे सबलवायु जाय ॥

नेत्रके छाया तिमिर धुंध जलपात लाली आदि रोगोंकी गोली वृन्दसे।

नीलाथोथा भुना १ पैसाभर खपरिया १ पैसाभर यह दोनों लेकर मिश्री सफेद ४ पैसाभर मिलाइये गोदुग्धसे ४ दिन ताईं खरल कर चिरमटी प्रमाण गोली करे फिर पानीसे २१ दिनतक अंजन करे धुंध तिमिर मोतियाविन्दु लाली सब दूरि होयँ ॥

फूलीका उपाय अमृतसागरसे।

स्याह कांच २ टंक चीनीखांड़ ४ टंक यह दोनों पीसके १४ दिन तक अंजन करे फूली खाज तिमिर धूंध दूर होय ज्योति निर्मल होय ॥

शीतलाकी फूलीका उपाय वैद्यसर्वस्वसे।

काले गधेका दांत साबरका सींग यह दोनों घिसकर अंजन करनेसे फूली जाय ॥

नक्तांधका उपाय योगशतसे ।

पीपल गोबरके रससे घिसकर अंजन करे तो रतौंधी जाय ॥

अन्य उपाय ।

जियापोतेकी गिरी कायफल कटाईकी जड़ चाव समुद्रफेन यह सब बराबर ले इनका सूक्ष्म चूर्ण कर घृतको अंजन करे तो रतौंधी प्रवाल जाय ॥

मृगीरोगका उपाय वृन्दसे ।

रीठेकी गिरी हिंगोटकी गिरी जियापोतेकी गिरी समुद्रफेन ये चार दवाई बराबर लीजे पानीसेती गोली करे जिस वक्त मृगी आवे तिसवक्त गोली घिसकर नास दीजे निश्चय मृगी जाय ॥

अन्य नास ।

आकके २ बूंदीकी रुई सफेद मिरच दोनोंको आकके दूधकी७पुट दीजे पीछे सुखाय पीसिके कागजमें धरे मृगी आवे तब नास दीजे मृगी जाय॥इति चिकित्सा ॥

अथ जानवा रोगको मंत्र ।

ओं नमो आदेश गुरुको खंगारी खंगीरी कहां गयो सवाभार पर्वत गयो है सवाभार पर्वत जाय क्या करैगा कोइला क्षरसारका तीर चढ़ायकर क्या करैगा जानवाकी पीड़ा काटैगा गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

विधि ।

२१ बार तीरसों झाड़ा देकर तीरको बहादे पीछे जानवावाला पुरुष मँगाइये तीनवार मंत्र सिंदुरसे पूजिये तीरसों झाड़िये ७ दिनमें जानवा जाय ॥

अथ डमरुवाको मंत्र ।

डमरू वायें पैरमें होयहै॥ॐ डमरू डिमडिमी हाथ कपाल आंखों भाजो डमरू जाय न भाजै तौ पांच बाण अर्जुनके छीने नारायणके चक्र छीनों भिन्न भिन्न छिन्न छिन्न जाऊं चिता उमडिया वीरकी आज्ञा फुरै॥

विधि ।

३ दिन २१बार तीरसे झाड़दे तेल पावसेर२१बार मंत्रिये तेलको धरतीमें गेरिये३दिनतक करै बायें पैरकी चीस मिटै दाहिने पैरमें जानवा विसमेंडमरू जानिये॥

अथ विषकी चिकित्सा ।

बावले कुत्तेके विषका उपाय वृंदसे ।

जमालगोटा मिरच सुहागा शिंगरफ तूंबी यह सब सम भाग लीजै दूना गुड़सेती गोली बांधिये छोटी सुपारीप्रमाण गरम पानीसे गोली दीजे दाढ़का विष दूर होय ॥

अन्य उपाय योगशतसे

कुचिला सरसों गुड़में मिलाय बेरप्रमाण गोली

बांधे प्रभात समय १ गोली गरम पानीसे दीजै एक संध्याको दीजै हड़कियाकुत्तेका विष दूर होय ॥ इति श्वानविषकी चिकित्सा ॥

अथ सर्पविषचिकित्सा योगशतसे।

नींबकी निबोलीकी गिरी सेंधवनोन मिरच यह तीनों औषध पैसा २ भर लीजै घृतके संग चाटे सर्पविष दूर होय ॥

अन्य उपाय।

केसरि नागकेसरि सांठीकी जड़ कटाईकी छाल जलसेती पीस पीवै सर्पजहर दूर होय ॥

स्थावर जंगम विषका उपाय योगशतसे।

हड़ हींग वच पानीसे महीन पीस डकपर लेप करै सर्पविष दूर होय ॥ इति सर्पविषचिकित्सा ॥

अथ विच्छूके विषकी चिकित्सा।

लाल कनेरकी जड़ और दक्षिणी मिरच यह दोनों पानीसे पीसकर लेप करै विच्छूका विष दूर होय ॥

अन्य उपाय।

हींग चोखी लेकर आकके दूधकी ७ पुट दे झड़बेरप्रमाण गोली बांधि विच्छूके डंकपर लेप करै विष जाय ॥ इति विच्छूविषचिकित्सा ॥

अथ शस्त्रघातचिकित्सा योगचिंतामणिसे ।

नीलाथोथा शिंगरफ मुर्दारसिंग सिंदूर मँजीठ यह सब औषध एक एक पैसाभर कडुवा तेल ९ पैसा भर ले सब औषध तेलमें पकावे फेर फोहेमें लगाय घाव पर दीजे घाव भरे ॥

घावके लोहू थंभनेका उपाय वृन्दसे ।

बिना ब्याही भैंसका सींग चाकूसे छीलके१ महीना गौके घृतमें भिगोवे पीछे आकके डोडेकी रुई लेकर तिसकी बत्ती कर घृतमें जलाय कज्जल करिये कज्जलको घावपर लगाइये लोहू थँभै ॥ इति शस्त्रघात-चिकित्सा ॥

अथ धरनिकी चिकित्सा ।

गुड़ १ तोला नकछिकनी ६माशे मिलायकर खाय धरनि तुरंत ठिकाने आवे कभी डिगे नहीं ॥

धरनिपर यन्त्र चौंवनका ।

धरनिपर आदित्यवारके दिन अनवोला केसर कस्तूरी गोरोचन कपूर शिंगरफ यह सब एककर गायकी छायामें वैठ यंत्र लिखिये कन्याके काते सूतके डोरेसे बांध तां चांदीमें मढ़ाकर कमरमें बांधे तो धरनि तुरंत ठिकाने आवे फिर डिगे नहीं सत्याम्नाय योगीका सवा सेरके चूरमासे पात्र भरिये, सवा गज

लाल योगीको ओढ़ाइये धरनि डिगे नहीं ॥ इति धरनि चिकित्सा ॥

अथ बालकके अतीसारकी चिकित्सा योगशतसे ।

हल्दी दारु हल्दी इन्द्रयव काकड़ासिंगी मुलेठी इनका काढ़ा कर शहद मिलाय बालकको पिलाइये अतीसार दूर होय ॥

रक्तातीसारकी चिकित्सा वृन्दसे ।

पाषाणभेद जायफल सोंठि शतावरि आंबकी गुठली छुहारा कालपीकी मिश्री यह औषध सममात्रा ले पीस-कर घूंटी दीजे तत्काल लोहू थंभै बालक पुष्ट होय ॥

बालककी छर्दि चिकित्सा योगमतसे ।

काकड़ा सिंगी मोथा पीपल अतीस यह चार औषध बराबर ले चूर्ण कर शहदमें चटावे बालककी उबाकी छर्दि जाय ॥ इति बालकछर्दिचिकित्सा ॥

अथ अंडवृद्धिका उपाय।

सोंठि पीपल मिरच बेलगिरी पीपलामूल निसोत चित्रक यह सब औषध सममात्रा ले चूर्ण कर २ टंक दूधसे पीवे अंडवृद्धि दूर होय ॥

अन्य उपाय।

एरंडका तेल८टंक गोदुग्ध २सेर चीनीखाँड़ आध-सेर यह सब औषध ले एकत्र कर पीवे अंडपीड़ा जाय ॥ इति अंडवृद्धिचिकित्सा ॥

अथ लगी चोटका उपाय भोजप्रबन्धसे ।

हल्दी बीजाबोल यह दोनों पीसकर चूर्ण करे २ टंक गरम पानीसे लीजे चोट दूर होय ॥

चोटका अन्य उपाय ।

हल्दी असालिया मेदालकड़ी सज्जी पानीसेती महीन पीस दर्दके ऊपर ३ दिनतक धूपमें बैठके मर्दन करे सब दर्द दूर होय ॥

अथ नींद आनेका उपाय वृन्दसे ।

सफेद मिरच कस्तूरी घोड़ेकी लारके संग घिसकर अंजन करे नींद बहुत आवे ॥

पुनः उपाय वैद्यवल्लभसे ।

बिजौरेका पकाहुआ पीला १ फल शिरहाने रखिये नींद बहुत आवे ॥

अथ बगलगन्धका उपाय ।

हरड़े मोथा इमली करंजुवा बेलगिरी यह औषध बराबर ले सद्यपानीसे पीस बगलमें लेप करे बग-लगंध दूर होय ॥

अथ मुखदुर्गन्धका उपाय वैद्यमनोत्सवसे ।

लवंग कपुर दालचीनी तमालपत्र केसरि कस्तूरी नायफल जावित्री चन्दन गुलाबके फूल इलायची छोटी इनको गुलावसे पीस गोली बेरप्रमाण बांधे गोली १तथा २ मुखमें रखिये मुखदुर्गंधि दूर होय ॥

अथ दांतोंकी श्याम मिस्सी ।

हीराकसीस हड़ आंवला माजूफल जंगीहड खैरसार फिटकरी सोनामक्खी लोध यह सब औषध बराबर लीजे इनका चूर्ण कर इस चूर्णके बराबर लोहका चूर्ण लीजे चिकनी सुपारी १ पैसाभर पीस मिलाइये पीछे निम्बूके रससेती पीसिये तथा इमलीके रससे तथा अनारदानेके रससेती पीसि महीन कर छायामें सुखाय पीतलके बरतनमें राखिये ३ बार तथा ४ बार दांतोंमें लगाइये हलुवा खानेको दीजे दांतशूल मुखदुर्गन्धता मिटै ॥ इति मिस्सी विधि ॥

अथ लाल मिस्सीकी विधि योग- चिन्तामणिसे ।

शिंगरफ चिकनी सुपारी कत्थाकी बड़ियां इन तीनोंको ६ माशाभर तथा पीपलकी लाख २ पैसाभर ले पक्के सवासेर पानीमें गेर अग्निपर चढादे जब ७ पैसाभर पानी आय रहे तब उतारे मजीठ

२ टंक जुदी रकायले २ पैसाभर पानी आय रहै तब मजीठके ताईं पानीसेती पीसिये पीछे लाखके पानीसेती खरल करै सब पानीको इसभांति सुखाइये फिर चूर्णको छायामें सुखाइये मजीठका चूर्ण दांतोंमें ३ वार तथा ४ वार मलिये दांत लाल होयँ यह सिद्ध योग कहा॥ इति लाल मिस्सी विधि ॥

अथ सफेद मिस्सीकी विधि ।

मस्तगी गोंद भूनी फिटकरी हीराकसीस जंगीहड़ अकरकरहा तेजबल मुर्दारसंख लोध कत्था सुपारी चिकनी यह औषध पीस चूर्ण कर दांतपे मलै प्रभात संध्या दांत वज्र सरीखा हो दांत दाढ़की पीड़ा दूर होय ॥

अथ छः महीनेके केश कल्प ।

माजूफल १०टंक हीराकसीस१०टंक सफेद कनेरके बीज ९ टंक सँभालूके बीज १० टंक बेंगनकी जड १० टंक अनारकी जड १०टंक सिंहरास१०टंक लोहचूर्ण ३२ टंक नसपाल१० टंक आंवला७०टंक भिलावां १० टंक जामुनकी छाल तथा जड१०टंक नीलके पत्ते १० टंक मालकाँगनी २० टंक पवाँरके बीज २० टंक जायफल१०टंक नवसादर९टंक त्रिफला२८ टंक काले तिल यह सब औषध पीसकर१०सेर तेल कडुकमें मिलाइये पीछे पकाइये ७ सेर तथा९ सेर तेल बाकी रहै तब तेलको लोहेके घड़ेके भीतर राखे १ मही-

नाभर जमीनमें गाड़िये पीछे निकाल बालोंमें तेल लगाइये छः महीनेतक केश स्याह रहें ॥ इति केशकल्पचिकित्सा ॥

अथ केश बढ़नेको लेप योगचिन्तामणिसे ।

रसौत हाथीका दांत बकरीके दूधसे घिस लेप करे बाल बहुत आवें गये शिरके केश२७ दिनमें फेरआवें॥

अथ आगके जलेका उपाय वृन्दसे ।

कूट आंवला मिर्च नींबूके रसमें अथवा नींबूके पत्तेके रसमें जलेपर लेप करे पीड़ा तुरन्त मिटे ॥

अन्य उपाय शार्ङ्गधरसे ।

यवका वक्कल राख कर मीठे तेलमें पीस जलेपर २१ वार लेप करे पीड़ा जाय ॥

अथ स्वेदज्वरादिपर लाक्षादि तैल योगचिन्तामणिसे ।

रक्तचन्दन श्वेतचन्दन मोथा नेत्रवाला खस पद्माख मुलहठी लोहवान सेल्हा रसकचूर इलायची देवदारु धावेके फूल नागकेसरि पतंग मजीठ हल्दी सारिवा कुटकी मिरच कंकोल नख काला अगर जवासा केसरि तजपत्रज कमलगट्टा पित्तपापड़ा बालछड़ीला राल ये सब औषध एक एक पल लीजे इनसे चौगुना तिलका तेल लीजे कड़ाहीमें गेर औटावना तेल बाकी आय रहे तब उतार चि-

कने बासनमें धर रखिये भला मुहूर्त देख, रोगीके मर्दन करे अजीर्ण ज्वर स्वेदज्वर शीतज्वर दाहज्वर खाज बीमची गजचर्मादिक रोग जायँ ॥

मस्तकरोगपर षड्बिन्दुतैल योगशतसे ।

रासना सोंठि सौंफ सेंधवनोन तगर वच वायविडंग जावित्री यह औषध एक एक पैसाभर लीजे बीस पैसाभर पानी गेर उबाले १० पैसाभर पानी आय रहै तब २० पैसाभर तेल कडुवा मिलाइये भांगराका रस आध सेर मिलावे भांगरेका रस जल जाय तो तैलको उतार लीजे पीछे माथेमें मर्दन करे शिरोवर्त आधाशीशी तुरंत मिटजाय ॥ इति मस्तकरोग चिकित्सा ॥

अथ घृताधिकारमें प्रथम कल्याण घृत ।

असगंन्ध मजीठ वच मोचरस मोठ मोथा पीपलामूल पीपल अजमोद मिरच अजवायन चित्रक सँभालू इलायची दोनों स्याह मूसली सफेद मूसली इन्द्रयव कोंचके बीज तज जावित्री वंशलोचन तमालपत्र देवदारु जायफल शालिपर्णी कटाई२काला सारिवा श्वेत सारिवा पृष्टिपर्णी मुलहठी डोडापोस्तका त्रिफला कूट उटंगन कनेरकी छाल यह सब औषध एक एक टंक लीजे४ सेर पानीसे उबालिये१ सेर पानी आय रहै तब उतार लीजे १ सेर दूध सवासेर घृत मिलाय उबालिये घृत बाकी

आय रहे तब कड़ाही उतारले २॥ टंक प्रभात समय लीजे खट्टा तुरश त्यागे धातु वढ़े ४ घड़ी बंधेज रहे ॥

त्रिफलादि घृत योगचिंतामणिसे ।

त्रिफला हल्दी दारुहल्दी गौरीसर सरसों मेदा महा मेदा प्रियंगु सौंफ हींग रक्तचन्दन अजमोद कमलगट्टा मिश्री रासना जायफल अगर मलयागिरि कायफल तवाशीर यह औषध चार चार टंक ले आठगुने पानीमें चारपहर भिगोवे पीछे कड़ाहीमें गेर उबालिये आधा पानी आय रहे तब फेर कड़ाहीमें गेर घृत २५६ टंक शतावरिका रस १२४ टंक मिलाइये पीछे मन्दाग्निसे औटाइये घृत बाकी रहजाय जब कड़ाही नीचे उतारे मिट्टीके वासनमें घृतको छान रक्खे स्त्री ऋतुके अन्तमें ३ टंक पीवे ३ दिनतक तो वह स्त्री गर्भवती हो वीर्य्य बँधे शरीर पुष्ट हो यह घृत भरद्वाज ऋषीश्वरने बतायोहै ॥

अथ पाकाधिकार ।

सौभाग्यशुंठीपाक योग चिन्तामणिसे ।

सतुवासोंठि ५ सेर लीजे कूट छान गायके घृत ५ सेरमें सोंठि सेके पीछे नीचे उतारले पीछे. कड़ाहीमें दू २५सेरध उबालिये आधा रहे तब भूनी सोंठि मिलाइये

खोवा दानेदार होय तब जायफल ८ टंक जावत्री८टंक लवंग ८ टंक त्रिफला २० टंक जीरा दोनों १६ टंक इलायची ८ टंक मिर्च ८ टंक नागरमोथा ८ टंक भीमसेनी कपूर४माशा छुहारा९फल विदारीकंद ८टंक शतावरि ८ टंक लसोढ़ा८ टंक केसर ८टंक दालचीनी ८ टंक सालिबमिश्री ८ टंक मस्तगीगोंद ८ टंक वंशलोचन ८ टंक नारियलकी गिरी तीन पाव बादामकी गिरी एक पाव चिलगोजे एक पाव पाषाणभेद ८ टंक यह औषध पीस छानकर जुदीरखिये सुगन्ध वस्तु पीसकर जुदीरखिये पाकमें खोवामिलाय पीछे काष्ठादि औषध फिर अभ्रक तथा बंग तथा सोने चांदीके तवक मिलाय ६ पैसाभरका लड्डू बांधे एक प्रभात खाय एक संध्या खाय सुन्दर रूप होय शरीरकी शोभा होय देह मुख नासिकमें कांतिहोय वीर्य्य बँधे अर्श जाय आठों प्रमेह जायँ बंध्याके पुत्र होय यह सौभाग्यशुंठी शिवजीने कही पार्वतीजीने खाई ॥ इति सौभाग्यशुंठी ॥

अथ सुपारीपाक आत्रेयमतसे ।

सुपारी चिकनी १ सेर आंवले पावसेर आठसेर पानीमें उबालिये आध सेर पानी आयरहे तब कांढ़िके छायामें सुखाइये पीछे कूटछानकर ५ सेर दूधमें गेर औटाइये कीटीकरे दानेदार होचुके तब प्यालीमें

ले मिश्री ५ सेरकी पात करै तय्यार होय तब कड़ाही नीचे उतारै पीछे यह औषध गेरै नागकेसर, चन्दन सफेद नागरमोथा धनियां त्रिकुटालोध कसेला धावेके फूल गोखरू असगन्ध शतावारि लवंग; जायफल जावित्री छोटी इलायची दालचीनी सेंधव तज पत्रज जीरा सफेद जीरा स्याह वंशलोचन यह औषध आठ २ टंक लीजे दाख बदाम [पिस्ता आध आध सेर चिरौंजी पावसेर मिश्री २ सेर रूपरस ६ टंक सोनेके तबक ५ माशे चांदीके तबक१ माशे यह सब औषध खोवा चासनीमें मिलाय १० टंककी गोली करनी प्रभात संध्या एक २ गोली खाय तो दाह तपन शूल उछाल गरमी योनिके दुःख गुदाके दुःख मुखके दुःख लोहूका पड़ना पैरका जलना धातुक्षीण प्रमेह मूत्रकृच्छ्र इतने रोगजायँ स्त्री खाय तो गर्भवती होय ॥

अथ असगन्धपाकविधि चौरासी वातके ऊपर चरकसे।

नागौरी असगन्ध३२ पैसाभर लीजे सतुवा सोंठि१६ पैसाभर पीपल१६ पैसाभर मिरच२ तोले तज१तोला पत्रज १ तोला इलायची १ तोला नागकेसरि १ तोला अकरकरा १ तोला केसर १ तोला जायफल१ तोला जावित्री१ तोला इन औषधोंको कूट छानकर घृत३२ सेर

दूध७सेरमें कौटी करे पीछे६सेर खांड़की पात करे पीछे बंग २ तोला गेरिये पीछे गोली ५ पैसाभरकी करे गोली१प्रभात १ संध्याको खाय तो ८४ वात जायँ॥

अथ छत्तीस रोगोंपर चन्द्रहासरस।

जायफल लौंग इलायची जावित्री गजपीपल दालचीनी शीतलचीनी कबावचीनी मिरच पीपल उटंगण अकरकरा धनियां हाऊबेर लसोढ़ा अजमोदा चाव सोंठि कचूर चन्दन सफेदचन्दन लाल पोस्तजड़ कौंचबीज यह औषध दश दश टंक लेना और त्रिफला देवदारु जामुनकी गुठली कीकरकी छाल कसेला कसेली मोचरस स्याह जीरा सफेद जीरा भाड़ंगी गिलोय स्याह मूसली सफेद मूसली कंकोल मिरच वंशलोचन मस्तगी कुलीजन सँभालूके पत्ते वायविडंग शंखाहुली कपूर कचरी सौंफ नागकेसरि पुष्करमूल तगर पद्माख त्रायमाण सोवाका बीज काकड़ासिंगी जवासा धमासा कटेली दोनों मूर्वा बहुफली माजूफल समुद्रसोख कायफल सिंघाड़े गोखरू धावेके फूल माईके फूल पाषाणभेद निसोत अरंडोली विजयसारकी जड़ भांग असगंध प्रियंगुके फूल मोथा अरड़ूसी गँगरेनकी छाल लोंध यह औषध दो दो पैसाभर लीजे फिर सबका सूक्ष्म चूर्ण करे अभ्रक८तोले बंग ५ तोले कस्तूरी ६माशे कपूर भीमसेनी६माशे आंबकी

छाल १ सेर बादामगिरी १ सेर मुनक्का १ किसमिस २ सेर छुहारा १ सेर खांडचीनी २५ सेर मिश्री ७ सेर बेरीजड ५ सेर गुड ६ धडी पानी २॥ मन में सब औषध दरदरी कर पानी गुड़ औषध सब मिलाय बड़ी गोलमें गेर मुखपै ढकनी दैके खामदेकर धरतीमें गाड़े महीना १ पीछे काढ़े फिर दारूकी तरह रस चुआवे पीछे शीशेमें धरराखे पैसा २॥ भर नित्य पीवे तो खाया पिया सब भस्म हो इंद्री महा दृढ़ होय वंधेज बहुत होय नामर्द मर्द होय स्त्री बहुत प्यार करे राजयक्ष्मा खूनी वादी अर्श कफ कोढ रक्त पित्त अठारह प्रमेह गल अंतर जल प्लीह पथरी वायगोला आम बात शूल ८४ वाय अकड़वाय झोलावाय गाढ़ पेट शूल पांडुरोग कमलवाय पीलिया रोग तेरह सन्निपात ये सब जायँ शरीर पुष्ट होय वांझके पुत्र होय चंद्रहासके इतने गुण कहे हैं ॥

अथ धातुवोंका अधिकार ।

सुवर्णादि शोधनविधि योगचिन्तामणिसे ।

सोना रूपा तांबा रांग जस्ते लोहा शीशा इनका पत्र गरम कर सात सात वेर एक एक वस्तुमें बुझावे यानी सातवेर तेलमें सातवेर छांछमें सातवेर गोमूत्रमें सातवेर कांजीमें सातवेर कुलथीमें बुझावे तो धातुवोंका मल दूर होवे ।

अथ मृगांक मारनकी विधि।

प्रथम सोनेके पत्र शोधन कर भोजपत्र सरीखे कराइये खरापतले सोनेके पत्रोंके बराबर पारा लीजे खरल वीच दोनोंको मर्दन करे एक मेल दोनों होजायँ तब कचनारके रससेती खरल करे फेर अग्निकालके रससेती खरल करे फिर सोनेसे चौथा हिस्सा सुहागा गेरि सात२पुट दीजे जब काजलसमान रंग होय तब सोनेसे दूने चोखे मोती लीजे यह सब पीस कजली करे फिर सब औषधके बराबर आंवलासारगंधक ले बहुत बारीक जँभीरीके रससेती मर्दन कर गोला बांधिये गोलेको धूपमें सुखाय गोलेके सात कपड़मिट्टी दीजे गोलेको धूपमें सुखावताजाय कपड़ा मिट्टी देताजाय जब कपड़ा सूखजाय तब हांड़ी मोटी लाइये आधी हांड़ी सांभर नोनसे भरिये वीचमें गोला धरिये पीछे नोनसे हांडी भरदीजे पीछे हांडीका मुख मुद्रा देकर धूपमें सुखाय हांडीको गजपुट दीजे अरने उपलेकी शीतल होय तब काढ़ लीजे सिद्ध हुए पीछे रत्ती १ मृगांक मिर्च ६ वा पीपल २ से दोष देखिये रत्ती १ मृगांक पीपल घृत शहद संग दीजे पथ्य उड़दकी दाल खीर सुहाग समेत दीजे मृगांक इतने रोगोंको दूर करे श्लेष्मा रोग खयन राजयक्ष्मा कास श्वास मंदाग्नि विषमज्वर धातुक्षय और शरीरको स्थूल करे ॥

उपाय सत्त्वछोडनेका ।

गुड़ गूगुल पवांडवीज लाव सुहागा छोटी मछली यह सममात्रा लेके धातुपै गेरे फूकनीसे धुमाता जाय धातुसत्त्व निकले ॥

अथ रससिंदूर पारा मारनकी विधि ।

क्षीणपुरुषको नामर्द नपुंसक धातुक्षीण ऐसे पुरुषको पारा बड़ा गुण करै महादेवका बताया संसारमें रसायन है ॥

प्रथम पाराशोधन विधि ।

प्रथम पारेको घीकुवांरके पत्तेमें ४ पहर खरल करै पुनि ४ पहर चित्रकके काढ़ेमें खरल करै फेर खरलमें गेर ४ पहर मर्दन करै तो पारा शुद्ध होय ॥

चार रसका शोधा व जुदाजुदा गुण ।

घीकुवांरके पट्ठेमें ४ पहर मर्दन करनेसे पारेकी सातकांचली दूर होयँ चित्रकके काढ़ेमें खरल करनेसे पारेका जिस्मी दाह सब दूर हों अंकोलके रसमें खरल करनेसे पारेका विष दूर होय अमलतासके रसमें खरल करैसे पेटकी सब व्यथाको दूर करै ॥

पारा पंख दूर करना और मुख करनेका इलाज ।

आकका दूध ३ पाव थोहरका दूध २ पाव धतूरे-

का रस तीन पाव कलिहारीकी जडका रस ४ पाव कनेरका रस ५ पाव चिरमटीका रस ६ पाव अफीम ७ पाव यह सात उपविष हैं इनमें पारा जुदा२ मर्दन करै पारेकी पंख छेडीजाय फेर पारा उडन पावे नहीं पारेके मुख होय तिस मुखसे धातुको ग्रसै ज्वरको हरै ॥

पारा मारन विधि ।

पारा १ भाग आंवलासार गन्धक २ भाग खरल करै काजल समान रंग होय तव आतसी सीसीमें कजली भरिये सीसीके मुखमें ईंटका टुकड़ा दीजे मुहडेमें सीसीके गाढ़ी मुद्रा दीजे सात कपडमिट्टी सुखाय २ दीजै पीछे ठीकरा वालू रेतसे भरिये अधवीचमें सीसी धरिये सीसीके ऊपर वालूका रेत दीजे नीचे लकडीकी आंच २७ पहरकी दीजे तीन सीसियोंमें पचाइये सीसीके मुहड़े पर जो रस हो उसे अविसी रस कहिये हिंगलू वर्ण समान लाल रंग होय तिस रसको २ रत्ती पानमें दीजै ऊपर दूध मिश्री पिलाइये इस पारेके ऐसे लक्षण लिखे हैं इसको प्रमेह श्वास कास नपुंसक क्षीणता गतवीर्य्यवालेको दीजे तो यह सव रोग दूर होयँ॥

अथ सर्व धातुका गुण ।

मृगांकमें १००गुण रूपरसमें ८ गुण सारमें ४० गुण वंगमें ६४ गुण ताम्रेश्वरमें ३२ गुण अभ्रकमें १०००

गुण हीरेमें १०००००००कोटिगुण पारेमें अनन्त गुण शुद्ध पारा जो कोई मनुष्य खाय तिसको वह महा अवगुण करै १८ कोढ़ २० प्रमेह तथा दाह व गरमी करै सब शरीरमें फूट निकले ॥

पारा भस्म करनेकी विधि योगमतसे।

पारा ४ टंक आंवलासार ४टंकवड़के दूधमें मर्दन करै पीछे मिट्टीके ठीकरेमें पचाइये वड़का दूध गेरता जाय बड़की लकड़ीसे चलाता जाय ठीकरेके नीचे मन्दाग्नि दीजे १ दिन ताईं पारा भस्म होय वह पारा २ रत्ती नागरपानमें खाय शरीर पुष्ट होय भूख वहुत लगै ॥

अथ रसकपूर करनेकी विधि।

पारा फिटकरी हीराकसीस सेंधवनोन नवसादर यह सब औषध सममात्रा ले खरलमें गेर घीकुवांरके रससे ४ पहर मर्दन करै पुनि सब औषध हांडीमें गेर मुखमें गाढ़ी मुद्रा हांडीके देकर तेज अग्नि दीजे दो पहर रस-कपूर सिद्ध होय ॥

अथ शिंगरफमेंसे पारा काढनेकी विधि।

हिंगलूको नीबूके रसमें नीबूके पत्तोके रसमें नाग-रपानके रसमें १ पहर मर्दन करै पूर्ववत् डोलका यंत्र कर पारा काढ़िये सो पारा सबही काममें आवे यह पारा काढ़नेकी विधि कही ॥

अथ हरतालमारनकी विधि ।

बुगदादी चोखी हरतालका खण्ड खण्ड करे हरतालके खण्डको दोलका यंत्रकर १ पहर कांजीमें फिर और १ पहर त्रिफलाके काढ़ेमें औटाइये पीछे हरतालका चूर्ण कर पेठेके रसमें खरल करे पीछे तिलके तेलमें हरतालको चूर्णकर भस्म करिये हरताल दोष न करे पीछे हरतालकी पोटली बांध मिट्टीके बासनमें दोलका यंत्रकर कांजीमें पचाइये १ पहर पीछे पेठेके रसमें १पहर तिलके तेलमें १ पहर इतना करे तो हरताल शुद्ध होय ॥

अथ नाग तांबेकी विधि ।

मोरका चांद पंख और केश २हजार लाइये जलाकर राखकर मोटे मटकेमें रखिये२ अथवा ३ दिनतक फिर २०टंक राख और घृत२टंक गुड़२ टंक सरसों २ टंक गूगुल २ टंक छोटीमछली२ टंक ऊन२ टंक सुहागा २ टंक सज्जी२ टंक चिरमटी २ टंक पीपल२टंक लाख २ टंक यह सब भी इकट्ठा करे फिर १ हाथ चौडा १ हाथ गहरा गढा खोद कोइलोंसे भरिये ऊपर उसमें मोरपंखकी राख गेर ऊपर औषध जलाता जाय सब औषध शीतल होय जिसमेंसे कन निकले सो उठायलीजे तांवा लेकर गलाय उस तांबेका छल्ला गढ़ा अंगुलीमें रखिये कुमल खाया होय सांपने डसा होय जहरमोहरा

खाया होय संखिया खाया होय सो जाय इस नाग छल्लेसे किसीकी बाधा होय नहीं ॥

अथ सोनामक्खीके शोधनकी विधि ।

सोनामक्खी प्रथम शहतमें पीछे कुलथीके काढ़ेमें अथवा वन्दरके पेशावमें मर्दन कर डोलका यंत्रकर पचाइये सोनामक्खी टंक २ सेंधानोन टंक २ बिजौरेके रससेती अथवा नींबूके रससेती लोहेकी कडाहीमें पचाइये नीचे अग्नि दीजे ऊपरसेती रस निचोडता जाय आंच सेवरी दीजे कडाही लाल होय तब सोनामक्खी शुद्ध होय पीछे सोनामक्खीका सार काढिले तब बहुत शुद्ध होय ॥

अथ संखिया शोधन विधि ।

संखियाकी डलीको कपडेमें बांधकर दोलकायंत्रकर पेठेके रसमें पचाइये २ दिनताईं पीछे चौलाईके रसमें उवाल दोलका यंत्रमें पचाइये पहर १ में संखिया शुद्ध होय सब कामर्मे आवे ॥

अथ गन्धक शोधन विधि ।

लोहपात्रमें घृत गेर गरम करे घृत गरम होजाय तब गंधक दरदरी कर गेरिये जब गन्धक गलजाय तब दूधमें गेरिये जब जमजाय तो काढलीजे वह गन्धक सबही काममें आवे ॥

अथ शिलाजीतके सत्त्वकी विधि।

शिलाजीत मँगवाय गायके दूधमें घोलकर सुखायलीजै पीछे त्रिफलाके रसमें मर्दन करै १ पुट देकर धूपमें सुखायलीजै पीछे शिलाजीतको लेकर भांगरेके रसमें मर्दन करै पीछे दूधकी पुट दे धूपमें सुखायदीजै इस भांति शिलाजीत शुद्ध होय सब काममें आवै ॥

शुद्ध शिलाजीतकी परीक्षा।

अग्निपे शिलाजीत धरे धुआं नहीं निकले तो शिलाजीत शुद्ध जाने ऐसा शिलाजीत सब काममें आवै इलायची छोटी पीपल शहद इसके साथ १ मासा खाय तो बहुत गुण करै मूत्ररोग पथरी प्रमेह राजयक्ष्मा इन सब रोगोंको दूर करै यह शिलाजीतसत्त्वकी विधि कही ॥

अथ तेलिया शोधनविधि।

मीठा तेलिया १ पैसाभर तीन पाव दूधमें उवालिये जब दूध गाढ़ा होय तब मीठातेलिया काढ़ गरम पानीसे धोवै ऐसे मोहरा शुद्ध होय पीछे चाकूसे टुकड़े कर धूपमें सुखाय धरराखे सब औषधोंके काममें आवै ॥

अथ अशुद्ध मृगांकके अवगुण।

बल हरे वीर्य हरे रुधिरविकार करै ॥

अथ अशुद्ध रूपेके अवगुण।

पेट बंध करै इन्द्री हीन होय शरीरमें महारोग करै॥

अथ अशुद्ध तांबेके अवगुण।

कंठशोष हो सब धातुको नाशै अनेक रोग करै शरीरकी कांति हरै विरेचन वमन करै ॥

अशुद्ध सारका अवगुण।

आयु हरै मूर्च्छा करै वीर्य हरै ॥

अथ अशुद्धशीशेका अवगुण।

अशुद्ध शीशा और बंग दुष्ट गोला करे कोढ़ संग्रहणी प्रमेह शूल श्वास पांडुरोग इतने रोगोंको करे ॥

अथ कच्चे अभ्रकका अवगुण।

अग्नि मन्द करे कृमिरोग संग्रहणी प्रमेह श्वास इतने रोग करै ॥

अशुद्ध गन्धकका अवगुण।

वल हीन करै पेट भारी कब्जता करै रुधिर प्रकोप करै वीर्य्यको हरै ॥

अथ सोनामक्खी रूपामक्खीका अवगुण।

अग्नि मन्द करे वलहानि होय पेट बंध करै आंख दूखे कोढ़ कंठमाला करै ॥

अथ अशुद्ध हरतालके अवगुण।

पेटमें कब्ज करै दाह करै शरीर बिगडे कंठ सूखै वमन करै विरेचन करे ॥

अथ अशुद्ध तेलियाका अवगुण ।

उकलेद करै कंठ सूखै दाह करै वमनकरै हाथ पैर फूटै।

अथ कच्चे अजयपालका अवगुण ।

उकलेद करै कंठ सूखे दाह करै विरेचन करै सोफ करै देह व्याकुल करै आंखोंमें खाज करै इतने अवगुण करै॥

इति श्रीरामचन्द्रविरचित रामविनोदमें वचनका वंधेज आधा
शीशी प्रतीकार घुंघता उपाय मस्तक उपाय शीताङ्ग अंगरोग
मृगीका उपाय जानवा डमरू हड़किया श्वानविप उपाय
सर्पवृश्चिक विप उपाय शस्त्रघाव उपाय धरा डिगीका उपाय
बालकके अतीसारका उपाय बालचिकित्सा जलपीड़ा
निद्रा आवना मुखदुर्गन्धि उपाय दांतरोगकी मिस्सीके सा-
धनका उपाय केशकल्प केश जातेरहें तिसका उपाय
केश दूर करने का उपाय आगके जलेका उपाय
नारायण तेलका उपाय लाक्षादि तेल वृद्धिमारि-
चादि तैल गंडमालाको तैल पड्बिन्दुतैल केश न
टूटे तिसका उपाय कल्याण घृत त्रिफलादि घृत
अमलादि घृत सौभाग्यशुंठीपाकना रेलपाक
मृगांक आदि सब धातुका भस्मीकरण
उपाय धातु उपधातु विप उपविप संखिया
इत्यादि तब जिगर शोधेके अवगुण शो-
धन मारण शुद्ध अशुद्ध गुण अवगुण
कथननाम षष्ठ अधिकार समाप्त।

अथ सप्तमाधिकार प्रारंभ ॥

वृद्ध और मरन मोदक ।

जायफल ४ टंक जावित्री ४ टंक लवंग ४ टंक मस्तंगी ४ टंक सालम ४ टंक वंशलोचन ४ टंक दालचीनी ४ टंक इलायची छोटीके बीज४टंक चाबचीनी ४ टंक शीतलचीनी४टंक खस ४ टंक बड़ी इलायचीके बीज ४ टंक तिल १ टंक तमालपत्र१टंक असगन्ध १टंक संबलकी छाल १ टंक शतावरि१टंक कायफल १टंक केलाकन्द १ टंक कचूर १ टंक धतूरेके बीज १ टंक धनियां१ टंक मिरच १ टंक, भारंगी१टंक मुलेठी १ टंक मोचरस १ टंक पीपल १ टंक काकड़ासिंगी१ टंक पुष्करमूल १ टंक पीपलामूल१टंक गोखुरू१टंक जीरा स्याह सफेद १ टंक कौंचके बीज १ टंक गजपीपल १ टंक मूसली १ टंक नागकेसर१टंक सिंहाडे १टंक गंगेरनकी छाल१टंक अनारदाना१टंक यह सब औषध सूक्ष्म कर कपड़छान करना गोला२५ टंक बादामगिरी २७ टंक छुहारा २० टंक चिरौंजी२०टंक चिलगोजे२०टंक अफीम २तोले भांग७॥सेर दूध५सेरको खोया करे तिसमें भांग पीसके छिटकायदीजे सीरासमान गाढ़ा होय तब घृत गेरके दानेदार खोया करना पीछे कडाही उतारले खांड पांचसेरकी पात करे पक्की

पात होय तब खोया चूर्ण सब मिलाइये ऊपरसे मेवा मिला लड्डू पांच पैसाभरके बाँधे एक लड्डू नित्य खाय ऊपर दूध मिश्री पीवै तो धातुवृद्धि होय देह बहुत पुष्ट होय वृद्ध पुरुष जवान होय रूप बहुत होय इस मदनमोदकमें इतने गुण कहे हैं ॥

कामकौतूहलगुटिका योग-चिंतामणिसे ।

कौंचके बीज कुलींजन तमालपत्र पीपल कबाबचीनी जावित्री इलायची गोखरू चम्पेके फूल मस्तंगी यह आठ आठ टंक जुदी २ लीजै लवंग १ पैसाभर कस्तूरी १ पैसाभर कपूर ८ मासे सब औषध पीस छानकर ऊपर कपूर कस्तूरी सब गेरिये केसरके रससेती बांधिये बागीबेरप्रमाण व्यालू करके संध्याको १ गोली खाय पुरुष स्त्रीको कामकौतूहल बहुत करावै १ पहरका बंधेज करे यह गुण है ॥

बन्धेजको सिंहवाहनी गोली ।

केसर १टंक लवंग१टंक जावित्री१टंक जायफल १ टंक खपरिया १ टंक अजमोद १ टंक माजूफल १ टंक समुद्रशोप १ टंक मोठकी जड़ १ टंक मस्तंगी १ टंक कुचला१ टंक अफीम१टंक शिंगरफ १ टंक वत्सनाग १ टंक कस्तूरी २ मासे कपूर २ मासे सब औषध पीस

छान शहतमें गोली बांधै वागीवेरप्रमाण सन्ध्याको १ गोली खाय ऊपर दूध पीवै फिर नागरपान खाय स्त्रीके संग बहुत सुख पावै बहुत प्रेम करै १ पहर बंधेज होय ॥

धातुक्षीणका उपाय ।

गोखरू विदारीकन्द कुलींजन शतावरि एक एक पल जुदी जुदी लीजै कौंचबीज उटंगनबीज इलायची पीपल रक्तचन्दन नागकेसर मूसली छड गिलोय वंशलोचन यह औषध चार चार टंक जुदी जुदी लीजै इनका सूक्ष्म चूर्ण कर संबलके रसको २१ पुट देकर धूपमें सुखावै डाभके रसकी२१ पुट दीजै सर्व चूर्णके बराबर मिश्री लीजै ५ टंक इस चूर्णको नित्य लेना वीर्य्य बँधै मूत्रकृच्छ्र जाय ॥

नामर्दका उपाय योगचिन्तामणिसे ।

तालमखाना गोखरू शतावरि गंगेरनकी छाल काचके बीज खरैंटी यह औषध बराबर लीजै ४ टंक रातको सेवन कर ऊपरसे दूध मिश्री पीवना धातुकी वृद्धि होय बल बढे मैथुन वारवार करै ॥

गतवीर्य्यका इलाज ।

अफीम एक तोला पीपल अकरकरा जायफल जावित्री इलायची धतूरेके बीज केसर दालचीनी मोचरससोंठ नागकेसर यह औषध नागरपानके रससेती एक पहर

खरल कर गोली चनेप्रमाण बांधिये संध्या समय एक गोली नित्य खाय ऊपरसे दूध मिश्री पीवे अर्द्ध प्रहरका बंधेज होय धातु पुष्ट होय ॥

अथ हथरससे नामर्द होय तिसका उपाय ।

गोखुरूचूर्ण २ टंक स्याह तिल २ पैसाभर दूध १ सेरमें तिल औटाइये कीटी कर महीनेताईं संध्यासमय खाइये हथरसका दोष मिटे इन्द्री सचेत होय ॥

पुनः हस्तकर्मकर इन्द्री नर्म पडगई होय वन्द कुशाद स्त्री संगति करके नर्म पडी होय तिसका उपाय अमृतसागरसे ।

अकरकरा१ टंक केसर २ टंक जायफल२टंक लौंग ३टंक शिंगरफ६टंक अफीम२टंक ले गोली छोटे वेरप्रमाण बांधिये १गोली संध्याको लेनी ऊपरसे दूध मिश्री पीवना बंधेज घड़ी चारका हो हथरसदोष मिटै ॥

पुनः चमत्कार वन्धेजका अद्भुतसागरसे ।

लाल सफेद कनेरकी कली२सेर१सेर धतूरेके बीज४ सेर वड़ी कटाईके फल २ सेर नींवकी निवौली१ सेर कौंचके बीज १सेर वैंगनके बीज सब जुदे जुदे पीस कपडछान कर२०सेर दूधमें औषध छिटकायदीजे पीछे खूब औटाइये ठंढा कर रातको जमायदे प्रभात बिलोय घी काढ़लेना हाथ पैर टूंडीमें ४ माशे मर्दन करै मर्दन

करते समय धरतीपर पैर न रक्खे शय्यापै राखै चतुर पुरुष होय सो यह उपाय करे १ घड़ीका बन्धेज होय॥

वीर्य्यस्तम्भनको लेप अद्भुतसागरसे ।

कड़वी तोरईके बीज पानीसेती पिसाय पैरके तलवेमें दो घड़ीतक लेप करै और शय्याके नीचे पैर धरे नहीं जितनी देर शय्यासे पैर धरे नहीं तितनी देर वीर्य्य गिरे नहीं धरती पर पैर धरतेही वीर्य्य गिरै ॥

पुनः वन्दकुशादको लेप मनोरमासे ।

पारा १ टंक आंवलासार १ टंक मैनशिल १ टंक शुद्ध संखिया १ टंक सुहागा तेलिया १ टंक हरताल तबकिया १ टंक पीस छानकर घृतमें औषध मिलायके महीन कपड़ेके ऊपर औषधका लेप करै पीछे उस कपड़ेको लपेट बत्ती करै उस बत्तीमें लम्बा डोरा बांधिये पीछे बत्तीसे बिलाद ऊंचा राखिये पीछे बत्तीमें अग्नि लगाइये नीचे कांसेका कटोरा वा प्याला धरिये घृत सब कटोरेबीच झड़पड़े वह सब घृत इन्द्रीपर मर्दन घड़ी दो तक करे वन्दकुशाद रोग दूर होय हथरसका विकार मिटै इन्द्री दृढ़ होय ॥

लिंग शिथिल होय तिसका उपाय योगचिन्तामणिसे ।

थूहर चाब असगन्ध नागकेसरि कटाईके फल धतूरके बीज यह सब औषध बराबर महीन कपड़छान

कर पानीसेती पीस संध्याको इन्द्रीपर मर्दन करे ७ दिनतक यह औषध लगावे तो लिंग पुष्ट होय ॥

पुनः शिथिलताका लेप ।

गायके घृतसे संवलका गोंद इन्द्रीपे मर्दन करे ७ दिनतक लिंग दृढ़ होय ॥

लिंगपीडाको लेप राजमार्त्तण्डसे ।

इन्द्रायणकी जड़ बैलके पेशावसेती घिसकर इन्द्रीपर लेप करे लिंग दीर्घ होय लिंगपीड़ा जाय ॥ इतनी पुरुषकी चिकित्सा कही ॥

अथ स्त्रीचिकित्सा-भगसंकोचनका उपाय।

माजूफल फिटकड़ी धतूरके बीज धावेके फूल पानीसेती गोली करे योनिमें दोपहर रक्खे योनि भीडी होय ॥

वत्ती जेचूड ग्रन्थसे ।

जामुनकी गिरी त्रिफला हीराकसीस धावेके फूल सब बरावर लीजे पानीसेती पीस वत्ती बनाय योनिमें राखिये योनि बहुत भीडी होवे ॥

पोटली योगरत्नावली ग्रन्थसे ।

तोरईके बीज फिटकडी धावेके फूल यह सब औ-षध सममात्रा ले कूटछान पतले कपडेके बीच पोटली कर योनिमें राखिये तो भगसंकोचन बहुत होय ॥

योनिसे पानी छूटै ताका उपाय सारोद्धारसे ।

त्रिफला ३ पैसेभर पानीमें भिगोय राखै हीराकसीस फिटकड़ी २ पैसेभर महीन पीसकर पतला कपड़ा एक हाथसे त्रिफलेके पानीमें औषध मिलाय उस पानीसे कपड़ेको ८ पुट देना अंगुली बराबर कपड़ेकी वत्ती कर योनिबीच रखिये अति कठिन होय ॥

योनि वडी करनेका उपाय माधवग्रन्थसे ।

नारियलकी गिरी लीजै तिसका घृत कढ़ाय नाभिबीच लेप करै योनि वड़ी होय ॥

देह सुगन्ध करनेकी धूप चिन्तामणिमतसे ।

चन्दन सफेद केसरि इंद्रयव कूट लवंग देवदारु कमलगट्टा यह औषध बराबर लेकर दूधसे पीस गोली करै गोलीकी धूप भगमाहिं दीजै यह धूप मनुष्यको वश करै देहकी दुर्गंध दूर होय ॥

लेप सुश्रुतसे ।

नींबूके पत्ते धतूरेके पत्ते नागकेसरि अर्जुनवृक्षकी छाल देवदारु सब औषध बराबर ले सूक्ष्म पीसकर इनका काढ़ा करै भगको इस काढ़ेसे धोवै जब भोगसमय स्त्री द्रवजाय तो महासुगन्ध होय ॥

अथ स्त्रीद्रवनका उपाय सारोद्धारसे ।

घूंघरवेल शहदसेती पीस योनिमें लेप करै भोगसमय स्त्री द्रवजाय ॥

अथ गर्भपातनका इलाज ।

तूंबेकी जड़१पैसाभर गुड़ पुराना२ पैसाभर पावसेर पानी हांडीमें गेर औटाइये४पैसाभर पानी आय रहे तव पीवे ३ दिनमें गर्भपातन होय । खारी खट्टा खाय नहीं अथवा काले तिल पैसाभर गुड़ पुराना १६ पैसाभर तीन काल पीवना गर्भपातन होय ॥

अथ योनिशूलका उपाय ।-

कपासके पत्ते पीस गोली कर भगमें राखे योनिका शूल मिटै ।

कुच कठिन होनेका उपाय सारोद्धारसे ।

असगन्ध कूट गजपीपल कनेरकी जड़२टंक पानीमें रातको भिगोयराखे प्रभात उठके पीसलीजै माखन घृतसेती मर्दन करे पीछे कुचपे लेप करे कुच कठिन होयँ।

कुच प्रफुल्लितका उपाय वृन्दसे ।

गेहूंका चून चीनीखांड़ सोवा तीनों पीस छानकर गऊका घृत सव वरावर लीजै आधसेरके दो लाडू करके कुचमें १९ दिनतक वांधे तो कुच कठिन होयँ ॥

स्त्रीके दूध न उतरे तिसका उपाय ।

१सेर दूध तथा छांछ लेकर। ॐ दमूंदनी

कुरुरस्वाहा ॥ इस मंत्रसे दूध तथा छांछ २१ वेर मंत्रिये तो कुचमें दूध बहुत उतरे बालक पुष्ट होय ॥

स्त्रीका कुच पकजाय तिसका उपाय वैद्यवल्लभसे ।

गऊकी छांछमें ज्वार रांधकर गरम सुहावती कुचमें बांधै पाके फूटै दुःख दूरि होय ॥

कुच ऊपरगांठि होय तिसका उपाय ।

ब्रह्मदंडीका पंचाङ्ग लीजे स्याह जीरा लीजे दोनो सममात्रा ले पीसके प्रभात फंकी लीजे कुचगांठि अच्छी होय ॥

कुचके ऊपर छिद्र होयं टांकी हो तिसका मलहम ।

रालको बारीक पीसीके चोगुणा गौका घृत बहुत गरम करके राल गेरि सोटेसे मथिये पीछे ये दवाई गेरिके मथिये मुर्दाशंख नीलाथोथा पीछे हुक्केके पानीसे धोय मलहम लगावे तो कुचका दुःख मिटै ॥

अथ कांखोलाई गांठिका उपाय ।

स्याह जीरा मिर्च आकके दूधमें पीसिके लेप करे कांखोलाई दूरि होय ॥

कांखोलाइ (बगल) गांठिका मंत्र ।

ॐ नमो आदेश गुरुको वनमें व्याई बांदरी जिन हनुमन्त ॥ बदर थणेला कांखोलाई ये तीनों

भस्मन्त गुरूकी शक्ति मेरी भक्तिॐ ह्रीं जः जः जः ठः ठः ठः। इस मंत्रसे उपलेकी राख ७ दिनतक चांकजे मुखसेती मंत्र पढ़के सातवार दिनमें दो वेर ७ दिनतक काँखोलाई वद थणेला अच्छा होय ॥

अथ जिस स्त्रीका फूल गया होय तिसका उपाय वृन्दसे।

पीपल मेनफल गुड़ कीकरकी छाल दात्यूणी जवाखार यह सब बराबर लीजै सूक्ष्म चूर्ण कर गोली बना योनिमें पांच वेर धरे तो फेर फूल आवे ॥

पुष्प दूरकरणका उपाय वाग्भट्टसे।

सोना गेरू ३ टंक वासी जलसों ऋतुसमय ६ दिन तक पीवे इस प्रकारसे फूल उपाय जानो ॥

ऋतुनाशन उपाय वैद्यविनोदसे।

टेसूके फूल ९ टंक महीन चूर्ण कर गायकी छांछसेती ४ दिन पीवे इस रीतिसे स्त्रीके गर्भ नहीं होय ॥

गर्भनाशका उपाय वाग्भट्टसे।

सरसों संत्रलके फूल इन दोनोंका काढ़ा करि पीवे तेल गेरिके ६ दिन ऋतुसमयमें तो स्त्रीके गर्भ कभी न होय ॥

अन्य उपाय वैद्यवल्लभसे ।

मिश्री चावल नागकेसरि २ पैसाभर ठंढे पानीसे तथा गोदुग्धसे वा बकरीके दुग्धसे ७दिनतक पीवे तो गर्भ न धारे ॥

गर्भ जाता होय तिसका उपाय वैद्यसारोद्धारसे ।

मिश्री२पैसाभर इसवगोल१पैसाभर ठंढे पानीसे पीवै ७दिनतक तो झरतो गर्भ रहजाय दिनमें दोवार पीवै ।

अन्य उपाय शार्ङ्गधरसे ।

नेत्रवाला चन्दन सफेद मिश्री ये तीनों वरावर ले२ टंक ७ दिन तक ले गर्भ थंभै ॥

अधूरे गर्भको गण्डाका मंत्र ।

ॐ वांधो सरुवो वांधूंजाय वांधूंमें सवही वणराय वांधूं नदी वहतो नीर वांधूं सवको ढका शरीर हाड़की वींधन वींधन हड्डीमेंका वाण वांध २ रक्तियावीर अमुकाकी गर्भ देगतजानगुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ॥

अन्य उपाय शार्ङ्गधरसे ।

छोटी इलायचीके वीज जायफल तज तमालपत्र वधायरा सफेद जीरा लौंग मुलेठी ये सव औषध वरावर लेना इन सवके वरावर मिश्री लीजे चूर्ण टंक ४.दूधसेती लेना छोड़ गर्भ होय सो वृद्धि होय ॥

अथ मृतवत्साका उपाय योगचिन्तामणिसे ।

(मास ६ का तथा वर्ष १ का तथा वर्ष २ का तथा वर्ष ३का तथा ४ का तथा ५ का बालक होयके मरजाय सो मृतवत्सा है)

छोटी इलायचीके बीज पद्माख पित्तपापड़ा नेत्रवाला हल्दी देवदारु वच चित्रक हर्रे एलुवा पीपल कचूर बायविडंग अजमोद कसुम्भा रसोत सब बराबर लेकर चूर्ण करै शीतल जलसे एक मासा चूर्णलीजै गर्भ रहे तबताईं लीजै प्रभातसमय प्रथम गर्भमासमें १ माशा चूर्ण दीजै दूसरे मासमें २ तीसरेमें ३ चौथेमें ४ पांचवेंमें ५ छठे मासमें चूर्ण दीजै नहीं मृतवत्सा दोष मिटै बालक जीवै ॥

अन्य उपाय अर्णवग्रन्थसे ।

लवंग छोटी इलायची मिर्च जायफल अजवायन अजमोद इन्द्रायणकी जड नवसादर अतीस तुलसीके बीज पीपल खपरिया हल्दी सिरसके बीज सुहागा बिडनोन कचनोन सोंचरनोन चित्रक बीजबोल एलुआहींग सोनामक्खी सब औषध बराबर ले मनुष्यके पेशाबसे पीसकर मिर्चप्रमाण तथा चनेप्रमाण गोली करै बालकको धरतीमें पड़तेही घूँटी दीजै दिन २१ तक मृतवत्साका दूषण मिटै कुक्षिरोग जाय ॥

अथ नालपरावर्तकी चिकित्सा ।

जिस मनुष्यके बेटीहीका जन्म हो तिसके बेटा करना हो तिसको,नालपरावर्त कहिये । जब स्त्रीके मास दोयका गर्भ होय पीछे ६१ दिन ६२ दिन ६३ वें इन तीन दिनोंमें नालपरावर्तका उपायकरे भांगके बीज मासे ३ निगलजाय फिर दिन ८१ दिन ८२ दिन ८३में मासे दो दो निगले बेटीसे बेटा होय ॥

अन्य उपाय भावप्रकाशसे ।

निंबूकी जड़का रस काढ़के चावलके पानीमें मिलाय ऋतुस्नान करके तुरत पीवे बेटीसे बेटा होय ॥

अथ कष्टी स्त्रीका इलाज राजमार्तण्डसे ।

काली अंधारीकी जड़ वा सहदेईकी जड़ चौदशके दिन लीजे गूगुलकी धूनी देकर बांधिये स्त्री कष्टसे तुरंत छूटै॥

अन्य उपाय सारसंग्रहसे ।

स्त्री जब कष्टी होय उस स्त्रीका नाम लेकर ऊंगाकी जड़ ले गूगुलकी धूनी देकर कमरमें बांधे कष्टी स्त्री तुरत छूटे ॥

अथ कुक्षिरोगकी चिकित्सा बालतंत्रग्रंथसे ।

बांझ स्त्रीके तीन भेदहैं एक तो जन्मबांझ दूसरी कोखबांझ तीसरी मृतवत्सा जन्मबांझके कभी पुत्र होय नहीं पूर्व जन्मके योग करके तिसको जन्मबांझ कहिये १. ...के शापसे अथवा ऋषीश्वरके शापसे संतान

होय नहीं सो स्त्री कोखवन्ध्या कहिये गुरूके शापसे मृतवत्सा होय है ॥

अथ पेट शुद्धकरनेका उपाय राजमार्त्तंडसे ।

खांड १० टंक निसोत छाल २ टंक जमालगोटा १ टक दूधसेती तीन दिन तक पीवे ऋतुस्नान करे दूध-भात खांड पथ्य देना प्रभात शाम कोठा शुद्ध होय ॥

अथ योनिशुद्धका उपाय ।

छोटा वेंगन ले गऊके घृतके वीच तीन फाड़ करे तिस पीछे आंवलासार गन्धक पीस फाडमें बुरकाइदे फेर भगमें ३ दिन बांधिये योनि शुद्ध होय ॥

अन्य उपाय ।

मोथी चना दोनो भूनकर पोटली करे ऋतुके समय पोटली भगमें रक्खे ३ दिन तो योनि शुद्ध होय ॥

अथ संतानका उपाय वृन्दसे ।

शंखाहुली मयूरशिखा नागकेसरि यह तीनों बराबर पीस चूर्ण करे टंक तीनकी गोली गायके दूधसे लीजे खटाई न खाय भर्त्तासे संग करे स्त्रीके गर्भ रहे॥

अन्य उपाय वैद्यसर्वस्वसे ।

भांगके बीज अनवेध मोती मोरसिखा ऊंटकटेली जायफल जीरा सफेद २ टंक लीजे ये औषध पीसछान कर पुडिया ७ बराबरकी बांधे ऋतुस्नानके पीछे सात दिन ताईं गायके दूधसेती लीजे अलोना खाय खीर बूरा भोजन दीजे पुत्र निश्चय होय ॥

अन्य संतानका उपाय वैद्यवल्लभसे ।

नागकेसरि गोरोचन असगन्ध ये सब एक कर पीस७ पुड़िया बांधिये ऋतुस्नान पीछे गायके दूधसे पुडिया२ नित्य ले खीर चूरमा खाय गर्भ रहे पुत्र निश्चय होय॥

अथ नाडीपरीक्षा वृन्दसे ।

भली सुबुद्धि कर सरस्वतीको याद कर शुद्ध चित्त आनन्द हित करके प्रगटजीवकी परीक्षा करेहैं धन्वंतरिको नमस्कार करके पित्त १ श्लेष्म२ अनिल ३ देखकर इतनी नाडी पहिचानिये कटुक तीक्ष्ण गरम चिकना रूखा इस प्रकारकी नाडीकी खबर पडे ॥

पित्तनाडीके लक्षण ।

काककी चाल मेड़ककी चाल कुलंगकी चाल पित्तके कोंपकर नाडी ऐसी चले खीरा खरबूजा खिरोट खारा फल खायेसे नाडी पित्तके घर होय ॥

वातनाडीके लक्षण ।

सर्पकी चाल जोककी चाल हो यह वात नाडीके लक्षण हैं ॥

श्लेष्मनाडीके लक्षण ।

मोरकी चाल वटेरकी चाल कबूतरकी चाल ॥

त्रिदोपनाडीकी चाल ।

जिसतरह पानीमें मछली तड़फडाय तैसे सन्निपातकी नाडी चलै अथवा तीरकी तरह चले ॥ इति ॥

नाडीके आठ भेद ।

भारी१खेद २ मल३पित्त ४ चिहा ५कुरीकुरी चिह्न ६जलन७शीतलता८इनके लक्षण भिन्न २कहेहैं मलकी और पित्तकी नाडी व्याकुल होय शिथिलकी नाडी मंद होय पित्तदग्धकी नाडी माड़ी वन्ध शिथिल होय देह की शोभा घटे इतने पित्तदग्ध नाडीके लक्षण कहे ॥

वातदग्ध नाडीके लक्षण।

चंचल होय लोहू विकारकी नाडी गरम होय इस तरह सबकी देखिये नाडी पित्त पंगुलहै कफ पंगुलहै मल धातु पंगुल है यह सब वायुके बलसे चलेहैं पवन मेघको खेंच लेजाय तैसे वायु सबको खेंच लेजाय काम क्रोधसे वायु होय वायुसेती पीडा होय पीडासे क्षीण शरीर होय ॥

पित्तनाडीके विकार ।

पित्तके विकारसे स्वरभंग होय भूख मंद होय कंठ सूखे धातु क्षीण होय पित्तसे पीला अंग होय इतने पित्तनाडीके लक्षण कहे ॥

वायुके लक्षण ।

क्रोधसे उद्वेगसे कामसे चितासे भयसे धातुक्षय और मंदाग्निसे नाड़ी मंद चले वायुले नाड़ी झकोरा खाती चले देह कँपे शिथिलता होय ये वायुके लक्षण हैं ॥

कफचेष्टाके लक्षण ।

कफवालेकी नाड़ी हंसकी चाल चले जब नाडी हंस-की चाल चले कफके घर कहिये सुखी पुरुषकी

अन्य संतानका

नागकेसरि गोरोचन

पुड़िया बांधिये ऋतुस्नान

नित्य ले खीर ३८ ।

अथ

भली सुबुद्धि कर

आनन्द हित करके

को नमस्कार करके पित्त १

इतनी नाडी पहिचानिये क

रूखा इस प्रकारकी

।

काककी चाल भ

कोंपकर नाडी ऐसी चले

फल खायेसे नाडी ५

सर्पकी चाल

लक्षण हैं ॥

मोरकी चाल बटेर

जिसतरह पानीमें

तकी नाडी प

दोय शरावका एक प्रस्थ होय अंजिलिके ६४टंक शराव टंक १२८प्रस्थके टंक२५६आढक चार प्रस्थका होय चार आढकका एक द्रोण भारका मान इतने पलोंका होय ६०९६ सो पलकी एक तुलाका मान है दोय मनकी एक सूर्यकी कहिये चारि मनकी एक गोली सोलह मनकी१ खारी द्रोणका सेर यह तोलका प्रमाण शार्ङ्गधरसे कहा समझलेना यह कालिंगी भाषा है ॥

अथ माधवी भाषा ।

तोलका रूप अज्ञानियोंके समझनेके वास्ते जलमें सूर्यदीखै तिसमें वहुत बारीक रजदीखे तिसकेताईं रज कहिये तिस रजका तीसवां भाग परमाणु कहे हैं तिसपरमाणुका नाम वंशी कहिये६वंशीकी१मरीचिका कहिये ६मरीचिकाकी एक राई३राईकी एक सरसों आठसरसोंका एक यव चारयवकी एक चिरमठी छः चिरमठीका एकमाशा चार माशेका एक टंक दो टंकका एककोल दो कोलका एक कर्ष दो कर्षकी एकशुक्तिका दोशुक्तिकाका एक पल पलके१६टंक प्रसृति के३२टंक दो प्रसृतिका एक कुडव कुडवके ६४ टंक दो कुडवका एक शराव शरावके१२८ टंक दो शरावका एक प्रस्थ प्रस्थके२५६ टंक चार प्रस्थका एक आढक तिसके१०२४ टंक चार आढकका एक द्रोण तिसके ४०९६ टंक सूर्यके ८३८४ टंक होयँ गोणीमें१६३४ टंक खारीके५५४४टंक इसमें

स्थिर होय ठहर ठहर चले जो नाड़ी प्राणकी क्षीण नाड़ी होय शीतल होय सो नाड़ी यमके घर लेजाय ॥

त्रिदोषके लक्षण ।

तीतरकी चाल लवाकी चाल यह त्रिदोषकी नाड़ी मृत्यु करे तथा तंद्रा होय नेत्रपीडा होय प्रलाप होय॥

असाध्य लक्षण ।

सूरत शोभा क्षीण होय कान वांका होय नेत्र त्रिकट होय वलित वोले ॥ इति नाड़ीपरीक्षा ॥

अथ तोलप्रमाण ।

जिससे द्रव्यके तोलकी चौकसी होय तोल जाने-विना औषधकी ठीक पडे नहीं ताते तोलका प्रमाण कहे हैं जलमें सूर्य्य दीखे तिसमें बारीक रज दीखे तिस रजके तीसवें हिस्सेको परमाणु कहे हैं। और वशी नाम कहिये वंशी ६ की एक मरीचिका कहिये ६ मरीचकी एक राई ३ राईकी एक सरसो आठ सरसोंका एक यव ४ यवकी एक चिरमिठी आठ चिरमिठीका एक माशा चार माशेका एक टंक होय टंक साणि धारण पिचु ये टंक के नाम हैं छः मासेका एक गद्यान टंक १६ का कौल शुक्र एक नाम है४टक कर्ष तूर्य विडालपद इनकी कर्ष सज्ञा है १६ टंकका एक पल चार कर्षका एक पल दोय पलकी एक प्रसृति होय प्रसृतिकी एक अंजलि अंजलि कुडवका एकही नाम हैं दोय कुडवका एक शराव

दोय शरावका एक प्रस्थ होय अंजिलिके ६४टंक शराव टंक १२८प्रस्थके टंक२५६आढक चार प्रस्थका होय चार आढकका एक द्रोण भारका मान इतने पलोंका होय ६०९६ सौ पलकी एक तुलाका मान है दोय मनकी एक सूर्यकी कहिये चारि मनकी एक गोली सोलह मनकी१ खारी द्रोणका सेर यह तोलका प्रमाण शार्ङ्गधरसे कहा समझलेना यह कालिंगी भाषा है ॥

अथ माधवी भाषा ।

तोलका रूप अज्ञानियोंके समझनेके वास्ते जलमें सूर्यदीखे तिसमें बहुत बारीक रजदीखे तिसकेताईं रज कहिये तिस रजका तीसवां भाग परमाणु कहे हैं तिसपरमाणुका नाम वंशी कहिये६वंशीकी१मरीचिका कहिये ६मरीचिकाकी एक राई३राईकी एक सरसों आठसरसोंका एक यव चारयवकी एक चिरमठी छःचिरमठीका एकमाशा चार माशेका एक टंक दो टंकका एककोल दो कोलका एक कर्ष दो कर्षकी एकशुक्तिका दोशुक्तिकाका एक पल पलके१६टंक प्रसृति के३२टंक दो प्रसृतिका एक कुडव कुडवके ६४ टंक दो कुडवका एक शराव शरावके१२८ टंक दो शरावका एक प्रस्थ प्रस्थके२५६ टंक चार प्रस्थका एक आढक तिसके१०२४ टंक चार आढकका एक द्रोण तिसके ४०९६ टंक सूर्यके ८३८४ टंक होयँ गोणिमें१६३४ टंक खारीके५९४४टंक इसमें

कहा दो मनका १ सूर्यंक चार मनकी एक गोणी सोलह मनकी एक खारी द्रोण एकका४१सेर यह माधवी भाषा है कालिंगी भाषासे श्रेष्ठहे जिन शास्त्रोंकी शाखा लेकर रामविनोद बनाया तिन ग्रन्थोंके नाम आगे लिखेहैं॥ चरक१ आत्रेय२हारीत ३ योगचिंतामणि ४ सुश्रुत ५ भृगु६क्षीरपाणि७आनन्दमाला८आनन्दपाल९ वैद्यविनोद१० सन्निपातकलिका११ राजमार्तण्ड१२ रसचिन्तामणि १३ योगशतक १४ विंदुसार१५ मनोरमा१६ बालतंत्र१७ शार्ङ्गधर १८ कालज्ञान१९बालचिकित्सा २० वैद्यसर्वस्वा २१. वैद्यवल्लभ २२ वैद्यमनोत्सव २३ वैद्यसारोद्धार२४ सारसंग्रह२५ भावप्रकाश २६ अमृतसागर२७ चिकित्सार्णव२८ क्षेमकौतूहल२९ रसमंजरी ३०रसरत्नाकर३१टोडरानन्द३२ माधवी दामोदर३३ माधवनिदान ३४ वंगसेन ३५ रत्नभूषण ३६ जैचूड़ ग्रन्थ ३७ वशिष्ठ३८ भेडाग्रन्थ ३९ इत्यादि ग्रन्थोंकी शाखासे यह रामविनोद भाषा किया वचनका बन्ध यह सब व्याधिका दूर करनेवालाहे इसमें पुण्य होय यश होय अच्छे२मित्र होयँ धनकी प्राप्ति होय परोपकार होय इस ग्रंथके बराबर और ग्रन्थ सुगम नहीं चतुर पुरुष इस विद्याको पढ़े सद्गुरुकेपास तब सफल होय॥

इति पमरग शिष्यरामचन्द्रविरचित रामविनोद समाप्त।